वेदों के भाष्यकार, प्रकांड विद्वान्

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

सरल विधि से अपने-आप संस्कृत सीखने के लिए

संस्कृत स्वयं-शिक्षक

इस पुस्तक को पढ़कर बिना किसी की सहायता के आप सरल विधि से संस्कृत सीख सकते हैं

स्वयं संस्कृत सीखने के लिए

संस्कृत स्वयं-शिक्षक

प्रथम भाग

लेखक

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

चारों वेदों के भाष्यकार और संस्कृत के अनेक ग्रन्थों के रचयिता

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

यह पुस्तक दो भागों में संपूर्ण होती है
दूसरा व तीसरा संयुक्त भाग भी पढ़िए।
उसका मूल्य बारह रुपये है।

मूल्य : दस रुपये (10.00)

बाइसवां संस्करण : 1984 © राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली
SANSKRIT SWAYAM SHIKSHAK by Shirpad Damodar Satvalekar,

पुस्तक प्रारम्भ करने से पहले इसे अवश्य पढ़ें—

विषय-प्रवेश

इस पुस्तक का नाम 'संस्कृत स्वयं-शिक्षक' है और जो अर्थ इस नाम से विदित होता है वही इसका कार्य है। किसी पण्डित की सहायता के बिना आर्यभाषा (हिन्दी) जानने वाला मनुष्य इस पुस्तक के पढ़ने से संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। जो देवनागरी अक्षर नहीं जानते, उनको उचित है कि पहले देवनागरी पढ़कर इस पुस्तक को पढ़ें। देवनागरी अक्षरों को जाने बिना संस्कृत जानना कठिन है।

बहुत लोग यह समझते हैं कि संस्कृत भाषा बहुत कठिन है, कई वर्ष प्रयत्न करने से ही उसका ज्ञान हो सकता है। परन्तु वास्तव में विचार किया जाए तो यह भ्रम-मात्र है। संस्कृत भाषा नियमबद्ध होने के कारण तथा स्वभाव सिद्ध होने के कारण सब वर्तमान भाषाओं से सुगम है। कम से कम मैं यह कह सकता हूं कि अंग्रेजी भाषा संस्कृत भाषा से दस गुना कठिन है। मैंने कई वर्षों के अनुभव से यह देखा है कि संस्कृत भाषा अत्यन्त सुगम रीति से पढ़ाई जा सकती है और व्यावहारिक वार्तालाप तथा रामायण-महाभारतादि पुस्तकों का अध्ययन करने के लिए जितना संस्कृत का ज्ञान चाहिए उतना प्रतिदिन घण्टा-आधा घण्टा अभ्यास करने से एक वर्ष की अवधि में अच्छी प्रकार प्राप्त हो सकता है, यह मेरी कोरी कल्पना नहीं। परन्तु अनुभव की हुई बात है। इसी कारण संस्कृत-जिज्ञासु सर्वसाधारण जनता के सम्मुख उसी अनुभव की हुई अपनी विशिष्ट पद्धति को इस पुस्तक द्वारा रखना चाहता हूं।

हिन्दी अर्थात् आर्यभाषा के कई वाक्य इस पुस्तक में भाषा की रीति से कुछ विरुद्ध पाए जाएंगे, परन्तु वे वैसे इसलिए लिखे गए हैं कि वे संस्कृत वाक्य में प्रयुक्त हुए शब्दों के क्रम के अनुकूल हों। किसी-किसी स्थान पर संस्कृत के शब्दों का प्रयोग भी उसके नियमों के अनुसार नहीं लिखा है तथा शब्दों की सन्धि कहीं भी नहीं की गई। यह सब इसलिए किया है कि पाठकों को भी सुभीता हो और

उनका संस्कृत में प्रवेश सुगमतापूर्वक हो सके। पाठक यह भी देखेंगे कि जैसा-जैसा प्रवेश अधिक-अधिक हो गया है, वैसा-वैसा शब्दों का क्रम भी यथायोग्य हो गया है, अर्थात् जो भाषा की शैली की न्यूनता पहले पाठों में है वह आगे के पाठों में नहीं है। भाषा-शैली की कुछ न्यूनता सुगमता के लिए जान-बूझकर रखी गई है। इसलिए पाठक इसकी ओर ध्यान न देकर अपना अभ्यास जारी रखें, ताकि संस्कृत-मन्दिर में उनका प्रवेश भली-भांति हो सके।

पाठकों को उचित है कि वे न्यून से न्यून प्रतिदिन एक घण्टा इस पुस्तक का अध्ययन किया करें और जो-जो शब्द आएं उनका प्रयोग बिना किसी प्रकार के संकोच के करने का यत्न करें। इससे उनकी उन्नति प्रतिदिन होती रहेगी।

जिस रीति का अवलम्बन इस पुस्तक में किया है वह न केवल सुगम है, परन्तु निःसन्देह स्वाभाविक है, और स्वाभाविक होने के कारण इस रीति से अल्पकाल में और थोड़े परिश्रम से बहुत लाभ होगा।

यह मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूं कि प्रतिदिन एक घण्टा प्रयत्न करने से एक वर्ष के अन्दर व्यावहारिक संस्कृत भाषा का ज्ञान इस पुस्तक की पद्धति से हो सकता है। परन्तु पाठकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि केवल उत्तम शैली से ही काम नहीं चलेगा, पाठकों का यह कर्तव्य होगा कि वे प्रतिदिन पर्याप्त और निश्चित समय इस कार्य के लिए अवश्य लगाया करें, नहीं तो कोई पुस्तक कितनी ही अच्छी क्यों न हो, बिना प्रयत्न किए पाठक उससे पूरा लाभ नहीं उठा सकते।

अभ्यास की पद्धति

(१) प्रथम पाठ तक जो कुछ लिखा है, उसे अच्छी प्रकार पढ़िए। सब ठीक समझने के पश्चात् प्रथम पाठ को पढ़ना प्रारम्भ कीजिए।

(२) हर एक पाठ प्रथम सम्पूर्ण पढ़ना चाहिए, पश्चात् उसको क्रमशः स्मरण करना चाहिए; हर एक पाठ को कम से कम दस बार पढ़ना चाहिए।

(३) हर एक पाठ में जो-जो संस्कृत वाक्य हैं, उनको कण्ठस्थ करना चाहिए तथा जिन-जिन शब्दों के रूप दिए हैं; उनको स्मरण करके, उनके समान जो शब्द दिए हों, उन शब्दों के रूप वैसे ही बनाने का यत्न करना चाहिए।

(४) जहां परीक्षा के प्रश्न दिए हों वहां उनका उत्तर दिए बिना आगे नहीं बढ़ना चाहिए। यदि प्रश्नों का उत्तर देना अशक्य हुआ, तो पूर्व पाठ दुबारा पढ़ना चाहिए। प्रश्नों का झट उत्तर न दे सकने का यही मतलब है कि पूर्व पाठ ठीक प्रकार से तैयार न हुए।

(५) जहां दुबारा पढ़ने की सूचना दी है, वहां अवश्य दुबारा पढ़ना चाहिए।

(६) यदि दो पाठक साथ-साथ अभ्यास करेंगे और परस्पर प्रश्नोत्तर करके एक-दूसरे को मदद देंगे तो अभ्यास बहुत शीघ्र हो सकता है।

(७) यह पुस्तक तीन महीनों के अभ्यास के लिए है। इसलिए पाठकों को चाहिए कि वे समय के अन्दर पुस्तक समाप्त करें; जो पाठक अधिक समय लेना चाहें, वे ले सकते हैं। यह पुस्तक अच्छी प्रकार स्मरण होने के पश्चात् ही दूसरी पुस्तक प्रारम्भ करनी चाहिए।

अक्षर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ

ए ऐ ओ औ अं अः।

क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ,

ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न,

प फ ब भ म, य र ल व,

श ष स ह, क्ष त्र ज्ञ।

शुद्ध स्वर

अ, इ, उ, ऋ, लृ,

ये पांच शुद्ध स्वर हैं।

संयुक्त स्वर

अ	और	अ	अथवा	आ	मिलकर	आ—बना है।
इ	,,	इ	,,	ई	,,	ई—बनी है।
उ	,,	उ	,,	ऊ	,,	ऊ—बना है।
ऋ	,,	ऋ	,,	ॠ	,,	ॠ—बनी है।
अ	,,	इ	,,	ई	,,	ए—बना है।
आ	,,	इ	,,	ई	,,	ए—बना है।
अ	,,	उ	,,	ऊ	,,	ओ—बना है।
आ	,,	उ	,,	ऊ	,,	ओ—बना है।
अ / आ	,,	ए	,,	ऐ	,,	ऐ—बना है।
अ / आ	,,	ओ	,,	अ	,,	औ—बना है।

* स्वर जन्य अक्षर (स्वरों से बनें हुए अक्षर) *

इ	अथवा	ई स्वर	अ	के साथ	मिलकर	"य"	बनाता है।
उ	,,	ऊ	अ	,,	,,	"व"	,, ,,
ऋ	,,	ॠ	अ	,,	,,	"र"	,, ,,
लृ	,,	लॄ	अ	,,	,,	"ल"	,, ,,

• संयुक्त व्यञ्जन •

क्	और	ष्	मिलकर	क्ष [क्ष]	बना है।
ज्	,,	ञ	,,	ज्ञ [ज्ञ]	,,
क्	,,	व	,,	क्व [क्व]	,,
र्	,,	म	,,	र्म	,,

म्	और	र	मिलकर	म्र	बना है।
त्	,,	र	,,	त्र	,,
द्	,,	र	,,	द्र	,,
त्	,,	य	,,	त्य	,,
प्	,,	त	,,	प्त	,,
ल्	,,	ल	,,	ल्ल	,,
ह्	,,	य	,,	ह्य	,,
व्	,,	र	,,	व्र	,,
क्	,,	र	,,	क्र	,,
म्	,,	न	,,	म्न	,,
स्	,,	र	,,	स्र	,,
ब्	,,	ब	,,	ब्ब	,,
द्—	र् —	य	,,	द्र्य	,,
प्—	त् —	य	,,	प्त्य	,,
श्—	र् —	य	,,	श्र्य	,,

इस प्रकार अनन्त संयुक्त अक्षर हैं। हिन्दी भाषा के पाठकों को उचित है कि वे इस संयुक्त अक्षर पद्धति को जानें ताकि वे अच्छी तरह संयुक्त अक्षरों को पढ़ सकें।

कुछ स्वरों की सन्धि

ए+अ=अय। ऐ+अ=आय ओ+अ=अव औ+अ=आव होता है।

इसी प्रकार अन्य स्वर मिलने पर सन्धि पाठक जान सकेंगे।

ए+आ=अया। ऐ+ई=आयी।

ओ+उ=अवु। औ+ऊ=आवू।

ए+ए=अये। ऐ+ओ=आयो।

ओ+ए=अवे। औ+ओ=आवो।

इस प्रकार 'ए, ऐ, ओ, औ' की सन्धि पाठक जान सकेंगे।

पाठ १

नीचे कुछ संस्कृत शब्द और उनके अर्थ दिए हुए हैं। उनको याद करना चाहिए। संस्कृत भाषा के शब्द काले टाइप में छपे हैं।

शब्द

सः = वह। **त्वम्** = तू। **अहम्** = मैं।
गच्छति = वह जाता है। **गच्छसि** = तू जाता है।
गच्छामि = मैं जाता हूं।

वाक्य

अहं गच्छामि = मैं जाता हूं। **त्वं गच्छसि** = तू जाता है।
सः गच्छति = वह जाता है।

पाठक यहां ध्यान रखें कि संस्कृत वाक्यों का भाषा में अर्थ शब्दों के क्रम से ही दिया है।

शब्द

कुत्र = कहां। **यत्र** = जहां। **अत्र** = यहां।
तत्र = वहां। **सर्वत्र** = सब स्थान पर। **किम्** = क्या।

वाक्य

१. **त्वं कुत्र गच्छसि**—तू कहां जाता है?
२. **यत्र सः गच्छति**—जहां वह जाता है।
३. **अहं तत्र गच्छामि**—मैं वहां जाता हूं।
४. **सः कुत्र गच्छति**—वह कहां जाता है?
५. **यत्र अहं गच्छामि**—जहां मैं जाता हूं।

६. **त्वं सर्वत्र गच्छसि**—तू सब स्थान पर जाता है।
७. **किं सः गच्छति**—क्या वह जाता है ?
८. **सः गच्छति किम्**—वह जाता है क्या ?
९. **सः कुत्र गच्छति**—वह कहां जाता है ?
१०. **यत्र त्वं गच्छसि**—जहां तू जाता है।
११. **त्वं गच्छसि किम्**—तू जाता है क्या ?
१२. **अहं सर्वत्र गच्छामि**—मैं सब स्थान पर जाता हूं।

सूचना—पाठकों को ये सब वाक्य ध्यान में रखने चाहिए। यदि दो पाठक साथ-साथ पढ़ते हों, तो एक-दूसरे से संस्कृत तथा भाषा के वाक्य उच्चारण करके अर्थ पूछने चाहिए, और दूसरे को चाहिए कि वह अर्थ बताए। परन्तु यदि अकेला ही पढ़ता हो तो उसे प्रथम ऊंची आवाज़ में प्रत्येक वाक्य दस बार उच्चारण करके तत्पश्चात् संस्कृत वाक्यों की ओर दृष्टि देकर उनका अर्थ भाषा के वाक्यों की ओर दृष्टि न देते हुए मन से लगाने का प्रयत्न करना चाहिए। ऐसा दो-तीन बार करने से सब वाक्य याद हो सकते हैं।

जो पाठक इन वाक्यों की ओर ध्यान देंगे उनको उक्त शब्दों से कई अन्य वाक्य स्वयं रचने की योग्यता आएगी और पता लगेगा कि थोड़े से शब्दों से कितनी बातचीत हो सकती है।

शब्द

न—नहीं। **अस्ति**—है। **कः**—कौन। **नास्ति**—नहीं है।

वाक्य

१. **अहं न गच्छामि**—मैं नहीं जाता हूं।
२. **त्वं न गच्छसि**—तू नहीं जाता है।

३. **सः न गच्छति**—वह नहीं जाता है ।

४. **अहं तत्र न गच्छामि**—मैं वहां नहीं जाता हूं ।

५. **त्वं सर्वत्र न गच्छसि**—तू सब स्थान पर नहीं जाता है ।

६. **किं सः न गच्छति**—क्या वह नहीं जाता है ।

७. **यत्र त्वं न गच्छसि**—जहां तू नहीं जाता है ।

८. **त्वं न गच्छसि किम्**—तू नहीं जाता है क्या ?

९. **अहं सर्वत्र न गच्छामि**—मैं सब स्थान पर नहीं जाता हूं ।

सूचना—पाठक यह ध्यान से देख सकते हैं कि केवल एक 'न' (नकार) के उपयोग से कितने नये उपयोगी वाक्य बन गए हैं । अब क' शब्द का उपयोग देखिए—

१. **कः तत्र गच्छति**—कौन वहां जाता है ।

२. **कः सर्वत्र गच्छति**—कौन सब स्थान पर जाता है ।

३. **तत्र कः न गच्छति**—वहां कौन नहीं जाता ?

४. **कः सर्वत्र न गच्छति**—कौन सब स्थान पर नहीं जाता ?

५. **कः तत्र अस्ति**—कौन वहां है ?

६. **तत्र कः अस्ति**—वहां कौन है ?

७. **अस्ति कः तत्र**—है कौन वहां ?

पाठ २

निम्नलिखित शब्द कण्ठ कीजिए —

शब्द

गृहम्—घर को। **नगरम्**—नगर को । **ग्रामम्**—गांव को । **आपणम्**—बाजार को। **पाठशालाम्**— पाठशाला को। **उद्यानम्**—बाग को।

वाक्य

१. **त्वं कुत्र गच्छसि**—तू कहां जाता है ?
२. **अहं गृहं गच्छामि**—मैं घर को जाता हूं।
३. **सः कुत्र गच्छति**—वह कहां जाता है ?
४. **सः ग्रामं गच्छति**—वह गांव को जाता है।
५. **त्वं पाठशालां गच्छसि किम्**—तू पाठशाला को जाता है क्या ?
६. **सः उद्यानं गच्छति किम्**—वह बाग को जाता है क्या ?
७. **किं सः ग्रामं गच्छति**—क्या वह गांव को जाता है ?
८. **किं त्वम् आपणं गच्छसि**—क्या तू बाज़ार को जाता है।
९. **यत्र त्वं गच्छसि**—जहां तू जाता है।
१०. **तत्र अहं गच्छामि**—वहां मैं जाता हूं।
११. **यत्र सः गच्छति**—जहां वह जाता है।
१२. **तत्र त्वं गच्छसि किम्**—वहां तू जाता है क्या ?

शब्द

यदा—जब। **कदा**—कब। **सदा**—सदा, हमेशा। **सर्वदा**—सदा, हमेशा। **सदैव**—सर्वकाल ही, हमेशा ही। **तदा**—तब।

अब नीचे लिखे हुए वाक्यों को याद कीजिए। यदि आपने पूर्वोक्त वाक्य कण्ठ किए हों तो वाक्य आप स्वयं बना सकते हैं—

वाक्य

१. **कदा सः नगरं गच्छति**—कब वह नगर को जाता है ?
२. **यदा सः ग्रामं गच्छति**—जब वह गांव को जाता है।
३. **अहं सदैव पाठशालां गच्छामि**—मैं हमेशा ही पाठशाला को जाता हूं।
४. **सः सर्वदा उद्यानं गच्छति**—वह सदा बाग को जाता है।

५. किं त्वं सदा आपणं गच्छसि—क्या तू हमेशा बाजार को जाता है।
६. अहं सदैव नगरं गच्छामि—मैं हमेशा ही नगर को जाता हूं।
७. यदा त्वं ग्रामं गच्छसि—जब तू गांव को जाता है।
८. तदाऽहं उद्यानं गच्छामि—तब मैं बाग को जाता हूं।
९. सः नगरं गच्छति किम्—वह नगर को जाता है क्या ?
१०. सः सर्वदा ग्रामं गच्छति—वह सदा गांव को जाता है।
११. किं त्वम् उद्यानं गच्छसि—क्या तू बाग को जाता है ?
१२. अहं सदैव उद्यानं गच्छामि—मैं सदा ही बाग को जाता हूं।
१३. त्वं कुत्र गच्छसि—तू कहां जाता है ?
१४. त्वं कदा गच्छसि—तू कब जाता है ?
१५. सः सदैव गच्छति—वह हमेशा ही जाता है।

पूर्वोक्त प्रकार से इन वाक्यों को भी ऊंचे बोलकर दस-दस बार उच्चारण करना चाहिए। तत्पश्चात् संस्कृत वाक्य की ओर देखकर (भाषा के वाक्य को देखते हुए) उसको भाषा का वाक्य बनाना चाहिए। तदनन्तर भाषा का वाक्य देखकर उसको संस्कृत वाक्य बनाना चाहिए। इस प्रकार करने से पाठक स्वयं कई नये वाक्य बना सकते हैं। अब कुछ निषेध के वाक्य बताते हैं—

१. अहं गृहं न गच्छामि—मैं घर नहीं जाता हूं।
२. सः ग्रामं न गच्छति—वह गांव को नहीं जाता है।
३. त्वं पाठशालां न गच्छसि किम्—तू पाठशाला को नहीं जाता है क्या ?
४. सः उद्यानं किं न गच्छति—क्या वह बाग को नहीं जाता ?
५. किं सः ग्रामं न गच्छति—क्या वह गांव को नहीं जाता ?
६. किं त्वम् आपणं न गच्छसि—क्या तू बाजार नहीं जाता ?

प्रेस की भूल से पृष्ठ संख्या 12 के बाद 13 के स्थान पर 17 छप गई है। कृपया सुधार लें पाठ्य-सामाग्री तथा क्रम बिल्कुल ठीक है।

७. **तत्र त्वं किं न गच्छसि**—वहां तू क्यों नहीं जाता ?
८. **यदा सः ग्रामं न गच्छति**—जब वह गांव को नहीं जाता ।
९. **कः सदा उद्यानं न गच्छति**—कौन हमेशा बाग को नहीं जाता ?
१०. **सः उद्यानं सर्वदा न गच्छति**—वह बाग को हमेशा नहीं जाता ।
११. **त्वं तत्र किं न गच्छसि**—तू वहां क्यों नहीं जाता ?
१२. **सः तत्र सदैव न गच्छति**—वह वहां हमेशा ही नहीं जाता ।

इसी प्रकार पाठक वाक्य बना सकते हैं ।

पाठ ३

यदि आपने पूर्वपाठ के वाक्य तथा शब्द अच्छी प्रकार कण्ठ किए हों तो अब आप निम्नलिखित शब्दों को याद कीजिए—

सायम्—शाम को । **प्रातः**—प्रातःकाल । **रात्रौ**—रात्रि में । **श्वः**—कल (आगामी दिन) । **परश्वः**—परसों । **दिवा**—दिन में । **मध्याह्ने**—दोपहर में । **अद्य**—आज । **ह्यः**—कल (बीता दिन) ।

वाक्य

१. **त्वं कुत्र सदैव प्रातः गच्छसि**—तू कहां हमेशा ही प्रातःकाल को जाता है ?
२. **अहं सदैव प्रातः उद्यानं गच्छामि**—मैं सदा ही प्रातःकाल बाग जाता हूं ।
३. **सः सायम् उद्यानं गच्छति**—वह सायकाल बाग को जाता है ।
४. **अद्य अहं पाठशालां न गच्छामि**—आज मैं पाठशाला को नही जाता हूं ।
५. **त्वम् अद्य पाठशालां गच्छसि किम्**—तू आज पाठशाला को जाता है क्या ?

६. त्वं मध्याह्ने कुत्र गच्छसि—तू दोपहर में कहां जाता है ?
७. अहं मध्याह्ने ग्रामं गच्छामि—मैं दोपहर में गांव को जाता हूं।
८. सः दिवा नगरं गच्छति—वह दिन में नगर को जाता है।
९. अहं रात्रौ गृहं गच्छामि—मैं रात्रि में घर को जाता हूं।
१०. त्वं यत्र रात्रौ गच्छसि—जहां तू रात्रि मे जाता है।
११. तत्र अहं दिवा गच्छामि—वहां मैं दिन में जाता हूं।
१२. तत्र सः प्रातः गच्छति—वहां वह प्रातःकाल जाता है।

शब्द

यदि—यदि, अगर। तर्हि—तो। गमिष्यसि—तू जाएगा। गमिष्यति—वह जाएगा। यथा—जैसे। तथा—वैसे। कथम्—कैसे। गमिष्यामि—मैं जाऊंगा। जालन्धरनगरम्—जालन्धर शहर को। हरिद्वारनगरम्—हरिद्वार शहर को।

वाक्य

१. यदि त्वं जालन्धरनगरं श्वः गमिष्यसि—अगर तू जालन्धर शहर को कल जाएगा।
२. तर्हि अहं हरिद्वारं परश्वः गमिष्यामि—तो मैं हरिद्वार शहर को परसों जाऊंगा।
३. यदि त्वं गमिष्यसि तदा अहं गमिष्यामि—जब तू जाएगा तब मैं जाऊंगा।
४. यदि त्वं न गमिष्यसि तर्हि अहं न गमिष्यामि—अगर तू नहीं जाएगा तो मैं नहीं जाऊंगा।
५. सः हरिद्वारं श्वः गमिष्यति—वह कल हरिद्वार को जाएगा।
६. सः श्वः प्रातः जालन्धरनगरं गमिष्यति—वह कल प्रातः जालन्धर शहर को जाएगा।

७. यत्र सः श्वः गमिष्यति—जहाँ कल वह जाएगा।
८. तत्र अहं परश्वः गमिष्यामि—वहां मैं परसों जाऊंगा।
६. त्वं परश्वः ग्रामं गमिष्यसि किम्—तू परसों गांव को जाएगा क्या?
१०. न अहम् अद्य सायं नगरं गमिष्यामि—नहीं मैं आज सायंकाल सहर को जाऊंगा।
११. यथा त्वं गच्छसि तथा सः गच्छति—जैसे तू जाता है वैसे वह जाता है।
१२. कथं तत्र सः श्वः न गमिष्यति—कैसे वहां वह कल नहीं जाएगा ?
१३. सः तत्र श्वः गमिष्यति—वह वहां कल जाएगा।

ये वाक्य देख पाठकों को पता लगेगा कि वे दैनिक व्यवहार के नये वाक्य स्वयं बना सकते हैं। इसीलिए पाठकों से प्रार्थना है कि वे नये-नये वाक्य प्राप्त शब्दों से बनाने का यत्न किया करें।

अब निषेध के वाक्य देखिए—

१. सः सायम् उद्यानं न गच्छति—वह शाम को बाग नहीं जाता।
२. कः मध्याह्ने पाठशालां न गच्छति—कौन दोपहर में पाठशाला को नहीं जाता ?
३. अहं रात्रौ नगरं न गच्छामि—मैं रात्रि को शहर को नहीं जाता।
४. कः तत्र दिवा न गच्छति—कौन वहां दिन में नहीं जाता ?
५. त्वं श्वः जालन्धरं न गमिष्यसि किम्—तू कल जालन्धर नहीं जाएगा क्या ?
६. यथा त्वं न गच्छसि तथा सः न गच्छति—जैसे तू नहीं जाता वैसे वह नहीं जाता।
७. कथं सः न गच्छति—कैसे वह नहीं जाता ?

८. सः रात्रौ कुत्र-कुत्र न गमिष्यति–वह रात्रि में कहां-कहां नहीं जाएगा ?

९. यत्र-यत्र त्वं गमिष्यसि, तत्र-तत्र सः न गमिष्यति–जहां-जहां तू जाएगा, वहां-वहां वह नहीं जाएगा।

पाठ ४

'गम्–(गच्छ)' अर्थ 'जाना'। परन्तु उससे पूर्व 'आ' लगाने से उसी का अर्थ 'आना' होता है। जैसे—

शब्द

गच्छति–वह जाता है। **गच्छसि**—तू जाता है।
गच्छामि—जाता हूं। **गमिष्यति**—वह जाएगा।
गमिष्यसि—तू जाएगा। **गमिष्यामि**—मैं जाऊंगा।
आगच्छति—आता है। **आगच्छसि**—तू आता है।
आगच्छामि—आता हूं। **आगमिष्यामि**—मैं आऊंगा।
आगमिष्यसि—तू आएगा। **आगमिष्यति**—वह आएगा।
अपि—भी। **नहि**—नहीं। **च**—और।
वनम्—वन को। **कूपम्**—कूएं को। **औषधालयम्**—दवाखाने को।

वाक्य

१. यदा त्वं वनं गमिष्यसि—जब तू वन को जाएगा।
२. तदा अहम् अपि आगमिष्यामि—तब मैं भी आऊंगा।
३. यदा तत्र सः गमिष्यति—जब वह वहां जाएगा।
४. तदा तत्र त्वं न आगमिष्यसि किम्–तब वहां तू न आएगा क्या?
५. अहं प्रातः गमिष्यामि सायं च आगमिष्यामि—मैं सवेरे जाऊंगा और सायंकाल को आऊंगा।

६. कदा त्वं तत्र गमिष्यसि—कब तू वहां जाएगा ?
७. अहं मध्याह्ने तत्र गमिष्यामि—मैं दोपहर को वहां जाऊंगा।
८. यदि त्वं गमिष्यसि—अगर तू जाएगा।
९. सः अपि न आगमिष्यति—वह भी नहीं आएगा।

शब्द

भक्षयति—वह खाता है।
भक्षयसि—तू खाता है।
भक्षयामि—मैं खाता हूं।
अन्नम्—अन्न को।
फलम्—फल को।
मोदकम्—लड्डू को।
भक्षयिष्यति—वह खाएगा।
भक्षयिष्यसि—तू खाएगा।
भक्षयिष्यामि—मैं खाऊंगा।
ओदनम्—चावल को।
मुद्गौदनम्—खिचड़ी।
आम्रम्—आम को।

वाक्य

१. सः अन्नं भक्षयति—वह अन्न खाता है।
२. त्वं मोदकं भक्षयसि—तू लड्डू खाता है।
३. अहं फलं भक्षयामि—मैं फल खाता हूं।
४. सः ओदनं भक्षयिष्यति—वह चावल खाएगा।
५. त्वम् आम्रं भक्षयिष्यसि—तू आम खाएगा।
६. अहं मुद्गौदनं भक्षयिष्यामि—मैं खिचड़ी खाऊंगा।
७. यदि सः वनं प्रातः गमिष्यति—अगर वह वन को प्रातःकाल जाएगा।
८. तर्हि आम्रं भक्षयिष्यति—तो आम खाएगा।
९. अहं तत्र गमिष्यामि फलं च भक्षयिष्यामि—मैं वहां जाऊंगा और फल खाऊंगा।

१०. सः गृहं गमिष्यति मोदकं च भक्षयिष्यति—वह घर जाएगा और लड्डू खाएगा।

११. किं सः अन्नं भक्षयिष्यति—क्या वह अन्न खाएगा?

१२. तथा तत्र अहम् आम्रं भक्षयिष्यामि—वैसे वहां मैं आम खाऊंगा।

१३. यथा सः ओदनं भक्षयिष्यति—जैसे वह चावल खाएगा।

अब पाठक बहुत कुछ वाक्य बना सकते हैं। इसलिए अब कुछ विभक्तियों के रूप देते हैं, जिनको स्मरण करने से पाठकों की योग्यता बहुत बढ़ सकती है।

संस्कृत में सात विभक्तियां होती हैं (ये विभक्तियां भाषा में भी हैं।)—

'देव' शब्द के सातों विभक्तियां के रूप

विभक्ति का नाम	विभक्ति के रूप	भाषा में अर्थ
१. प्रथमा	देवः	देव (ने)
२. द्वितीया	देवम्	देव को
३. तृतीया	देवेन	देव के द्वारा (ने,से
४. चतुर्थी	देवाय	देव के लिए (को)
५. पंचमी	देवात्	देव से
६. षष्ठी	देवस्य	देव का, की, के
७. सप्तमी	देवे	देव में, पर
सम्बोधन	[हे] देव	हे देव

पाठक यहां देख सकते हैं कि इन रूपों का बातचीत करने में कितना उपयोग होता है। उक्त रूपों का उपयोग करके अब कुछ वाक्य देते हैं—

१. देवः तत्र गच्छति—देव वहां जाता है।
२. तत्र देवं पश्य[1]—वहां देव को देख।[1]
३. देवेन अन्नं दत्तम्—देव के द्वारा अन्न दिया गया।
४. देवाय फलं देहि—देव के लिए फल दे।
५. देवात् ज्ञानं लभते—देव से ज्ञान पाता है।
६. देवस्य गृहम् अस्ति—देव का घर है।
७. देवे ज्ञानम् अस्ति—देव में ज्ञान है

सम्बोधन—हे देव! त्वं तत्र गच्छसि किम्?—हे देव! तू वहां जाता है क्या?

इस प्रकार पाठक कई वाक्य बना सकेंगे। उनको उचित है कि वे इस प्रकार प्राप्त शब्दों का उपयोग करते रहें। अब उक्त वाक्यों के निषेध अर्थ के वाक्य देते हैं। इनका अर्थ पाठक स्वयं जान सकेंगे, इसलिए दिया नहीं—

१. देवः तत्र न गच्छति।
२. तत्र देवं न पश्य।
३. देवेन अन्नं न दत्तम्।
४. देवाय फलं न देहि।
५. देवात् ज्ञानं न लभते।
६. देवस्य गृहं न अस्ति।
७. देवे ज्ञानं न अस्ति।

सम्बोधन—हे देव! त्वं तत्र न गच्छसि किम्?

पाठकों को ध्यान में रखना चाहिए कि ये वाक्य कोई विशेष अर्थ नहीं रखते हैं। यहां इतना ही बताया है कि नकार के साथ वाक्य कैसे

---

१. उक्त वाक्यों में 'पश्य' आदि शब्द नये आए हैं, उनका अर्थ भाषा के वाक्यों को देखकर पाठक जान सकते हैं। अर्थ देखने के लिए १, २, ३, ४, ऐसे अंक शब्दों के ऊपर रखे हैं।

बनाए जाते हैं। इनको देख पाठक बहुत-से नये वाक्य बनाकर बोल सकते हैं।

वाक्य

अहं नैव गमिष्यामि। सः मांसं नैव भक्षयिष्यति। सः आम्रं कदा भक्षयिष्यति ? यदा त्वं मोदकं भक्षयिष्यसि। सः नित्यं कदलीफलं भक्षयति। देवः इदानीं कुत्र अस्ति ? देवः सर्वत्र अस्ति। सः कदा आगमिष्यति ? सः अत्र श्वः प्रातः आगमिष्यति। यत्र-यत्र अहं गच्छामि, तत्र-तत्र सः नित्यम् आगच्छति।

पाठ ५

पूर्वोक्त वाक्यों तथा शब्दों को याद करने से पाठक स्वयं कई वाक्य बनाकर प्रयोग में ला सकेंगे। हमने शब्द तथा वाक्य इस प्रकार रखे हैं कि व्याकरण का बोझ पाठकों पर न पड़कर उनके मन पर व्याकरण का संस्कार स्वयं हो जाए और वे स्वयं वाक्य बना सकें। इसलिए पाठकों से प्रार्थना है कि वे पहला पाठ पक्का याद किए बिना आगामी पाठ प्रारम्भ न करें, तथा जो-जो शब्द पाठों में दिए हुए हैं उनसे अन्यान्य वाक्य स्वयं बनाने का यत्न करें। अब नीचे लिखे हुए शब्द कण्ठ कीजिए—

नक्तम्—रात्रि में।
नयति—वह ले जाता है।
नयसि—तू ले जाता है।
नयामि—मैं ले जाता हूं।
नेष्यति—वह ले जाएगा।
नेष्यसि—तू ले जाएगा।
नेष्यामि—मैं ले जाऊंगा।
नवीनम्—नया।
सर्वम्—सब।
आनयति—लाता है।

आनयसि—तू लाता है। आनयामि—मैं लाता हूं।
आनेष्यति—वह लाएगा। आनेष्यसि—तू लाएगा।
आनेष्यामि—मैं लाऊंगा। पुराणम्—पुराना।

वाक्य

१. सः फलं नयति—वह फल ले जाता है।
२. अहम् आम्रम् आनयामि—मैं आम लाता हूं।
३. त्वम् अन्नम् आनेष्यसि किं—तू अन्न लाएगा क्या ?
४. अहं तत्र गमिष्यामि—मैं वहां जाऊंगा।
५. फलं च आनेष्यामि—और फल लाऊंगा।
६. त्वं श्वः कुत्र गमिष्यसि—तू कल कहां जाएगा ?
७. त्वं कदा आगमिष्यसि—तू कब आएगा ?

शब्द

जलम्—जल। पुष्पम्—फूल। अपूपम्—पूड़ा। सूपम्—दाल। पुस्तकम्—पुस्तक। किमर्थम्—किसलिए। लेखनी—लेखनी (कलम)। मसी—स्याही। मसीपात्रम्—दवात। वस्त्रम्—कपड़ा। उत्तरीयम्—दुपट्टा। व्यर्थम्—व्यर्थ, फिजूल।

वाक्य

१. अहं जलम् आनयामि—मैं जल लाता हूं।
२. त्वं पुष्पम् आनयसि—तू फूल लाता है।
३. सः वस्त्रं तत्र नयति—वह वस्त्र वहां ले जाता है।
४. सः सदा नगरं गच्छति पुस्तकं च आनयति—वह हमेशा शहर जाता है और पुस्तक लाता है।
५. सः अद्य आगमिष्यति वस्त्रं च नेष्यति—वह आज आएगा और कपड़ा ले जाएगा।

६. अहम् आम्रम् आनयामि—मैं आम लाता हूं।
७. त्वम् अपूपम् आनयसि—तू पूड़ा लाता है।
८. सः उत्तरीयं नयति—वह दुपट्टा ले जाता है।
९. कदा सः मसीपात्रं पुस्तकं च तत्र नेष्यति—कब वह दवात और पुस्तक वहां ले जाएगा।
१०. सः सायं तत्र मसीपात्रं लेखनीं च नेष्यति—वह शाम को वहां दवात और कलम ले जाएगा।
११. त्वं रात्रौ हरिद्वारं गमिष्यसि किम्—तू रात्रि में हरिद्वार जाएगा क्या ?
१२. नहि, अहं श्वः मध्याह्ने तत्र गमिष्यामि—नहीं, मैं कल दोपहर को वहां जाऊंगा।
१३. अहं गृहं गमिष्यामि सूपं च भक्षयिष्यामि—मैं घर जाऊंगा और दाल खाऊंगा।

इस समय तक पाठकों के पास बहुत कुछ वाक्य बनाने का मसाला पहुंच चुका है। पूर्व पाठ में जैसे 'देव' शब्द की सातों विभक्तियों के रूप दिए थे, वैसे इस पाठ में 'राम' शब्द के रूप हैं।

'राम' शब्द के रूप

विभक्तियों के नाम	शब्दों के रूप	भाषा के अर्थ
१. प्रथमा	रामः	राम (ने)
२. द्वितीया	रामम्	राम को
३. तृतीया	रामेण[1]	राम के द्वारा

१. जिन शब्दों में र अथवा ष हुआ करता है, उनके न को ण हो जाता है। इस विषय का नियम 'स्वयं-शिक्षक' के दूसरे भाग में आ जाएगा।

४. चतुर्थी	रामाय	राम के लिए, को
५. पंचमी	रामात्	राम से
६. षष्ठी	रामस्य	राम का, की, के
७. सप्तमी	रामे	राम में, पर
सम्बोधन	हे राम !	हे राम !

देव और राम इन दो शब्दों के रूप यदि पाठक भली प्रकार स्मरण करेंगे तो वे निम्न शब्दों के रूप बना सकेंगे।

यज्ञदत्त, ईश्वर, गणेश, पुरुष, मनुष्य, अश्व, खग, पाठ, दीप, उदय, गण, समूह, दिवस, मास, कण—ये शब्द देव तथा राम के समान ही चलते हैं। इनके रूप बनाकर थोड़े-से वाक्य नीचे देते हैं—

१. यज्ञदत्तः गृहं गच्छति—यज्ञदत्त घर जाता है।
२. ईश्वरः सर्वत्र अस्ति—ईश्वर सब स्थान पर है।
३. हे ईश्वर ! दयां कुरु—हे ईश्वर ! दया करो।
४. हे पुरुष ! धर्मं कुरु—हे पुरुष ! धर्म करो।
५. तत्र अश्वं पश्य—वहां घोड़े को देख।
६. अत्र दीपं पश्य—यहां दीए को देख।
७. सः रात्रौ दीपेन पुस्तकं पठति—वह रात्रि में दीए से पुस्तक पढ़ता है।
८. ईश्वरेण धनं दत्तम्—ईश्वर ने धन दिया।
९. मनुष्याय ज्ञानं देहि—मनुष्य को ज्ञान दे।
१०. अश्वाय जलं देहि—घोड़े के लिए जल दे।
११. दीपात् प्रकाशः भवति—दीप से प्रकाश होता है।
१२. ईश्वरात् ज्ञानं भवति—ईश्वर से ज्ञान होता है।
१३. सः गणस्य ईश्वरः अस्ति—वह गण (समूह) का मालिक है।

१४. सः समूहस्य ईशः अस्ति—वह समह का मालिक है।
१५. पुस्तके ज्ञानम् अस्ति—किताब में ज्ञान है।
१६. मासे दिवसाः सन्ति—महीने में दिन होते हैं।
१७. समूहे मनुष्याः सन्ति—समूह में मनुष्य होते हैं।
१८. आकाशे खगाः सन्ति—आकाश में पक्षी हैं।

इनके निषेध के वाक्य पाठक स्वयं बना सकते हैं, पाठकों को चाहिए कि वे उक्त शब्दों की अन्य विभक्तियों के रूप बनाकर उनसे वाक्य बनाएं और अपना अभ्यास करें।

वाक्य

१. तत्र आकाशे खगं पश्य। २. हे देवदत्त! यज्ञदत्तः कुत्र गच्छति? ३. इदानीं यज्ञदत्तः गृहं गच्छति। ४. श्रीकृष्णस्य उत्तरीयम् अत्र आनय। ५. सः तत्र व्यर्थं गच्छति। ६. सः पुरुषः किमर्थं पुष्पम् आनयति?

पाठ ६

उपदेशकः—उपदेशक। देवदत्तः—देवदत्त।
करोति—वह करता है। कृष्णचन्द्रः—कृष्णचन्द्र।
करोमि—करता हूं। करोषि—तू करता है।
पटः—वस्त्र, कपड़ा। चित्रम्—चित्र, तस्वीर।
लवणम्—नमक। पुष्पमालाम्—फूलों की माला को।

वाक्य

१. रामचन्द्रः पाठशालां गमिष्यति लेखं च लेखिष्यति—रामचन्द्र पाठशाला जाएगा और लेख लिखेगा।

२. सत्यकामः गृहं गमिष्यति मधुरं च फलं भक्षयिष्यति—सत्यकाम घर जाएगा और मधुर फल खाएगा।
३. अहं वनं गमिष्यामि पुष्पमालां च करिष्यामि—मैं वन को जाऊंगा और फूलों की माला बनाऊंगा।
४. हरिश्चन्द्रः कदा उद्यानं गमिष्यति—हरिश्चन्द्र कब बाग जाएगा
५. सः श्वः तत्र गमिष्यति—वह कल वहां जाएगा।
६. देवदत्तः सर्वदा उद्यानं गच्छति पुष्पमालां च करोति किम्—देवदत्त हमेशा बाग में जाता है और पुष्पमाला बनाता है क्या ?
७. यदि हरिश्चन्द्रः उद्यानं न गमिष्यति—अगर हरिश्चन्द्र बाग को न जाएगा।
८. तर्हि देवदत्तः अपि न गमिष्यति—तो देवदत्त भी न जाएगा।

शब्द

गच्छ—जा।
नय—ले जा।
धनम्—द्रव्य।
आणकम्—एक आना।
वृक्षम्—वृक्ष को।
कुरु—कर।
स्वीकुरु—स्वीकार कर।
एकम्—एक।
धौतम्—धुला हुआ।
आगच्छ—आ।
आनय—ले आ।
रूप्यकम्—रुपया।
द्रव्यम्—धन।
भक्षय—खा।
देहि—दे।
गृहाण—ले।
अन्यः—दूसरा।
सूत्रम्—सूत्र।

वाक्य

१. त्वं गृहं गच्छ, धौतं वस्त्रं च आनय—तू घर जा और धोया हुआ वस्त्र ले आ।

२. अत्र आगच्छ मधुरं च फलं भक्षय—यहां आ और मीठा फल खा।

३. सः वनं गच्छति अन्यं पुष्पं च आनयति—वह वन को जाता है और दूसरा फूल लाता है।

४. एकं रूप्यकं देहि—एक रुपया दे।

५. अत्र आगच्छ मधुरं दुग्धं च गृहाण—यहां आ और मीठा दूध ले।

६. उद्यानं गच्छ फलं च भक्षय—बाग को जा और फल खा।

७. अन्यत् वस्त्रं देहि—दूसरा वस्त्र दे।

८. अन्यत् पुस्तकम् आनय—दूसरी पुस्तक ले आ।

९. अपूपं देहि सूपं च स्वीकुरु—पूड़ा दे और दाल ले।

१०. मुद्गौदनं देहि दुग्धं च तत्र नय—खिचड़ी दे और दूध वहां ले जा।

११. अत्र त्वम् आगच्छ स्वादु फलं च देहि—यहां तू आ और मीठा फल दे।

१२. ओदनं भक्षय, यत्र कुत्रापि च गच्छ—चावल खा और जहां कहीं भी जा।

पूर्व दो पाठों में 'देव' तथा 'राम' इन दो शब्दों की सातों विभक्तियों के एकवचन के रूप दिए हैं। एकवचन वह होता है जो एक संख्या का बोधक हो, जैसे—छत्रम् (एक छाता) 'छाता' शब्द से एक ही छाते का बोध होता है। बहुत हुए तो उनको 'छाते' कहेंगे।

भाषा में एक संख्या के दर्शक वचन को 'एकवचन' कहते हैं। तथा एक से अधिक संख्या का बोधक जो वचन होता है उसको 'अनेक'

(बहु) वचन कहते हैं। जैसे—छाता (एकवचन)। छाते (अनेक-वचन)।

संस्कृत में तीन वचन हैं। एक संख्या बतानेवाला 'एकवचन' होता है। दो संख्या बतानेवाला 'द्विवचन' कहलाता है तथा तीन अथवा तीन से अधिक संख्या बतानेवाले को 'बहुवचन' कहते हैं।

द्विवचन तथा बहुवचन के रूप 'संस्कृत स्वयं-शिक्षक' के दूसरे भाग में दिए जाएंगे। इस प्रथम भाग में केवल एकवचन के ही रूप दिए जाते हैं। यदि पाठक एकवचन के ही रूप ध्यान में रखेंगे तो वे बहुत उपयोगी वाक्य बना सकेंगे। इसलिए पाठकों को चाहिए कि वे इन रूपों की ओर विशेष ध्यान दें। अब कुछ वाक्य देते हैं—

१. विष्णुमित्रस्य गृहं कुत्र अस्ति—विष्णुमित्र का घर कहां है?
२. तस्य गृहं तत्र न अस्ति—उसका घर वहां नहीं है।
३. हुसैनन द्रव्यं दत्तम्—हुसैन ने धन दिया।
४. यज्ञदत्तः कदा अत्र आगमिष्यति—यज्ञदत्त कब यहां आएगा।
५. फलस्य बीजं कुत्र अस्ति—फल का बीज कहां है?
६. पश्य सः तत्र न अस्ति—देख वह वहां नहीं है।
७. पर्वतस्य शिखरं रमणीयम् अस्ति—पर्वत का शिखर रमणीय है।
८. पाठे शब्दाः सन्ति—पाठ के अन्दर शब्द हैं।
९. शब्दे अक्षराणि सन्ति—शब्द के अन्दर अक्षर हैं।
१०. पुस्तकं त्यक्त्वा गच्छ—किताब को छोड़कर जा।
११. एकस्य पुस्तकम् अन्यः कथं नेष्यति—एक की पुस्तक दूसरा कैसे ले जाएगा।
१२. मनुष्यस्य बलं नास्ति—मनुष्य का बल नहीं है।
१३. बालकस्य मुखं मलिनम् अस्ति—लड़के का मुख मलिन है।

१४. तस्य मुखं मलिनं न अस्ति—उसका मुख मलिन नहीं है ।

१५. राजपुरुषस्य आज्ञा अस्ति—राजा के मनुष्य (हाकिम) की आज्ञा है ।

पाठ ७

पाठकों को उचित है कि वे प्रतिदिन पूर्व-पाठों में से भी शब्द कण्ठ किया करें तथा वाक्यों की ओर बार-बार ध्यान दिया करें और आए हुए शब्दों से अन्यान्य नये-नये वाक्य घड़ते रहें। ऐसा प्रयत्न करने से ही उनकी इस देवभाषा में शीघ्र गति होगी अन्यथा नहीं। अब नीचे लिखे शब्द कण्ठ कीजिए—

कथय—कह ।
अस्ति—वह है ।
अस्मि—हूं ।
दयाम्—दया को ।
आगच्छ—आ ।
ब्रूहि—बोल ।
पश्य—देख ।
पाठम्—पाठ को ।
दर्शय—दिखा, बता ।
असि—तू है ।
सत्य—सच्चाई ।
सन्ध्याम्—सन्ध्या को ।
शृणु—सुन ।
वद—कह ।
कर्म—काम, कार्य ।

वाक्य

१. सत्यं ब्रूहि—सत्य बोल । २. उद्यानं पश्य—बाग को देख ।
३. दयां कुरु—दया कर । ४. सन्ध्यां कुरु—सन्ध्या कर ।
५. सत्यकामः तत्र अस्ति—सत्यकाम वहां है ।
६. हरिश्चन्द्रः अत्र अस्ति—हरिश्चन्द्र यहां है ।

७. अहम् अस्मि—मैं हूं। ८. त्वम् असि—तू है।

९. सः अस्ति—वह है।

१०. विष्णुमित्रः कुत्र अस्ति—विष्णुमित्र कहां है ?

११. पश्य सः तत्र अस्ति—देख, वह वहां है।

१२. नहि, नहि, सः तत्र नास्ति—नहीं, नहीं, वह वहां नहीं है।

शब्द

द्वारम्—द्वार, दरवाजा। रथम्—गाड़ी, (बग्घी)।

वातायनम्—खिड़की। पात्रम्—बर्तन।

मुखम्—मुंह। उद्घाटय—खोल।

पिधेहि—बन्द कर। कपाटम्—दरवाजे के फट्टे, किवाड़।

पिब—पी। नेत्रम्—आंख।

वाक्य

१. द्वारम् उद्घाटय पात्रं च अत्र आनय—दरवाजा खोल और बरतन यहां ले आ।

२ वातायनं पिधेहि जलं च पिब—खिड़की बन्द कर और जल पी।

३. रथम् अत्र आनय फलं च तत्र नय—रथ यहां ले आ और फल वहां ले जा।

४. पात्रम् अत्र न आनय—बरतन यहां न ला।

५. कथं त्वम् अन्यत् पात्रम् आनयसि—क्यों तू दूसरा बर्तन लाता है?

६. अहम् अन्यत् पात्रं न आनयामि—मैं दूसरा बर्तन नहीं लाता हूं।

७. रथम् आनय वनं च श्वः प्रभाते गच्छ—रथ ले आ और वन को कल सवेरे जा।

८. जलं देहि मोदकं दुग्धं च स्वीकुरु—जल दे, लड्डू और दूध ले।

९. त्वं कुत्र असि—तू कहां है।
१०. अहम् अत्र अस्मि—मैं यहां हूं।
११. धनं देहि स्वादु दुग्धं च अत्र आनय—धन दे और स्वादिष्ठ दूध यहां ले आ।
१२. कपाटम् उद्घाटय पुष्पमालां च तत्र नय—किवाड़ खोल और फूलों की माला वहां ले जा।
१३. त्वं फलं भक्षयसि किम्—तू फल खाता है क्या ?
१४. नहि, अहं मोदकम् आम्रं च भक्षयामि—नहीं, मैं लड्डू और आम खाता हूं।
१५. यदि त्वं रथम् आनेष्यसि तर्हि अहं हरिद्वारं गमिष्यामि—अगर तू रथ ले आएगा तो मैं हरिद्वार को जाऊंगा।

अब 'रथ' और 'मार्ग' शब्द के सातों विभक्तियों के एकवचन के रूप देते हैं—

रथ शब्द के रूप	मार्ग शब्द के रूप
१. रथः—रथ।	मार्गः—मार्ग।
२. रथम्—रथ को।	मार्गम्—मार्ग को।
३. रथेन—रथ द्वारा, से।	मार्गेण—मार्ग द्वारा, से।
४. रथाय—रथ के लिए।	मार्गाय—मार्ग के लिए।
५. रथात्—रथ से।	मार्गात्—मार्ग से।
६. रथस्य—रथ का।	मार्गस्य—मार्ग का।
७. रथे—रथ में, पर।	मार्गे—मार्ग में।
(हे) रथ!—हे रथ!	(हे) मार्ग!—हे मार्ग!

शब्द

इसी प्रकार राम, बालक, मृग, सर्प, सूर्य, आनन्द, आकार, कुमार, लेख, दण्ड इत्यादि अकारान्त पुंल्लिंग शब्द चलते हैं। जिन शब्दों के अन्त मे अकार का उच्चारण होता है, उनको अकारान्त शब्द कहते हैं। अब कुछ अकारान्त शब्द देते हैं, जिनके रूप 'देव' तथा 'राम' शब्दों के समान ही होते हैं।

इन्द्रः—राजा, मुख्य।
ग्रामः—गांव।
नृपः—राजा।
मूषकः—चूहा।
रसः—रस।
वासः—रहने का स्थान।
समुद्रः—समुद्र, सागर।
स्वरः—आवाज।
चौरः—चोर।
पुत्रः—बेटा।
दण्डः—सोटी।
अर्भकः—लड़का।
चरणः—पैर।
प्रसादः—मेहरबानी।
रक्षकः—पहरेदार।
वत्सः—लड़का।
वृक्षः—दरख्त।
सर्पः—सांप।
आचार्यः—गुरु।
जनः—लोक।
वेदः—वेद, ज्ञान।
मनुष्यः—मनुष्य।

वाक्य

१. अर्भकः रथं पश्यति—लड़का गाड़ी देखता है।
२. नृपः चौरं ताडयति—राजा चोर को पीटता है।
३. सः रथेन अन्यं ग्रामं शीघ्रं[1] गच्छति—वह रथ से दूसरे ग्राम को जल्दी जाता है।

---

१. शीघ्रम्—जल्दी।

४. वृक्षात् फलं पतति—पेड़ से फल गिरता है।
५. समुद्रात् जलम् आनयति—समुद्र से पानी लाता है।
६. आचार्यः धर्मस्य मार्गं शिष्याय[1] दर्शयति—गुरु धर्म का मार्ग शिष्य के लिए दर्शाता है।
७. तस्य वासः तत्र भविष्यति—उसका रहना वहां होगा।
८. चोरः धनं चोरयति—चोर धन चुराता है।
९. नृपः जनान् रञ्जयति—राजा लोगों का रंजन (समाधान) करता है।
१०. इन्द्रः स्वर्गस्य राजा अस्ति—इन्द्र स्वर्ग का राजा है।

अब कुछ वाक्य नीचे देते हैं जो पाठक स्वयं समझ सकेंगे।

१. पुत्रः रसं पिबति[2]। २. वत्सः रथं न पश्यति। ३. सः मार्गेण न गच्छति। ४. किं सः रथेन ग्रामं न गमिष्यति। ५. यज्ञमित्रः कदा तत्र गमिष्यति। ६. रथे नृपः उपविष्टः[3]। ७. मनुष्येण लेखः लिखितः[4]। ८. आचार्यः कदा आगमिष्यति। ९. मनुष्यः दण्डेन मूषकं ताडयति[5]। १०. मार्गे तस्य पुस्तकं पतितम्[6]। ११. यथा त्वं गच्छसि तथा रामकृष्णः अपि गच्छति। १२. यथा त्वं वदसि तथा सः न वदति। १३. त्वं किमर्थं फलं न भक्षयसि। १४. सः इदानीं नैव ग्रामं गमिष्यति। १५. यथा नृपः अस्ति तथा एव विप्रः अस्ति। १६. यदा आचार्यः तत्र गमिष्यति तदा एव त्वं तत्र गच्छ। १७. तस्य पुत्रः पात्रेण जलं पिबति। १८. यः पात्रेण जलं पिबति सः तस्य पुत्रः नास्ति। १९. तर्हि कः सः। २०. सः आचार्यस्य पुत्रः अस्ति।

---

१. शिष्याय—शागिर्द। २. पिबति—पीता है। ३. उपविष्टः—बैठा है। ४. लिखितः—लिखा है। ५. ताडयति—पीटता है। ६. पतितम्—गिरी है।

पाठ ८

शब्द

श्रवणाय—सुनने के लिए।	दर्शनाय—देखने के लिए।
गमनाय—जाने के लिए।	शयनाय—सोने के लिए।
क्रीडनाय—खेलने के लिए।	पठति—वह पढ़ता है।
पठसि—तू पढ़ता है।	पठामि—पढ़ता हूं।
पठ—पढ़।	स्नानाय—स्नान के लिए।
पानाय—पीने के लिए।	भोजनाय—भोजन के लिए।
भक्षणाय—खाने के लिए।	पठनाय—पढ़ने के लिए।
पठिष्यति—वह पढ़ेगा।	पठिष्यसि—तू पढ़ेगा।
पठिष्यामि—मैं पढ़ूंगा।	लिख—लिख।

अकारान्त पुंलिंग शब्द

लेखः—लेख।	पाठः—पाठ।
दैत्यः—राक्षस।	पान्थः—मुसाफिर।
अर्थः—पैसा, धन।	करः—हाथ।
कर्णः—कान।	चन्द्रः—चांद।
विप्रः—ब्राह्मण।	सूर्यः—सूरज।
दीपः—दीप, दीया।	जनः—मनुष्य।
समाजः—समाज।	मृगः—हिरण।
वानरः—बन्दर।	अस्ताचलः—सूर्य जहां डूबता है वह पश्चिमी दिशा का पहाड़।
दिवसः—दिन।	यत्नः—प्रयत्न, पुरुषार्थ।
स्वर्गः—स्वर्ग।	पादः—पांव।
कुमारः—लड़का।	वेदः—राजा, विद्वान्।

पाठकों को चाहिए कि वे इनके सातों विभक्तियों के रूप देव और राम शब्दों के समान बनाएं।

१. स्नानाय जलं देहि—स्नान के लिए जल दे।
२. पठनाय पुस्तकम् अस्ति—पढ़ने के लिए पुस्तक है।
३. भोजनाय अन्नं भविष्यति किम्—भोजन के लिए अन्न होगा क्या ?
४. भक्षणाय फलं देहि—खाने के लिए फल दे।
५. तत्र सूर्यं पश्य—वहां सूर्य को देख।
६. विष्णुमित्रः कुमारम् अत्र किमर्थम् आनयति—विष्णुमित्र लड़के को यहां किसलिए लाता है ?
७. हरिश्चन्द्रः अग्निं तत्र नेष्यति किम्—हरिश्चन्द्र आग को वहां ले जाएगा क्या ?
८. पठनाय दीपं पुस्तकं च अत्र आनय—पढ़ने के लिए दीप और पुस्तक यहां ले आ।
९. प्रातः स्नानाय गच्छामि—सवेरे स्नान के लिए जाता हूं।
१०. पानाय मधुरं दुग्धं देहि—पीने के लिए मीठा दूध दे।
११. अत्र स्वादु दुग्धम् अस्ति—यहां स्वादिष्ठ दूध है।
१२. किं स्वादु दुग्धम् अत्र नास्ति—क्या स्वादिष्ठ दूध यहां नहीं है ?
१३. स्नानाय जलं नय—स्नान के लिए जल ले जा।

शब्द

किमर्थम्—कसलिए। अधुना—अब।
पश्चात्—पीछे से। पूर्वम्—पहले।
शीघ्रम्—जल्दी। कृत्वा—करके।
गत्वा—जा करके। दत्त्वा—देकर।

भक्षयित्वा—खाकर ।
किमर्थम्—किसलिए ।
सत्वरम्—शीघ्र, जल्दी ।
परन्तु—परन्तु, लेकिन ।
पठित्वा—पढ़कर ।
दृष्ट्वा—देखकर ।
विचार्य—सोचकर ।
इदानीम्—अब ।
एव—ही ।
स्नात्वा—स्नान करके ।
नीत्वा—लेकर ।
विलोक्य—देखकर ।

वाक्य

१. तत्र जलं पीत्वा शीघ्रम् अत्र आगच्छ—वहां जल पीकर जल्दी यहां आ ।
२. स्नानाय जलं दत्वा सत्वरम् उद्यानं गच्छ—स्नान के लिए पानी देकर शीघ्र बाग को जा ।
३. त्वम् इदानीं पठसि परन्तु अहं न पठामि—तू अब पढ़ता है परन्तु मैं नहीं पढ़ता ।
४. विष्णुमित्रः कर्म कृत्वा स्नानं करिष्यति—विष्णुमित्र काम करके स्नान करेगा ।
५. त्वं पूर्वं गृहं गत्वा पश्चात् स्नानं कुरु—तू पहले घर जाकर पीछे स्नान कर ।
६. तत्र स्नानाय जलम् अस्ति किम्—वहां स्नान के लिए जल है क्या ?
७. तत्र स्नानाय जलं नास्ति परन्तु अत्र अस्ति—वहां स्नान के लिए जल नहीं है परन्तु यहां है ।
८. देवदत्तः भोजनं भक्षयित्वा पाठशालां गमिष्यति—देवदत्त खाना खाकर पाठशाला को जाएगा ।
९. त्वं पठित्वा शीघ्रम् आगच्छ मसीपात्रं च देहि—तू पढ़कर जल्दी आ और दवात दे ।

१०. मोदकं भक्षयित्वा त्वं कुत्र गमिष्यसि—लड्डू खाकर तू कहां जाएगा ?

११. मोदकं शीघ्रं भक्षय पश्चात् जलं पिब—लड्डू जल्दी खा पीछे पानी पी।

१२. प्रातः वनं गत्वा सायम् आगमिष्यामि—सवेरे वन को जाकर शाम को आऊंगा।

अकारान्त पुंल्लिग शब्द

अपराधः—कसूर।	उपायः—उपाय।
पर्वतः—पहाड़।	ज्वरः—बुखार।
कामः—इच्छा, कामवासना।	विनयः—नम्रता।
भृत्यः—नौकर।	गुणः—गुण।
मोहः—संशय, भूल।	विहगः—पक्षी।
धूमः—धूआं।	समागमः—सहवास, मुलाकात।
सम्मानः—मान, आदर।	लोभः—लालच।
बुधः—ज्ञानी।	कासारः—तालाब।
सङ्गः—मुहब्बत, साथ।	योधः—लड़ने वाला, शूर।
मनोरथः—इच्छा	सैनिकः—फौजी आदमी।

इन शब्दों के रूप देव तथा राम के समान बनते हैं। पाठकों को उचित है कि वे इनके सातों विभक्तियों के एकवचन के रूप बनाएं। अब इनके रूप बनाकर कुछ वाक्य देते हैं—

१. तेन अपराधः कृतः—उसने अपराध किया।

२. सः पर्वतस्य उपरि गतः—वह पहाड़ के ऊपर गया।

३. सः बुधः सायम् अत्र आगमिष्यति—वह ज्ञानी शाम को यहां आएगा।

४. एकः विहगः वृक्षे अस्ति तं पश्य—एक पक्षी दरख्त पर है, उसको देख।

५. भृत्यः तत्र गतः—नौकर वहां गया।

६. मम पुत्रः अधुना पुस्तकं पठति--मेरा लड़का अब किताब पढ़ता है।

७. योधः युद्धं करोति—लड़ने वाला लड़ाई करता है।

८. सैनिकः तत्र न अस्ति—फौजी आदमी वहां नहीं है।

९. सः ज्वरेण पीडितः अस्ति—वह बुखार से पीड़ित हुआ है।

१०. गुणः सम्मानाय भवति—गुण आदर के लिए होता है।

११. कुमारस्य पुस्तकं कुत्र अस्ति, दर्शय—लड़के की किताब कहां है दिखा।

१२. बुधस्य समागमेन तेन ज्ञानं प्राप्तम्—ज्ञानी के सहवास से उसने ज्ञान प्राप्त किया।

अब नीचे ऐसे वाक्य देते हैं जो कि भाषान्तर बिना ही पाठक समझ जाएंगे—

(१) त्वम् इदानीम् किं तत् पुस्तकं पठसि ? (२) तत्र स्नानाय शुद्धं जलम् अस्ति। (३) तव भृत्यः कुत्र गतः ? (४) मम भृत्यः आपणं गतः। (५) किमर्थं स आपणं गतः ? (६) सः फलम् अन्नं च आनेष्यति। (७) अहं फलम् अन्नं च भक्षयितुम् इच्छामि। (८) सः मोदकं भक्षयित्वा पाठशालां पठितुं गतः। (९) सः दिने दिने प्रातः स्नानं कृत्वा वनं गच्छति। (१०) सः तत्र किं करोति ? (११) सः वनं गत्वा सन्ध्यां करोति। (१२) नृपः अत्र आगतः। (१३) बुधः इदानीम् एव तत्र गतः। (१४) तस्य मनोरथः उत्तमः अस्ति। (१५) सः स्नानाय कासारं गच्छति। (१६) तत्र कासारस्य जलं स्वादु अस्ति। (१७) तत्र कूपस्य जलं स्वादु नास्ति।

अब निम्नलिखित भाषा के वाक्यों का संस्कृत में भाषान्तर कीजिए—

(१) स्नान के लिए जल दे। (२) खाने के लिए अन्न दे। (३) हरिश्चन्द्र कहां जाता है? (४) हरिश्चन्द्र गांव को जाता है। (५) पीने के लिए मीठा दूध दे। (६) तू अब पढ़ता है, परन्तु मैं नहीं पढ़ता। (७) वहां स्नान के लिए जल है या नहीं? (८) उसका मनोरथ उत्तम है। (९) वह तालाब के पास स्नान के लिए जाता है। (१०) तेरे कुएं का जल मीठा है।

पाठ ९

शब्द

शिष्यः—शिष्य, पढ़ने वाला।
दासः—नौकर।
भानुः—सूर्य।
गुरुः—पढ़ाने वाला।
बन्धुः—सम्बन्धी।
पुत्रः—पुत्र, लड़का।
तव—तेरा।
मम—मेरा।
तस्य—उसका।

कृपा—दया, मेहरबानी।
स्वसा—बहिन।
माता—मां।
पिता—पिता, बाप।
भगिनी—बहिन।
तुभ्यम्—तेरे लिए।
मह्यम्—मेरे लिए।
तस्मै—उसके लिए।
अस्मै—इसके लिए।

वाक्य

१. तव गुरुः कुत्र अस्ति—तेरा गुरु कहां है?
२. इदानीं मम गुरुः तत्र अस्ति—अब मेरा गुरु वहां है।

३. मम माता अद्य सायं वनं गमिष्यति—मेरी माता आज शाम को वन को जाएगी ।
४. अधुना मह्यं पठनाय पुस्तकं देहि—अब मुझको पढ़ने के लिए पुस्तक दे ।
५. तस्य गृहं कुत्र अस्ति—उसका घर कहां है ?
६. तव दासः ग्रामं गमिष्यति किम् ?—तेरा नौकर गांव को जाएगा क्या ?
७. तव पुत्रः कदा वनं गमिष्यति—तेरा पुत्र कब वन को जाएगा ?
८. मम बन्धुः इदानीं पुस्तकं पठति—मेरा सम्बन्धी अब पुस्तक पढ़ता है ।
९. मम माता पुष्पमालां करोति—मेरी माता पुष्पमाला बनाती है ।
१०. तव पिता तव च माता—तेरा पिता और तेरी माता ।
११. पानाय मह्यं जलं देहि—पीने के लिए मुझे पानी दे ।
१२. स्नात्वा सायम् आगमिष्यति—स्नान करके शाम को आएगा ।
१३. नहि, नहि, सः ग्रामं गत्वा रात्रौ आगमिष्यति—नहीं, नहीं, वह गांव को जाकर रात्रि को आएगा ।

शब्द

इच्छति—वह चाहता है ।
इच्छसि—तू चाहता है ।
इच्छामि—मैं चाहता हूं ।
पत्रम्—पत्र ।
शुद्धम्—शुद्ध, साफ ।
मार्गः—मार्ग, रास्ता ।

लिखति—वह लिखता है ।
लिखसि—तू लिखता है ।
लिखामि—मैं लिखता हूं ।
कूपम्—कुआं ।
औषधम्—औषध, दवा ।
उत्तरीयम्—दुपट्टा ।

कर्तुम्—करने के लिए।
भोक्तुम्—खाने के लिए।
दातुम्—देने के लिए।
भक्षयितुम्—खाने के लिए।
पातुम्—पीने के लिए।
पठितुम्—पढ़ने के लिए।
लेखितुम्—लिखने के लिए।
स्वीकर्तुम्—स्वीकार करने के लिए।
गन्तुम्—जाने के लिए।
आगन्तुम्—आने के लिए।
नेतुम्—ले जाने के लिए।
आनेतुम्—लाने के लिए।

वाक्य

१. रामचन्द्रः पुस्तकं पठितुम् इच्छति—रामचन्द्र पुस्तक पढ़ने की इच्छा करता है।
२. हरिश्चन्द्रः शुद्धं जलं पातुम् इच्छति—हरिश्चन्द्र शुद्ध जल पीने की इच्छा करता है।
३. अहं कूपं गत्वा स्नानं कर्तुम् इच्छामि—मैं कुएं पर जाकर स्नान करना चाहता हूं।
४. त्वं श्वः प्रातः स्नानं करिष्यसि किम्—तू कल प्रातः स्नान करेगा क्या ?
५. नहि, अहं श्वः प्रातः स्नानं कर्तुम् न इच्छामि—नहीं, मैं कल सवेरे स्नान करना नहीं चाहता।
६. यदि प्रातः न करिष्यसि तर्हि कदा करिष्यसि—अगर सवेरे नहीं करेगा तो कब करेगा ?
७. सायं करिष्यामि—शाम को करूंगा।
८. त्वम् इदानीम् पठितुम् इच्छसि किम् ?—तू अब पढ़ना चाहता है क्या ?
९. नहि, इदानीम् अहं फलं भक्षयितुम् इच्छामि—नहीं, अब मैं फल खाना नहीं चाहता हूं।

अकारान्त पुंल्लिंग शब्द

अलङ्कारः—ज़ेवर।
छात्रः—शिष्य, शागिर्द।
व्याधः—शिकारी।
स्नेहः—दोस्ती।
कपोलः—गाल।
तरङ्गः—लहर (पानी की)।
नयनम्—आंख।
प्रवाहः—वेग।
आतपः—धूप।
पुरुषार्थः—प्रयत्न।
ओष्ठः—ओठ।
दण्डः—सोटा।
ब्राह्मणः—ब्राह्मण।
स्तेनः—चोर।
वर्णः—रंग।
चातकः—पपीहा।
द्विरेफः—भ्रमर, भंवरा।
नेत्रम्—आंख।
शक्रः—इन्द्र।
उद्यमः—उद्योग।
उपदेशः—उपदेश।
कुक्कुरः—कुत्ता।

इन शब्दों के रूप राम और देव शब्दों के समान ही होते हैं। पाठकों को चाहिए कि वे इनके सातों विभक्तियों के रूप बनाएं और उनका वाक्यों में प्रयोग करें।

वाक्य

१. तेन कर्णे हस्ते च अलङ्कारः धृतः—उसने कान में और हाथ में ज़ेवर धारण किया है।
२. मित्रेण हस्ते श्वेतः दण्डः धृतः—मित्र ने हाथ में सफेद सोटी पकड़ी है।
३. कुमारेण मुखे हस्तः धृतः—लड़के ने मुख में हाथ डाला है।
४. कृष्णः हस्तेन रामाय फलं ददाति—कृष्ण हाथ से राम के लिए फल (को) देता है।

५. अत्र जलस्य प्रवाहः अस्ति—यहां जल का वेग है।
६. सः पुरुषः आतपे तिष्ठति—वह मनुष्य धूप में खड़ा है।
७. हे मित्र, जलस्य तरङ्गं पश्य—हे दोस्त! पानी की लहर को देख।
८. सः सदा उद्यमं करोति—वह हमेशा पुरुषार्थ करता है।
९. आचार्यः उपदेशं करोति—गुरु उपदेश करता है।
१०. जनः मुखेन वदति—पुरुष मुंह से बोलता है।
११. कुमारः व्याघ्रं ताडयति—लड़का शेर को पीटता है।
१२. तस्य कुक्कुरः अन्नं भक्षयति—उसका कुत्ता अन्न खाता है।
१३. लोकः नेत्राभ्यां पश्यति—मनुष्य आंखों से देखता है।
१४. मनुष्यः कर्णाभ्यां शृणोति—मनुष्य कानों से सुनता है।
१५. छात्रः प्रातर् अध्ययनं करोति—विद्यार्थीसवेरे पठन करता है।

अब कुछ वाक्य नीचे देते हैं जिनको पाठक पढ़ते ही समझ जाएंगे। उनका भाषा में भाषान्तर देने की जरूरत नहीं।

१. तेन कर्णयोः अलङ्कारः न धृतः। २. भृत्येन हस्ते दण्डः न धृतः। ३. कुमारेण हस्ते मोदकः धृतः। ४. केशवदत्तः धनञ्जयाय धनं ददाति। ५. मनुष्यः कर्णाभ्यां शृणोति नेत्राभ्यां च पश्यति।

निम्न वाक्यों की संस्कृत बनाइए—

१. लड़का शेर को पीटता है। २. मेरा भाई अब यहां नहीं है।

पाठ १०

शब्द

ज्ञानम्—ज्ञान, इल्म।
दानम्—दान।
जानामि—जानता हूं।
जानासि—तू जानता है।
जानाति—वह जानता है।
ज्ञात्वा—जानकर।

विज्ञाय—जानकर।
भो मित्र—हे मित्र!
व्यायामम्—व्यायाम (कसरत) को।
उत्थानम्—उठना।
ददासि—तू देता है।
ज्ञातुम्—जानने के लिए।
शौचम्—शौच, टट्टी।
भोजनम्—भोजन।
जातः—हो गया।
उत्तिष्ठ—उठ।
प्रक्षालनम्—धोना।
ददामि—मैं देता हूं।
ददाति—वह देता है।
प्रातःकालः—सवेरा।
मुखप्रक्षालनम्—मुंह धोना।
कुतः—क्यों, कहां से।

वाक्य

१. भो मित्र! पश्य, प्रातःकालः जातः—हे मित्र! देख सवेरा हो गया।
२. उत्तिष्ठ! शौचं कृत्वा शीघ्रं स्नानं कुरु—उठ! शौच करके जल्दी स्नान कर।
३. अहं शौचं कृत्वा मुखप्रक्षालनं करिष्यामि—मैं शौच करके मुंह धोऊंगा।
४. पश्चात् स्नानं कृत्वा सन्ध्यां करिष्यसि किम्—पीछे स्नान करके सन्ध्या करेगा क्या?
५. नहि, अहं पश्चात् व्यायामं कृत्वा स्नानं कर्तुम् इच्छामि—नहीं, मैं पीछे व्यायाम करके स्नान करना चाहता हूं।
६. तथा कुरु—वैसा कर।
७. स्नानं सन्ध्यां च कृत्वा पुस्तकं पठिष्यामि—स्नान और सन्ध्या करके पुस्तक पढ़ूंगा।
८. भो मित्र! किं त्वं प्रातर् अग्निहोत्रं न करोषि—हे मित्र! क्या तू सवेरे अग्निहोत्र नहीं करता है?

९. कुतः न करोमि, सदा करोमि एव—क्यों नहीं करता ? हमेशा करता ही हूं ।
१०. पश्चात् मध्याह्ने किं किं करिष्यसि—पीछे दुपहर को क्या-क्या करेगा ?
११. भोजनं कृत्वा पठनाय पाठशालां गच्छामि—भोजन करके पढ़ने के लिए पाठशाला को जाता हूं ।
१२. अहं सर्वदा पुस्तकं पठितुम् इच्छामि—मैं हमेशा पुस्तक पढ़ना चाहता हूं ।

शब्द

भ्रमणाय—घूमने के लिए ।
किमर्थम्—किस लिए ।
तिष्ठसि—तू ठहरता है, बैठता है ।
स्थास्यति—वह ठहरेगा, बैठेगा ।
स्थितः—ठहरा हुआ ।
पीतः—पीला ।
स्थातुम्—ठहरने के लिए ।
स्थास्यामि—ठहरूंगा, बैठूंगा ।
उत्तिष्ठ—उठ ।
दानाय—देने के लिए ।
तिष्ठति—ठहरता है, बैठता है ।
तिष्ठामि—ठहरता हूं, बैठता हूं ।
तिष्ठ—ठहर, बैठ ।
रक्तम्—लाल या खून ।
स्थित्वा—ठहरकर, बैठकर ।
स्थास्यसि—तू ठहरेगा, बैठेगा ।
अथ किम्—और क्या ?
उत्थितः—उठा हुआ ।

वाक्य

१. अत्र त्वं किमर्थं तिष्ठसि, वद—यहां तू किसलिए ठहरता है, कह ।
२. इदानीम् अत्र विष्णुमित्रः आगमिष्यति—अब यहां विष्णुमित्र आएगा ।
३. पश्चात् किं करिष्यसि—(तू) पीछे क्या करेगा ?

४. सायं भ्रमणाय अहं गमिष्यामि—शाम को घूमने के लिए मैं जाऊंगा ।

५. धनं किमर्थम् अस्ति—धन किस प्रयोजन के लिए है ?

६. धनं दानाय एव अस्ति—धन दान के लिए ही है ।

७. उद्यानं गत्वा तत्र स्थातुम् इच्छामि—बाग को जाकर वहां बैठना चाहता हूं ।

८. तत्र स्थित्वा किं करिष्यसि—वहां बैठकर तू क्या करेगा ?

९. पुस्तकं पठितुं पत्रं च लेखितुम् इच्छामि—पुस्तक पढ़ना और पत्र लिखना चाहता हूं ।

१०. इदानीम् एव उद्यानं गच्छ रक्तं पुष्पं च आनय—अभी बाग को जा और लाल फूल ले आ ।

११. पीतं पुष्पं न आनय—पीला फूल न ला ।

१२. अत्र शुद्धं जलम् अस्ति—यहां शुद्ध जल है ।

१३. किमर्थं स्नानम् इदानीम् एव न करोषि—क्यों स्नान अभी ही नहीं करता ?

१४. इदानीम् एव स्नानं कर्तुं न इच्छामि—अभी स्नान करने की मेरी इच्छा नहीं ।

अकारान्त पुंल्लिग शब्द

अक्षः—पांसा, जूआ ।
अनर्थः—कष्ट, दुःख ।
ग्रन्थः—पुस्तक ।
प्रभवः—उत्पत्ति ।
पार्थिवः—राजा ।
विन्ध्यः—एक पर्वत ।
शृगालः—गीदड़ ।
कपोतः—कबूतर ।
मेघः—बादल ।
सिंहः—शेर ।

आश्रमः—आश्रम, रहने का स्थान ।
तापः—गर्मी ।
वरः—वर, इष्ट ।
शुकः—तोता ।
नागः—सांप ।
जनकः—पिता
कोपः—क्रोध, गुस्सा ।
दुर्गः—किला ।
वायसः—कौवा ।
देहः—शरीर, जिस्म ।
याचकः—मांगने वाला ।
सैनिकः—सिपाही ।

इन शब्दों के रूप भी 'देव' और 'राम' शब्दों के समान होते हैं। पाठक इनके रूप सब विभक्तियों में बना सकते हैं ।

वाक्य

पाठक इन वाक्यों को पढ़ते ही समझ जाएंगे, इसलिए इनके अर्थ नहीं दिए हैं ।

१. तेन बुधेन ग्रन्थः लिखितः । २. पर्वते सिंहः अस्ति । ३. नगरे अद्य नृपः आगतः । ४. सः सैनिकः दुर्गं गमिष्यति । ५. याचकः मार्गे तिष्ठति । ६. तस्य जनकः गृहे तिष्ठति । ७. तस्य पुत्रः पाठशालां गतः । ८. आकाशे मेघः अस्ति । ९. पार्थिवः युद्धं करोति । १०. नृपस्य प्रसादेन तेन धनं प्राप्तम् । ११. तेन मित्रस्य गृहात् पुस्तकं आनीतम् । १२. सः वनस्य मार्गं पश्यति । १३. आकाशे सूर्यः अस्ति । १४. वने वृक्षः अस्ति । १५. वृक्षे खगः अस्ति ।

परीक्षा

पाठकों को उचित है कि वे इन प्रश्नों के ठीक उत्तर देकर ही आगे बढ़ें । अगर इसके ठीक उत्तर वे न दे सकें तो पहले दस पाठ दुबारा पढ़ें—

(१) निम्न शब्दों के सातों विभक्तियों के एकवचन के रूप लिखिए—

ग्राम। चरण। देव। नृप। मार्ग। रक्षक। राम। वृक्ष। दुर्ग। ग्रन्थ। आश्रम। अनर्थ।

(२) निम्नलिखित शब्दों का पंचमी तथा षष्ठी का एकवचन लिखिए। इस प्रकार का उत्तर अतिशीघ्र लिखना चाहिए—

नाग। पर्वत। देह। दिन। कपोल। कृष्ण। सिंह। लोभ। विनय। धनिक। खल। समागम।

(३) निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ कीजिए—

(१) त्वं श्वः प्रातः स्नानं करिष्यसि किम्? (२) त्वम् इदानीं पठितुम् इच्छसि किम्? (३) अहं कासारं गत्वा स्नानं कर्तुम् इच्छामि। (४) त्वं तं रथम् आनय। (५) अन्यत् पुस्तकम् आनय। (६) मुद्गौदनं याचकाय देहि। याचकः तत्र मार्गे तिष्ठति। तं पश्य। (७) अत्र त्वं शीघ्रम् आगच्छ। (८) सः सायं तत्र पुस्तकं नेष्यति। (९) कदा सः आगमिष्यति? (१०) सः श्वः प्रभाते आगमिष्यति।

(४) भाषा के निम्न वाक्यों के संस्कृत वाक्य बनाइए—

(१) वह दुपट्टा ले जाता है। (२) मैं कल दुपहर को जाऊंगा। (३) लड्डू जल्दी खा और पीछे पानी पी ले। (४) देवदत्त भोजन खाकर पाठशाला को जाएगा। (५) तू अब पढ़ता है, परन्तु मैं नहीं पढ़ती। (६) बाग को जा और फल खा। (७) तू घर जा और धोया हुआ वस्त्र ले आ।

पाठ ११

अब दस पाठ हो चुके हैं। इतने थोड़े समय में पाठक बहुत-से वाक्य बनाने में समर्थ हो रहे होंगे। वे अगर धैर्य से और वाक्य घड़ते जाएंगे, तो उनकी संस्कृत में बातचीत करने की शक्ति स्वयं बढ़ती जाएगी। संस्कृत भाषा की वाक्य-रचना अत्युत्तम है। अंग्रेजी तथा उर्दू के समान निश्चित स्थान पर रखने की आवश्यकता नहीं देखिए—

अहं मोदकं भक्षयामि। अहं भक्षयामि मोदकम्।
मोदकं भक्षयामि अहम्। मोदकं अहं भक्षयामि।
भक्षयामि अहं मोदकम्। भक्षयामि मोदकम् अहम्।

ये सब वाक्य शुद्ध हैं और इन सबका अर्थ 'मैं लड्डू खाता हूं' इतना ही है। इसीलिए पाठकों को उचित है कि वे सीखे हुए शब्दों को यथासम्भव उपयोग में लाकर नये-नये वाक्य बनाएं।

अब इस पाठ में कोई नया शब्द नहीं दिया जाता। पाठक आज के दिन कोई नया शब्द याद न करें और पिछले पाठों में से कोई वाक्य या शब्द भूला हो तो उसको ठीक-ठीक स्मरण करें।

अब इस पाठ में पाठकों को ऐसे वाक्य दिए जाएंगे जिनके शब्दों का प्रयोग पहले हो चुका है। यहां एक बात पाठकों को स्मरण रखनी चाहिए कि मनुष्यों के नाम वाक्य में आने से कोई नई रचना संस्कृत में नहीं होती। देखिए—

रामचन्द्रः वनं गच्छति—रामचन्द्र वन को जाता है।
विलियमः वनं गच्छति—विलियम वन को जाता है।
महम्मदः वनं गच्छति—मुहम्मद वन को जाता है।

अर्थात् बोलने के समय पाठक जिस किसी का भी नाम वाक्य में रखकर अपना आशय प्रकट कर सकते हैं।

संस्कृत भाषा में दूसरी आसानी (सुभीता) यह है कि लिंग के अनुसार शब्दों की विभक्तियां नहीं बदलतीं। जिस अवस्था में बदलती हैं उस अवस्था का वर्णन हम आगे करेंगे। इस समय पाठक ऐसा समझें कि नहीं बदलतीं। देखिए—

तस्य लेखनी—उसकी लेखनी।

तस्य पुस्तकम्—उसकी किताब।

तस्य फलम्—उसका फल।

तस्य पुत्रः—उसका लड़का।

पाठक यहां देखेंगे कि भाषा में 'उसकी, उसका' शब्दों में जिस कारण 'की, का' यह भेद हुआ है, वैसा कोई भेद संस्कृत में नहीं है। इस कारण संस्कृत के वाक्य बनाना भाषा के वाक्य बनाने से सुगम अर्थात् आसान है।

वाक्य

१. त्वम् अद्य गृहं गन्तुं किमर्थम् इच्छसि—तू आज घर जाने की क्यों इच्छा करता है।
२. अद्य मम पिता गृहम् आगमिष्यति—आज मेरा पिता घर आएगा।
३. सः कदा आगमिष्यति, त्वं जानासि किम्—वह कब आएगा, तू जानता है क्या?
४. नहि अहं न जानामि, परन्तु सः रात्रौ आगमिष्यति—नहीं, मैं नहीं जानता, परन्तु वह रात्रि में आएगा।
५. जानसनः इदानीं किं करोति—जानसन (साहब) अब क्या करता है?

६. सः पत्रं लिखति—वह पत्र लिखता है ।

७. दीवानचन्द्रः धौतं वस्त्रम् आनयति—दीवानचन्द्र धोया हुआ कपड़ा लाता है ?

८. रामकृष्णः इदानीं दीपं कुत्र नयति—रामकृष्ण अब दीया कहां ले जाता है ?

९. सः पठनाय दीपं पुस्तकं च नयति—वह पढ़ने के लिए दीया और पुस्तक ले जाता है ?

१०. कस्य पुस्तकम् अस्ति—किसकी पुस्तक है ?

११. मम पुस्तकम् अस्ति—मेरी पुस्तक है ।

१२. तव वस्त्रं नास्ति किम्—तेरा कपड़ा नहीं है क्या ?

१३. सत्वरम् अत्र आगच्छ, पीतं पुष्प च पश्य—शीघ्र यहां आ और पीला फूल देख ।

पूर्व पाठों के अकारान्त शब्दों में रूप बनाने का प्रकार बताया है। अब इकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप बनाने का प्रकार बताते हैं—

इकारान्त पुंल्लिग 'रवि' शब्द

१. प्रथमा	रविः	रवि (सूर्य)
२. द्वितीया	रविम्	रवि को
३. तृतीया	रविणा	रवि से (द्वारा)
४. चतुर्थी	रवये	रवि के लिए
५. पञ्चमी	रवेः	रवि से
६. षष्ठी	रवेः	रवि का, की, के
७. सप्तमी	रवौ	रवि में, पर
सम्बोधन	(हे) रवे	हे रवि

अग्नि, अरि, अहि, उदधि, कवि इत्यादि इकारान्त पुंल्लिंगी शब्द भी इसी प्रकार चलते हैं।

शब्द

अग्निः—आग।	अहिः—सांप।
अरिः—शत्रु।	उदधिः—समुद्र।
कविः—काव्य-रचयिता।	बृहस्पतिः—देवताओं का गुरु।
पतत्रिः—पक्षी।	कपिः—बन्दर।
शनिः—शनि, तारा।	नृपतिः—राजा।
पाणिनिः—व्याकरणाचार्य।	गिरिः—पहाड़।

उक्त 'रवि' शब्द के समान ही इनके एकवचन के रूप होते हैं।

वाक्य

१. रविः आकाशे आगतः—सूर्य आकाश में आ गया।
२. बालकः रविं पश्यति—लड़का सूर्य को देखता है।
३. रविणा प्रकाशः कृतः—सूर्य ने रोशनी की।
४. रवये नमः कुरु—सूर्य के लिए नमस्कार कर।
५. रवेः प्रकाशः भवति—सूर्य से प्रकाश होता है।
६. रवेः प्रकाशं पश्य—सूर्य का प्रकाश देख।
७. रवौ प्रकाशः अस्ति—सूर्य में प्रकाश है।

अब नीचे कुछ ऐसे वाक्य देते हैं, जिन्हें पाठक आसानी से समझ जाएंगे। उनका भाषा में अर्थ देने की आवश्यकता नहीं।

१. तत्र अग्निः अस्ति। २. नरेन्द्रः अग्निम् अत्र आनयति। ३. विष्णुमित्रः अग्निना जलम् उष्णं[1] करोति। ४. नृपतिः अरिणा सह[2]

---

१. उष्णम्—गरम। २. सह—साथ।

युद्धं करोति। ५. कवेः काव्यं[1] पठामि । ६. तं हिमगिरिं[2] पश्य। ७. हिमगिरेः गङ्गा प्रभवति[3] । ८. कपिः वृक्षे अस्ति, तं पश्य, कथं सः मुखं करोति। ६. तस्य मुखः[4] कृष्णः अस्ति। १०. बृहस्पतिः आकाशे उदितः[5] । ११. हिमगिरौ मेघः आगतः। १२. उदधौ जलम् अस्ति। १३. तत्र अहिः अस्तिः अतः तत्र न गच्छ। १४. पाणिनिना व्याकरणं रचितम्[7] । १५. पतत्रिः आकाशे गच्छति। १६. पश्य, कथं सः पतत्रिः आकाशे गच्छति। १७. यथा पतत्रिः आकाशे गच्छति ? न तथा कपिः गच्छति ।

निम्न हिन्दी वाक्यों के संस्कृत वाक्य बनाइए—

१. तू अब क्या पढ़ता है ? २. तेरा नौकर कहां गया ? ३. मैं बाजार में जाता हूं। ४. मैं फल और अन्न खाना चाहता हूं। ५. राजा आ गया। ६. ज्ञानी अभी वहां गया। ७. मेरे कुएं का पानी मीठा है। ८. वह बाग में जाकर सन्ध्या करता है। ६. मोदक खा और पानी पी। १० देख, लड़का कैसा दौड़ता है !

पाठ १२

शब्द

धावनम्—दौड़ना। स्वीकरणम्—स्वीकार करना।
धावति—वह दौड़ता है। धावसि—तू दौड़ता है।
धावामि—दौड़ता हूं। इच्छया—इच्छा से।
अन्तरिक्षे—आकाश में। नगरे—शहर में।

---

१. काव्यम्—कवितामय पुस्तक। २. हिमगिरिः—हिमालय। ३. प्रभवति—उत्पन्न होता है। ४. कृष्णः—काला। ५. उदितः—उदय हुआ। ६. व्याकरणम्—व्याकरण (ग्रामर)। ७. रचितम्—रचा।

शीतम्—ठण्डा ।
भ्रमणम्—घूमना ।
पश्यसि—तू देखता है ।
धूम्रयानेन—रेलगाड़ी से ।
बुभुक्षा—भूख ।
रचनम्—रचना ।
पश्यसि—तू देखता है ।
पश्यामि—देखता हूं ।
पिपासा—प्यास ।
उष्णम्—गरम ।

वाक्य

१. सः इच्छया स्वीकरिष्यति—वह इच्छा से स्वीकार करेगा ।
२. प्रकाशदेवः उद्याने व्यर्थं धावति—प्रकाशदेव बाग में व्यर्थ दौड़ता है ।
३. त्वम् इदानीं किमर्थं धावसि—तू अब क्यों दौड़ता है ?
४. अहम् अधुना धावामि—मैं अब दौड़ता हूं ।
५. अन्तरिक्षे सूर्यं पश्यसि किम्—तू आकाश में सूर्य को देखता है क्या ?
६. रात्रौ सूर्यं न पश्यामि—रात्रि में सूर्य को नहीं देखता हूं ।
७. विश्वामित्रः भ्रमणाय सायं गमिष्यति किम्—विश्वामित्र घूमने के लिए शाम को जाएगा क्या ?
८. सः तत्र स्थातुम् इच्छति वह वहां ठहरना चाहता है ।
९. जालन्धरनगरे मम गृहम् अस्ति—जालन्धर शहर में मेरा घर है ?
१०. भो मित्र ! तव गृहं कुत्र अस्ति—हे मित्र तेरा घर कहां है ?
११. मम गृहं पेशावरनगरे अस्ति—मेरा घर पेशावर शहर में है ।
१२. धूम्रयानेन त्वं तत्र गमिष्यसि किम्—रेलगाड़ी से वहां जाएगा क्या?
१३. अथ किम्, धूम्रयानेन अहं तत्र परश्वः गमिष्यामि—और क्या रेलगाड़ी से मैं वहां परसों जाऊंगा ।
१४. इदानीं पिपासा अस्ति, मह्यं शीतलं जलं देहि—अब प्यास है, मुझे ठण्डा जल दे ।

१५. अधुना बुभुक्षा न अस्ति, अन्नं न देहि—अब भूख नहीं है, अन्न न दे।

शब्द

कन्या—पुत्री, लड़की।	भ्राता—भाई।
कृश—दुर्बल।	संयोगः—मिलाप।
मित्रम्—मित्र, दोस्त।	स्वसा—बहिन।
पितृव्यः—चाचा।	जामाता—दामाद।
पिबसि—तू पीता है।	अवश्यम्—अवश्य।
पिबति—वह पीता है।	नोचेत्—नहीं तो।
पिबामि—पीता हूं।	सन्धिः—सुलह, मित्रता।
सङ्घातः—समूह।	नैव—नहीं।
पास्यामि—पिऊंगा।	न एव—नहीं।
पास्यति—वह पिएगा।	पास्यसि—तू पिएगा।
नास्ति—नहीं है।	स्पष्टम्—साफ।

वाक्य

१. तव जामाता मधुरं दुग्धं रात्रौ पास्यति—तेरा दामाद मीठा दूध रात्रि में पिएगा।

२. अहं रात्रौ दुग्धं नैव पिबामि—मैं रात्रि में दूध नहीं पीता।

३. मम स्वसा उष्णं जलं पिबति—मेरी बहिन गरम पानी पीती है।

४. अहं कदा अपि उष्णं जलं पातुं न इच्छामि—मैं कभी भी गरम जल पीना नहीं चाहता।

५. तव भ्राता मद्रासनगरं कदा गमिष्यति—तेरा भाई मद्रास शहर कब जाएगा ?

६. यदि तव पिता गमिष्यति तर्हि सोऽपि गमिष्यति—अगर तेरा पिता जाएगा तो वह भी जाएगा।

७. **नोचेत् नैव गमिष्यति**—नहीं तो, नहीं जाएगा।

८. **सः पीतम् उत्तरीयं कदा आनयति**—वह पीला दुपट्टा कब लाता है?

९. **भो मित्र! इदानीं पीतं वस्त्रं न आनय**—हे मित्र! इस समय पीला वस्त्र न ला।

१०. **मम रक्तं वस्त्रं कुत्र अस्ति, जानासि किम्**—मेरा लाल कपड़ा कहां है, जानते हो क्या?

११. **अत्र दीपः नास्ति, न जानामि तव रक्तं वस्त्रम्**—यहां दीया नहीं है, (मैं) नहीं जानता तेरा लाल कपड़ा।

१२. **इदानीं सायङ्कालः जातः, भ्रमणाय गच्छ**—अब शाम हो गई, घूमने के लिए जा।

१३. **त्वं कदा भ्रमणं करिष्यसि**—तू कब भ्रमण करेगा?

१४. **अहं प्रातः भ्रमणाय गच्छामि, न सायम्**—मैं सवेरे घूमने जाता हूं, शाम को नहीं।

१५. **त्वं कदा अपि न आगच्छसि**—तू कभी भी नहीं आता है।

इकारान्त पुंल्लिग शब्द

भूपतिः—राजा।
क्षेत्रपतिः—खेत का मालिक।
प्राणपतिः—प्राणों का स्वामी।
मारुतिः—हनुमान्।
यतिः—तपस्वी।
सेनापतिः—फौज का बड़ा अफसर।
दुर्मतिः—बुरी बुद्धि वाला।
ऋषिः—ऋषि।
नृपतिः—राजा।
प्रजापतिः—ईश्वर, राजा।
सुमतिः—उत्तम बुद्धिवाला
मुरारिः—विष्णु।
वह्निः—आग।
मुनिः—तपस्वी।
राशिः—ढेर।

विधिः—दैव, ब्रह्मा, ईश्वर।
वाल्मीकिः—रामायण के लेखक मुनि का नाम।

ये सब शब्द पूर्वोक्त 'रवि' शब्द के समान ही चलते हैं। नमूने के लिए 'नृपति' और 'मुनि' के रूप देते हैं।

१. **नृपतिः**—राजा।	१. **मुनिः**—मुनि।
२. **नृपतिम्**—राजा को।	२. **मुनिम्**—मुनि को।
३. **नृपतिना**—राजा ने, द्वारा।	३. **मुनिना**—मुनि ने, द्वारा।
४. **नृपतये**—राजा के लिए।	४. **मुनये**—मुनि के लिए।
५. **नृपतेः**—राजा से।	५. **मुनेः**—मुनि से।
६. **नृपतेः**—राजा का।	३. **मुनेः**—मुनि का।
७. **नृपतौ**—राजा में।	७. **मुनौ**—मुनि में।
सं० **हे नृपते**—हे राजन्।	सं० **हे मुने**—हे मुनि।

पाठकों को चाहिए कि वे इस प्रकार अन्यान्य शब्दों के रूप बनाएं और विभक्ति द्वारा उनके अर्थ कैसे होते हैं, यह देखें।

(१) किं क्षेत्रपतिना तव उत्तरीयं न दत्तम्? (२) तस्य गृहे अद्य यतिः आगतः। (३) दुर्मतिना सह मित्रतां न कुरु। (४) सुमतिना सह मित्रतां कुरु। (५) सेनापतिः सैन्यं पश्यति। (६) पश्य, कथं सः मुनिना सह गच्छति। (७) वाल्मीकिना रामायणं रचितम्। (८) रामायणे रामचन्द्रस्य चरितम्[1] अस्ति। (९) तव बन्धुः रात्रौ एव उष्णं जलं पिबति। (१०) उष्णं जलं तस्मै इदानीम् एव देहि। (११) अत्र रक्तं दीपं शीघ्रम् आनय। (१२) नृपतिः अद्य भ्रमणाय गमिष्यति। (१३) त्वम् इदानीं यत्र कुत्र अपि गच्छ। (१४) विष्णु-

---

१. चरितम्—कथा।

मित्रः उद्यानं गत्वा पश्चात् गृहं गमिष्यति। (१५) यत्र जगदीशचन्द्रः गमिष्यति तत्र विष्णुदत्तः अपि गमिष्यति एव। (१६) अहम् ओदनं नैव भक्षयिष्यामि। (१७) सः दुग्धम् एव पिबति, कदापि अन्नं नैव भक्षयति। (१८) सः व्यर्थं तत्र गतः, तस्य पुस्तकं तत्र नास्ति।

पाठ १३

शब्द

मन्दः—सुस्त।
मूकः—गूंगा।
उपरि—ऊपर।
अधः—नीचे।
मध्ये—बीच में।
शनैः—आहिस्ता, धीरे-धीरे।
वदामि—बोलता हूं।
वदसि—(तू) बोलता है।
वदति—(वह) बोलता है।
डिण्डिमः—ढोल।
अगदः—दवाई।
उच्चैः—ऊंचा।
नीचैः—धीमे।
वक्तुम्—बोलने के लिए।
उक्त्वा—बोलकर।
वदिष्यामि—बोलूंगा।
वदिष्यसि—तू बोलेगा।
वदिष्यति—वह बोलेगा।

वाक्य

१. त्वम् उपरि गच्छ, अहम् अधः गमिष्यामि—तू ऊपर जा, मैं नीचे जाऊंगा।
२. न, अहम् उपरि तिष्ठामि, त्वम् अधः गच्छ—नहीं, मैं ऊपर ठहरता हूं, तू नीचे जा।
३. भो मित्र! इदानीं शनैः अधः गच्छ—हे मित्र! अब धीरे-धीरे नीचे जा।

४. सः सदा तत्र तिष्ठति उच्चैः वदति च—वह हमेशा वहां बैठता है और ऊंचा बोलता है।
५. त्वं किं सर्वदा नीचैः एव वदसि—तू क्या हमेशा धीमे ही बोलता है।
६. अहं सदा नीचैः एव वक्तुम् इच्छामि—मैं हमेशा धीमे ही बोलना चाहता हूं।
७. भो मित्र ! त्वं मध्ये किमर्थं तिष्ठसि—हे मित्र ! तू बीच में किस लिए ठहरता है ?
८. अहं जलं पीत्वा रात्रौ उपरि गमिष्यामि—मैं जल पीकर रात्रि में ऊपर जाऊंगा।
९. अहं रात्रौ नैव जलं पिबामि—मैं रात्रि में जल नहीं पीता।
१०. किं त्वं रात्रौ उष्णं मिष्टं च दुग्धं न पास्यसि—क्या तू रात्रि में गरम और मीठा दूध नहीं पिएगा ?
११. कुतः न पास्यामि एव—क्यों नहीं, पीऊंगा ही।
१२. उत्तिष्ठः इदानीं तस्मै फलं देहि—उठ, अब उसको फल दे।
१३. फल स्वादु नास्ति, कथं दास्यामि—फल मीठा नहीं है, कैसे दूंगा।
१४. यथा अस्ति तथा एव देहि—जैसा है वैसा ही दे।

शब्द

इति—ऐसा।
वा—अथवा, या।
अथवा—या।
किंवा—या।
अवश्यम्—अवश्य, ज़रूर।
पर्यन्तम्—तक।
क्रीडामि—खेलता हूं।
क्रीडसि—तू खेलता है।
क्रीडति—वह खेलता है।
सुष्ठु—ठीक, अच्छा।

वरम्—श्रेष्ठ, अच्छा।
क्रीडिष्यति—खेलेगा।
क्रीडिष्यामि—मैं खेलूंगा।
कन्दुकः—गेंद।
क्रीडिष्यसि—तू खेलेगा।
मदीयम्—मेरा।

वाक्य

१. देवदत्तः तत्र क्रीडति—देवदत्त वहां खेलता है।

२. सः तत्र सायङ्काले गत्वा क्रीडिष्यति—वह वहां शाम को जाकर खेलेगा।

३. सः तत्र प्रातः गमिष्यति न वा—वह वहां सवेरे जाएगा या नहीं?

४. अहं तत्र सायङ्कालपर्यन्तं स्थास्यामि—मैं वहां शाम तक ठहरूंगा।

५. त्वम् अवश्यम् आगच्छ—तू अवश्य आ।

६. सः कन्दुकेन सुष्ठु क्रीडति—वह गेंद से अच्छा खेलता है।

७. सः न तथा सुष्ठु क्रीडति यथा विष्णुमित्रः—वह वैसा अच्छा नहीं खेलता जैसा विष्णुमित्र।

८. सत्यम् अस्ति—सत्य है।

९. यथा त्वं वदसि तथा एव अस्ति—जैसा तू कहता है वैसा ही है।

१०. रात्रौ जलम् उपरि नयसि न वा—तू रात्रि में जल ऊपर ले जाता है या नहीं।

११. अवश्यं नेष्यामि, सत्यं वदामि—अवश्य ले जाऊंगा, सत्य बोलता हूं।

१२. यदि त्वं सत्यं वदसि नेष्यसि एव—अगर तू सच बोलता है तो ले जाएगा ही।

१३. वरं यथा, वदसि तथा कुरु—अच्छा, जैसा बोलता है, वैसा कर।

१४. इदानीं भोजनं कर्तुम् इच्छामि, अन्नम् आनय—अब भोजन करना चाहता हूं, अन्न ले आ।

१५. अन्नं नास्ति, मोदकम् अस्ति—अन्न नहीं है, लड्डू है।

यहां तक पाठक जान चुके हैं कि अकारान्त तथा इकारान्त पुंल्लिग शब्द कैसे चलते हैं। अब आपको उकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप बनाना सीखना है। आशा है कि पूर्व का ज्ञान न भूलकर पाठक आगे पढ़ेंगे।

उकारान्त पुंल्लिग 'भानु' शब्द के रूप

१. प्रथमा	भानुः	भानु (सूर्य)
२. द्वितीया	भानुम्	भानु को
३. तृतीया	भानुना	भानु ने, द्वारा
४. चतुर्थी	भानवे	भानु के लिए
५. पंचमी	भानोः	भानु से
६. षष्ठी	"	भानु का
७. सप्तमी	भानौ	भानु में, पर
सम्बोधन	हे भानो	हे भानु

इकारान्त तथा उकारान्त पुंल्लिग शब्दों के पंचमी तथा षष्ठी के एकवचन के रूप एक जैसे होते हैं। पाठकों ने यह बात 'रवि, नृपति, मुनि' इन शब्दों में पृ० ५४ पर देखी होगी तथा 'भानु' शब्द के रूपों में इस पाठ में स्पष्ट हो गई होगी। पंचमी तथा षष्ठी के रूप समान होते हैं, इस कारण षष्ठी के स्थान पर (,,) ऐसा चिह्न दिया है जिसका मतलब यह है कि यहां का रूप पूर्व की विभक्ति के समान ही है। आशा है कि पाठक इस विशेषता को ध्यान में रखेंगे।

उकारान्त पुंल्लिंग शब्द

भानुः—सूर्य । गुरुः—अध्यापक ।
कारुः—कारीगर । विष्णुः—विष्णुदेव ।
अंशुः—किरण । तरुः—पेड़ ।
सिन्धुः—समुद्र, नदी । मरुः—रेतीला देश, रेगिस्तान, मारवाड़ ।
शम्भुः—शिवजी । शत्रुः—दुश्मन ।
जिष्णुः—विजयशील । मृत्युः—मौत ।
क्रतुः—यज्ञ । बाहुः—भुजा ।
साधुः—सन्त, महात्मा । लड्डूः—लड्डू, पेड़ा ।
शङ्कुः—कोनेवाला पदार्थ । शान्तनुः—भीष्म पितामह के पिता ।
स्नायुः—पुट्ठा, रग ।

ये सब शब्द पूर्वोक्त 'भानु' शब्द के समान ही चलते हैं

वाक्य

१. गुरुः पाठशालां गच्छति—अध्यापक पाठशाला को जाता है ।
२. भानोः अंशुं पश्य—सूर्य की किरण देख ।
३. सिन्धोः जलम् आनयति—नदी से जल लाता है ।
४. मरौ देशे जलं नास्ति—रेतीले देश में जल नहीं है ।
५. मृत्यवे किं दास्यसि—मौत के लिए क्या दोगे ?
६. शत्रुं पश्यसि किम्—दुश्मन को देखते हो क्या ?
७. शान्तनुः राजा आसीत्—शान्तनु राजा था ।
८. शान्तनुना क्रतुः समाप्तः—शान्तनु ने यज्ञ समाप्त किया ।
९. शम्भुना राक्षसो हतः—शिवजी ने राक्षस मारा ।

१०. साधुना उपदेशः कृतः—साधु ने उपदेश किया।
११. तरोः फलं पतितम्—पेड़ से फल गिरा।

अब थोड़े-से ऐसे वाक्य देते हैं कि जिन्हें पाठक स्वयं समझ सकते हैं—

सः तं मार्गं पृच्छति। मृगः मृगेण सह गच्छति। मनुष्यः मनुष्येण सह न गच्छति। सदा मूर्खः मूर्खेण सह वदति। वानरः वने धावति। विष्णुः सर्वत्र अस्ति। ईश्वरः सदा सर्वं पश्यति। नृपः रक्षकं वदति। सः नगरात् धनम् आनयति। वशिष्ठस्य चरणं पश्य। बालकाय मोदकं देहि। ब्राह्मणाय धनं देहि। तस्मै जलं देहि। शम्भुः राक्षसं हन्ति। उद्याने तरुर्(:) अस्ति। शत्रुः ग्रामे नास्ति। कारुः गृहं करोति। भानुः प्रकाशं ददाति[1]। सः कदापि न तुष्यति[2]। पुष्पम् आनयति। पुष्पं जले पतितम्। तस्य पुत्रः कूपे पतितः। तस्य बाहुः शोभनः[3] अस्ति। सः कन्दुकेन क्रीडति। तत्र गत्वा तं पश्य। बालकः अधुना न आगतः। त्वं गच्छ भोजनं च कुरु।

भाषा के निम्न वाक्यों के संस्कृत-वाक्य बनाइए—

१. वह आंख से देखता है। २. कैसे वह बालक गया? ३. बालक धूप में गया, उसको यहां ले आ। ४. अब राजा कहां है? ५. नौकर ने हाथ में सीटी ली। ६. गांव में शत्रु हैं। ७. वह फूल लाता है। ८. वहां जाकर देख। ९. वह दुर्मति के साथ मित्रता करता है। १०. जहां राम जाएगा वहां कृष्ण भी जाएगा। जहां मैं जाऊंगा वहां तू जा।

---

१. ददाति—देता है। २. तुष्यति—खुश होता है। ३. शोभनः—उत्तम।

पाठ १४

शब्द

श्रमः—कष्ट ।
कुतः—किसलिए ।
ताडयति—वह पीटता है ।
ताडयामि—पीटता हूं ।
दुर्बलः—बलहीन ।
परिश्रमः—मेहनत ।
यद्—जो कि ।
ताडयिष्यति—पीटेगा ।
ताडयिष्यामि—पीटूंगा ।
अल्पम्—थोड़ा ।
अतः—इसलिए ।
यतः—जिसलिए ।
ताडयसि—तू पीटता है ।
ज्वरितः—ज्वर से पीड़ित ।
अतीव—बहुत ।
एतद्—यह ।
तद्—वह ।
ताडयिष्यसि—पीटेगा ।
केवलम्—केवल, सिर्फ ।
नीरोगः—स्वस्थ, तन्दुरुस्त ।

वाक्य

१. यज्ञदत्तः किमर्थं न पठति—यज्ञदत्त क्यों नहीं पढ़ता ?
२. सः ज्वरेण पीडितः अस्ति, अतः न पठति—वह ज्वर से पीड़ित है, इस कारण नहीं पढ़ता ।
३. किम् एतत् सत्यमस्ति यत् सः ज्वरेण पीडितः अस्ति—क्या यह सत्य है कि वह ज्वर से पीड़ित है ?
४. अथ किं सः न केवलं ज्वरितः अस्ति, परन्तु सः अतीव दुर्बलः अपि अस्ति—और क्या, वह न केवल ज्वरग्रस्त है, परन्तु वह बहुत दुर्बल भी है ।
५. किं सः अन्नं भक्षयति न वा ? कथय—क्या वह अन्न खाता है या नहीं ? कह ।

६. न भक्षयति परन्तु अल्पम् अल्पं दुग्धं पिबति—नहीं खाता, परन्तु थोड़ा-थोड़ा दूध पीता है।
७. कदा सः पुनः नीरोगः भविष्यति—कब वह फिर स्वस्थ होगा ?
८. एतद् अहं न जानामि—यह मैं नहीं जानता।
९. सः किं किं वदति—वह क्या-क्या बोलता है ?
१०. सः किमपि न वदति—वह कुछ भी नहीं बोलता।
११. यदा सः पुनः नीरोगः भविष्यति—जब वह फिर नीरोग होगा।
१२. तदा सः अत्र आगमिष्यति एव—तब वह यहां आएगा ही।
१३. पाठं च पठिष्यति—और पाठ पढ़ेगा।

शब्द

स्वपिति—वह सोता है।
स्वपिमि—सोता हूं।
दशघण्टासमये—दस बजे।
एषः—यह।
इतिहासः—इतिहास।
खादसि—तू खाता है।
भवति—वह होता है।
भवामि—होता हूं।
भृत्यः—सेवक।
स्वपिषि—तू सोता है।
दश-वादने—दस बजे।
तदानीम्—उसी समय।
शोभनः—उत्तम।
खादति—वह खाता है।
खादामि—मैं खाता हूं।
भवसि—तू होता है।
दरिद्रः—निर्धन।
मेरुः—मेरु पर्वत।

वाक्य

१. त्वं रात्रौ कदा स्वपिषि—तू रात्रि में कब सोता है ?
२. अहं दशघण्टासमये स्वपिमि—मैं दस बजे सोता हूं।

३. परन्तु विश्वनाथः तदानीं न स्वपिति—परन्तु विश्वनाथ उस समय नहीं सोता ।

४. यदि सः न स्वपिति तर्हि तदा सः किं करोति—अगर वह नहीं सोता तब वह क्या करता है ?

५. सः तदानीं पुस्तकं पठति अतीव कोलाहलं च करोति—तब वह पुस्तक पढ़ता है और बहुत शोर मचाता है ।

६. सः किमर्थं कोलाहलं करोति—वह क्यों कोलाहल करता है ?

७. सः उच्चैः पठति अतः कोलाहलः भवति—वह ऊंचे से पढ़ता है इसलिए शोर होता ।

८. कोलाहलं न कुरु इति त्वं तं वद—शोर न कर, तू उसको कह ।

९. सः प्रातः किं पिबति मध्याह्ने च किं भक्षयति—वह सवेरे क्या पीता है और दोपहर में क्या खाता है ?

१०. सः प्रातःकाले दुग्धं पिबति मध्याह्ने च स्वादु भोजनं खादति—वह सवेरे दूध पीता है और दोपहर को स्वादिष्ठ भोजन खाता है?

११. सः इदानीं तं किमर्थं ताडयति—वह अब उसको क्यों पीटता है ?

१२. यतः सः न लिखति—क्योंकि वह नहीं लिखता ।

१३. एषः शोभनः समयः, भ्रमणाय गच्छामि—यह उत्तम समय है, घूमने के लिए जाता हूं ।

१४. सः दरिद्रः अस्ति, अतः द्रव्यं न ददाति—वह निर्धन है, इस लिए पैसा नहीं देता है ।

उकारान्त शब्दों के रूप बनाने का प्रकार पिछले पाठ में आ चुका है । अब ऋकारान्त शब्दों के रूप इस पाठ में बताएंगे ।

ऋकारान्त पुंल्लिग 'धातृ' शब्द

१. प्रथमा	धाता	ब्रह्मा
२. द्वितीया	धातारम्	ब्रह्मा को
३. तृतीया	धात्रा	ब्रह्मा ने(द्वारा)
४. चतुर्थी	धात्रे	ब्रह्मा के लिए
५. पंचमी	धातुः	ब्रह्मा से
६. षष्ठी	धातुः	ब्रह्मा का
७. सप्तमी	धातरि	ब्रह्मा में, पर
संबोधन	हे धातः !	हे ब्रह्मा

ऋकारान्त पुंल्लिग शब्द

धातृ—ब्रह्मा, विश्वकर्ता, उत्पन्नकर्ता।

कर्तृ—बनानेवाला।
शास्तृ—शासन करनेवाला।
गातृ—गानेवाला।
गन्तृ—जानेवाला।
वक्तृ—बोलनेवाला।
श्रोतृ—सुननेवाला।
स्रष्टृ—उत्पन्न करनेवाला।
द्वेष्टृ—द्वेष करनेवाला।
नेतृ—ले जानेवाला।
उद्गातृ—गानेवाला।
नप्तृ—पोता।
दातृ—देनेवाला।
द्रष्टृ—देखनेवाला।
भोक्तृ—खानेवाला।
पातृ—रक्षा करनेवाला।
ध्यातृ—ध्यान करनेवाला।

वाक्य

१. धाता सकलं विश्वं रचयति—ब्रह्मा सब विश्व को रचता है।
२. दातुः इच्छा कीदृशी अस्ति—दाता की इच्छा कैसी है ?
३. भोक्त्रे मोदकं देहि—खानेवाले को लड्डू दे।

४. नप्त्रा भोजनं न कृतम्—पोते ने भोजन नहीं किया।
५. मम द्वेष्टारं पश्य—मेरे द्वेष करनेवाले को देख।
६. ध्याता ईश्वरं ध्याति—ध्यान करनेवाला ईश्वर का ध्यान करता है।
७. मूषकः धान्यं खादति—चूहा धान खाता है।
८. वक्ता सत्यं वदति—बोलनेवाला सच बोलता है।
९. भुवनस्य कर्तारम् ईश्वरं कुत्र पश्यसि—(तू) जगत् के कर्ता ईश्वर को कहां देखता है।
१०. अहं भुवनस्य कर्तारम् ईश्वरं वन्दे—मैं जगत् कर्ता ईश्वर को नमस्कार करता हूं।

(१) त्वं तं ग्रामं गच्छसि ? (२) त्वं तं ग्रामं कदा गमिष्यसि ? (३) त्वं तं ग्रामं किमर्थं न गच्छसि ? (४) त्वं तं ग्रामं गत्वा किम् आनेष्यसि ? (५) त्वं तं बहुशोभनं ग्रामं गत्वा शीघ्रम् अत्र आगच्छ। (६) त्वं तं शोभनम् उदयपुरनामकं नगरं गत्वा तं मित्रं दृष्ट्वा शीघ्रम् एव अत्र आगच्छ। (७) हे धातः ! त्वं भुवनस्य कर्त्ता असि, त्वया एव सर्वम् एतत् निर्मितम्। (८) ब्राह्मणाय धनं दुग्धं च देहि। (९) ब्राह्मणः अत्र एव अस्ति। (१०) तम् अत्र आनय।

पाठ १५

शब्द

साधुः—साधु, फकीर।
धावति—वह दौड़ता है।
धावामि—दौड़ता हूं।
कर्दमें—कीचड़ में।
दुकूलम्—रेशमी वस्त्र।
वेतनम्—तनखाह।
धावसि—तू दौड़ता है।
पतितः—गिर गया।
स्खलितः—फिसल गया।
अञ्जनम्—सुरमा, अंजन।

यज्ञः—यज्ञ ।
हससि—तू हंसता है ।
वृद्धः—बूढ़ा ।
बालः—लड़का ।
हसति—वह हंसता है ।
हसामि—मैं हंसता हूं ।
युवा—जवान ।

वाक्य

१. सः किमर्थं हसति—वह क्यों हंसता है ?

२. यतः विष्णुदत्तः तत्र कर्दमे पतितः—क्योंकि विष्णुदत्त वहां कीचड़ में गिर गया है ।

३. कथं सः कर्दमे पतितः—कैसे वह कीचड़ में गिर पड़ा ?

४. सः पूर्वं स्खलितः पश्चात् पतितः—वह पहले फिसला और पीछे गिर गया ।

५. त्वं तथा धावसि किम्, यथा अहं धावामि—तू वैसा दौड़ता है क्या जैसे मैं दौड़ता हूं ।

६. त्वम् अपि तथा न लिखसि यथा विष्णुशर्मा लिखति—तू भी वैसा नहीं लिखता जैसा विष्णुशर्मा लिखता है ।

७. यदा त्वं पठसि तदा अहं क्रीडामि—जब तू पढ़ता है तब मैं खेलता हूं ।

८. सः कन्दुकेन वरं क्रीडति—वह गेंद से अच्छा खेलता है ।

९. यदा सः कन्दुकेन क्रीडति तदा सः धावति—जब वह गेंद से खेलता है तब वह दौड़ता है ।

१०. यदा सः धावति तदा अहं हसामि—जब वह दौड़ता है तब मैं हंसता हूं ।

११. मह्यम् आम्रं देहि—मुझे आम दें ।

१२. किम् अद्य त्वम् आम्रं भक्षयिष्यसि—क्या तू आज आम खाएगा ?
१३. अद्य किम् अस्ति—आज क्या है ?
१४. अद्य उष्णं दिनम् अस्ति अतः आम्र न भक्षय—आज गर्म दिन है इसलिये आम न खा।
१५. तर्हि शीतं दुग्धं देहि—तो ठण्डा दूध दे।
१६. स्वीकुरु, अत्र शीतं मिष्टं च दुग्धम् अस्ति—ले, यहां ठंडा और मीठा दूध है।

शब्द

खनति—(वह) खोदता है।
खनसि—(तू) खोदता है।
खनामि—खोदता हूं।
रक्षति—वह रक्षा करता है।
रक्षसि—तू रक्षा करता है।
रक्षामि—मैं रक्षा करता हूं।
भूमिम्—ज़मीन को।
व्यर्थम्—व्यर्थ।
गाम्—गाय को।
गानम्—गाना।
स्वकीया—अपनी।
परकीया—दूसरे की।
कूपम्—कूएं को।
नर्तनम्—नाचना।

वाक्य

१. तस्य पिता अतीव वृद्धः अस्ति—उसका पिता बहुत ही बूढ़ा है।
२. परन्तु तस्य भ्राता युवा अस्ति—परन्तु उसका भाई जवान है।
३. सः भूमिम् अद्य किमर्थं खनति—वह भूमि को आज किसलिए खोदता है।
४. सः अद्य व्यर्थं खनति—वह आज व्यर्थ खोदता है।
५. सः स्वकीयां भूमिं रक्षति न वा—वह अपनी भूमि की रक्षा करता है या नहीं ?

६. सः स्वकीयां गाम् आनयति—वह अपनी गाय को लाता है।

७. सः गृहं रक्षति किम्—वह घर की रक्षा करता है क्या ?

८. अथ किम् ! सः न केवल गृहं रक्षति—और क्या ! वह न केवल घर की रक्षा करता है।

९. परन्तु उद्यानम् अपि वरं रक्षति—परन्तु बाग की भी अच्छी तरह रक्षा करता है।

१०. सः तथा न रक्षति यथा देवप्रियः—वह वैसी रक्षा नहीं करता जैसी देवप्रिय।

११. देवप्रियः अतीव बालः अस्ति—देवप्रिय अत्यन्त बालक (छोटा) है।

१२. परन्तु भद्रसेनः युवा अस्ति—परन्तु भद्रसेन जवान है।

१३. अतः सः प्रातः काले सुष्ठु धावति—इस कारण वह प्रायः अच्छा दौड़ता है।

१४. अहं पश्यामि, देवदत्तः खनति इति—मैं देखता हूं कि देवदत्त खोदता है।

१५. देवदत्तः कूपं खनति—देवदत्त कुआं खोदता है।

१६. पश्य इदानीं सः तत्र कथं खनति—देख, अब वह वहां कैसे खोदता है।

१७. सः जलपानार्थं कूपं खनति—वह पानी पीने के लिए कुआं खोदता है।

पूर्व पाठ में ऋकारान्त पुंलिंग शब्दों को चलाने का प्रकार बताया है। इस पाठ में दुबारा ऋकारान्त पुंलिंग शब्दों का रूप बताते हैं।

ऋकारान्त पुंल्लिंग 'पालयितृ' शब्द

१. प्रथमा	पालयिता	रक्षक
२. द्वितीया	पालयितारम्	रक्षक को
३. तृतीया	पालयित्रा	(रक्षक ने द्वारा)
४. चतुर्थी	पालयित्रे	रक्षक के लिए, को
५. पंचमी	पालयितुः	रक्षक से
६. षष्ठी	"	रक्षक का
७. सप्तमी	पालयितरि	रक्षक में, पर
सम्बोधन	(हे) पालयितः	हे रक्षक

ऋकारान्त पुंल्लिंग शब्द

अत्तृ—खानेवाला, भक्षक। ज्ञातृ—जाननेवाला।
विज्ञातृ—जाननेवाला। अध्येतृ—पढ़नेवाला।
निहन्तृ—हनन करनेवाला। विक्रेतृ—बेचनेवाला।
क्रेतृ—खरीदनेवाला। अवज्ञातृ—अपमान करनेवाला।
भर्तृ—पोषण करनेवाला, पति। भेतृ—भेद करनेवाला।
हर्तृ—हरण करनेवाला। चोरयितृ—चोरी करनेवाला।
स्तोतृ—स्तुति करनेवाला। संस्कर्तृ—संस्कार करने वाला।
सत्कर्तृ—सत्कार करने वाला। संहर्तृ—संहार करनेवाला।

वाक्य

१. अत्ता अन्नम् अत्ति—भक्षक अन्न खाता है।
२. अत्रे अन्नं देहि—भक्षक को अन्न दे।
३. ज्ञात्रा ज्ञानं ज्ञातम्—ज्ञानी ने ज्ञान जाना।
४. ज्ञात्रे नमः कुरु—ज्ञानी के लिए नमस्कार कर।

५. निहन्त्रा व्याघ्रः हतः—हनन करनेवाले ने शेर मारा।
६. भर्तुः सेवा कर्त्तव्या—पति की सेवा करनी चाहिए।
७. स्तोतुः स्तोत्रं शृणु—स्तुति करनेवाले की स्तुति सुन।
८. धान्यस्य विक्रेता कुत्र गतः—धान्य को बेचनेवाला कहां गया ?
९. अध्येत्रे पुस्तकं देहि—पढ़नेवाले को पुस्तक दे।
१०. अश्वस्य क्रेता अत्र आगतः—घोड़े का खरीदार यहां आया।
११. अश्वस्य चोरयिता नगरे अस्ति—घोड़े को चुरानेवाला शहर में है।
१२. अन्नस्य संस्कर्ता मम गृहे अन्नं संस्करोति—अन्न का संस्कार करनेवाला मेरे घर में अन्न को ठीक करता है।
१३. व्याकरणस्य अध्येता अद्य न आगतः—व्याकरण का अध्ययन करनेवाला आज नहीं आया।

शब्द

धूमः—धुआं।
यामि—जाता हूं।
वससि—(तू) रहता है।
यासि—(तू) जाता है।
उदकम्—जल।
शास्त्रम्—शास्त्र।
वसति—(वह) रहता है।
वसामि—रहता हूं।
याति—(वह) जाता है।
गुणः—गुण।

संस्कृत वाक्य

यत्र धूमः तत्र अग्निः अस्ति। अहं तं ग्रामं गच्छामि, यत्र वेदस्य ज्ञाता वसति। तस्मै गुरवे नमः। नृपतिः शास्त्रस्य ज्ञात्रे द्रव्यं ददाति। यस्य बुद्धिः बलम् अपि तस्य एव। शत्रुं भूपतिः जयति। अहं सायं नगराद् बहिः गच्छामि। तस्य हस्तात् माला पतिता। सः एव पर्वतः

यत्र वसिष्ठः मुनिः वसति। व्याघ्रात् भयं भवति। गुरोः ज्ञानं भवति। मृगः वनात् वनं गच्छति।

भाषा के निम्न वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) ऊंट ऊंचे न बोल। (२) तू उस गांव को जा। (३) उसका धन दे। (४) मुझे अन्न दे। (५) मैं ऊपर ठहरता हूं। (६) मैं गर्म जल कभी नहीं पीता। (७) उठ, मेरे गुरु के लिए फल दे। (८) अब तू खेल। (९) आज नहीं खेलूंगा। (१०) तू सच बोलता है।

पाठ १६

शब्द

यस्य—जिसका।
अस्य—इसका।
दूरम्—दूर।
सर्वस्य सबका।
देवस्य—ईश्वर का।
पादत्राणम्—जूता, बूट।
वैद्यः—वैद्य डाक्टर।
कस्य—किसका।
क्व—कहां।
नियमः—नियम।
मित्रस्य—मित्र का।
नितान्तम्—बिल्कुल।
मिष्टान्नम्—मिठाई।

वाक्य

१. **यस्य पुस्तकम् अस्ति तस्मै देहि**—जिसकी पुस्तक है उसी को दे।
२. **एतत् कस्य गृहम् अस्ति**—यह किसका घर है।
३. **एतत् मम मित्रस्य गृहम् अस्ति**—यह मेरे मित्र का घर है।
४. **त्वं कथं जानासि**—तू कैसे जानता है?

५. यद् अहं वदामि तत् सत्यम् अस्ति—जो मैं बोलता हूं वह सच है।
६. तस्य माता किं वदति—उसकी माता क्या कहती है ?
७. मम पादत्राणम् आनय—मेरा जूता ले आ।
८. कुत्र अस्ति तव पादत्राणम्—कहां है तेरा जूता ?
९. तत्र अस्ति, तत् पश्य—वहां है, वह देख।
१०. सः दूरं गच्छति किम्—वह दूर जाता है क्या ?
११. सः मिष्टान्नं भक्षयति—वह मिठाई खाता है।
१२. अस्य लेखनी कुत्र अस्ति—इसकी कलम कहां है ?
१३. त्वम् इदानीं किं लिखसि—तू अब क्या लिखता है ?
१४. सः रक्तं पुष्पं पश्यति—वह लाल फूल देखता है।

शब्द

करपट्टिका—रोटी, फुलका।
कुण्डलिनी—जलेबी।
क्वथिका—कढ़ी।
गृह्णामि—लेता हूं।
गृह्णाति—वह लेता है।
नवनीतम्—मक्खन।
दुग्धम्—दूध।
गृहाण—ले।
लिख—लिख
तक्रम्—छाछ, लस्सी (दही की)
दधि—दही।
व्यञ्जनम्—सब्जी, भाजी, तरकारी
गृह्णासि—तू लेता है।
दैवम्—भाग्य।
घृतम्—घी।
सूपम्—दाल।
वद—बोल, कह।
दुर्दैवम्—दुर्भाग्य, आफत।

वाक्य

१. मह्यम् इदानीम् एव करपट्टिकां देहि—मुझे अभी रोटी दे।
२. त्वं प्रातः तक्रं पिबसि किम्—तू सवेरे लस्सी पीता है क्या ?

३. सः प्रातः कुण्डलिनीं भक्षयति—वह प्रातः जलेबी खाता है।

४. मह्यं क्वथिकां ददासि किम्—मुझे कढ़ी देता है क्या ?

५. सः भक्षणार्थं व्यञ्जनम् इच्छति—वह खाने के लिए सब्जी चाहता है।

६. एतत् नवनीतं गृहाण—यह मक्खन ले।

७ घृतं तत्र किमर्थं नयसि ? वद—घी वहां किसलिए ले जाता है ? कह।

८. अहं भक्षणार्थं घृतं दधि च नयामि—मैं खाने के लिए घी और दही ले जाता हूं।

९. यदि त्वं सूपम् इच्छसि तर्हि गृहाण—अगर तू दाल चाहता है तो ले।

१०. सः बहु व्यञ्जनं भक्षयति, तत् न वरम्—वह बहुत सब्जी खाता है, यह अच्छा नहीं।

११. वद, त्वं कुत्र गच्छसि – बोल, तू कहां जाता है ?

पूर्व पाठों में ऋकारान्त पुंलिंग शब्दों के रूप बनाने का प्रकार दिया है। कई ऋकारान्त शब्दों के रूप भिन्न-भिन्न प्रकार से भी होते हैं। विशेष भिन्नता नहीं होती है, केवल एक रूप में भेद होता है—

ऋकारान्त पुंलिंग 'पितृ' शब्द

१. प्रथमा	पिता	पिता
२. द्वितीया	पितरम्	पिता को
३. तृतीया	पित्रा	पिता ने
४. चतुर्थी	पित्रे	पिता के लिए, को

५. पंचमी	पितुः	पिता से
६. षष्ठी	,,	पिता का
७. सप्तमी	पितरि	पिता में, पर
सम्बोधन	(हे) पितः	हे पिता

पिता शब्द में और धाता शब्द में इतना ही भेद है कि धाता शब्द का द्वितीया का एकवचन धातारम्' हुआ है और पिता शब्द का 'पितरम्' हुआ है, 'पितारम् नहीं हुआ। यही विशेषता निम्न शब्दों में हुआ करती है। पाठकों को उचित है कि इस बात को स्मरण रखें।

'पितृ' शब्द के समान चलनेवाले ऋकारान्त पुंल्लिंग शब्द

भ्रातृ—भाई। जामातृ—दामाद। नृ—नर।
देवृ—देवर। शंस्तृ—स्तुति करने हारा। सव्येष्टृ—गाड़ीवान।

वाक्य

१. पिता पुत्रं पश्यति—पिता पुत्र को देखता है।
२. पुत्रः पितरं पश्यति—लड़का पिता को देखता है।
३. पित्रा पुत्राय वस्त्रं दत्तम्—पिता ने पुत्र को वस्त्र दिया।
४. भ्राता भ्रातरं द्वेष्टि—भाई भाई से द्वेष करता है।
५. भ्रात्रा धनं दत्तम्—भाई ने धन दिया।
६. जामात्रे वस्त्रं देहि—दामाद के लिए वस्त्र दे।
७. पित्रे नमः कुरु—पिता को नमस्कार कर।

इस प्रकार पाठक कई वाक्य बना सकते हैं। उक्त वाक्यों के निषेध अर्थ के वाक्य—

१. पिता पुत्रं न पश्यति। २. पुत्रः पितरं न पश्यति। ३. पित्रा पुत्राय वस्त्रं न दत्तम्। ४. भ्राता भ्रातरं न द्वेष्टि। ५. भ्रात्रा धनं न

दत्तम् । ६. जामात्रे वस्त्रं न देहि ।

निम्न वाक्यों की संस्कृत बनाइए —

१. वह गांव को जाता है । २. जहां तू जाता है, वहां में जाता हूं । ३. क्या तू सदा बाग में जाता है ? ४. तू कहां जाता है ? ५. वह दिन में नगर को जाता है और रात में घर को जाता है । ६. हरिश्चन्द्र फल खाता है ।

निम्न वाक्यों के भाषा वाक्य बनाइए—

१. अहम् इदानीं फलं नैव भक्षयामि । २. हरिश्चन्द्रः पुस्तकं तत्र नयति । ३. किमर्थं त्वम् अपूपं तत्र नयसि । ४. अहं गृहं गत्वा निज-धौतं वस्त्रम् आनेष्यामि । ५. ब्रूहि यज्ञप्रियः कुत्र अस्ति ?

पाठ १७

शब्द

शक्तिः सामर्थ्य ।
शक्यः—मुमकिन ।
शक्नोमि – सकता हूं ।
शक्नोषि —(तू) सकता है ।
शक्नोति—(वह) सकता है ।
वक्तुम्—बोलने के लिए ।
स्वभाषाम्—अपनी भाषा को ।
नारङ्गः—संतरा का वृक्ष ।
चन्द्रः—चांद ।
संस्कृतम्—संस्कृत भाषा ।
आंग्लभाषा —अंग्रेजी भाषा ।
देशभाषा—देशी भाषा ।
नवीनम्—नवीन, नई ।
पुराणम् – पुराना ।
मातृभाषा —मादरी ज़बान ।
आसनम्—आसन ।
नारङ्गः—संतरा (फल)

वाक्य

१. त्वं संस्कृतं वक्तुं शक्नोषि—तू संस्कृत बोल सकता है ?

२. नहि नहि, अहम् आंग्लभाषां वक्तुं शक्नोमि—नहीं नहीं, मैं अंग्रेजी बोल सकता हूं।
३. किम् एतत् वरम् अस्ति यत् त्वं स्वभाषां वक्तुं न शक्नोषि—क्या यह अच्छा है कि तू अपनी भाषा नहीं बोल सकता ?
४. कः एवं वदति—कौन ऐसा कहता है ?
५. तर्हि संस्कृतं किं न पठसि—तो संस्कृत क्यों नहीं पढ़ता ?
६. अहं पठामि एव—मैं पढ़ता ही हूं।
७. त्वं तत्र गन्तुं शक्नोषि किम्—क्या तू वहां जा सकता है ?
८. सः क्रीडितुं शक्नोति—वह खेल सकता है।
९. अहं लेखितुं न शक्नोमि—मैं लिख नहीं सकता।
१०. सः वरं लेखितुं शक्नोति—वह अच्छा लिख सकता है।
११. सः नवीनं पुस्तकं लिखति किम्—वह नई पुस्तक लिखता है क्या ?
१२. तस्य गृहम् अतीव पुराणम् अस्ति—उसका घर बहुत ही पुराना है।
१३. भो मित्र ! एतत् आसनं गृहाण—हे मित्र ! यह आसन ले।

शब्द

अनृतम्—असत्य, झूठ।
प्रियम्—प्रिय।
अलङ्कारः—भूषण, जेवर।
अध्यापकः—पढ़ानेवाला।
वक्ता—बोलनेवाला।
किरणः—किरन।
वृथा—व्यर्थ।
अप्रियम्—अप्रिय।
भव—हो।
आचार्यः—गुरु, शिक्षक।
तूष्णीम्—चुपचाप।
प्रियवादी—प्रिय बोलनेवाला।
असत्यवादी—झूठ बोलनेवाला।

वाक्य

१. किमर्थम् अनृतं वदसि—तू क्यों असत्य बोलता है ?

२. अहं कदापि असत्यं नैव वदामि—मैं कभी असत्य बोलता ही नहीं ।

३. सः वक्ता सदा एव अप्रियं वदति—वह बोलने वाला सदा अप्रिय बोलता है ।

४. किं त्वम् अलङ्कारं गृह्णासि— क्या तू ज़ेवर लेता है ?

५. आचार्यः सत्वरम् आगमिष्यति—गुरु शीघ्र आएगा ।

६. सः अध्यापकः शीघ्रं न गमिष्यति—वह अध्यापक शीघ्र नहीं जाएगा ।

७. सत्यं प्रियं च वद—सत्य और प्रिय बोल ।

८. सः तत्र तूष्णीं तिष्ठति—वह वहां चुपचाप बैठा है ।

९. बालकः तूष्णीं नैव तिष्ठति—बालक चुप नहीं रहता ।

१०. सः आचार्यः सदा पुस्तकं पठति—वह शिक्षक सदा पुस्तक पढ़ता है ।

११. सः एवं वृथा वदति—वह ऐसा व्यर्थ बोलता है ।

१२. सः प्रियवादी आचार्यः कुत्र गतः—वह प्रिय बोलनेवाला आचार्य कहां गया ?

१३. सः अन्यं नगरं गच्छति—वह दूसरे शहर को जाता है ।

इस समय तक पाठकों ने अ, इ, उ, ऋ ये स्वर जिनके अन्त में हैं, ऐसे पुंल्लिग शब्द चलाने का प्रकार जान लिया है। अब कुछ पुंल्लिग सर्वनामों के रूप देते है, जिनको जानने से पाठक संस्कृत में अनेक प्रकार के वाक्य बना सकते हैं ।

अकारान्त पुंलिङ्ग 'सर्व' शब्द

१. प्रथमा	सर्वः	सब
२. द्वितीया	सर्वम्	सबको
३. तृतीया	सर्वेण	सबने (द्वारा)
४. चतुर्थी	सर्वस्मै	सबके लिए
५. पंचमी	सर्वस्मात्	सबसे
६. षष्ठी	सर्वस्य	सबका
७. सप्तमी	सर्वस्मिन्	सबमें

इन रूपों को जानने से पाठक बहुत कुछ वाक्य बना सकते हैं। देखिए—

१. सर्वः जनः अन्नं भक्षयति सारा लोक अन्न खाता है (सब लोग अन्न को खाते हैं)।
२. सर्वं धनं तस्मै देहि—सारा धन उसको दे।
३. सर्वेण द्रव्येण सः किं करोति—सारे धन से वह क्या करता है।
४. सर्वस्मै याचकवर्गाय मोदकान् देहि--सब भिक्षुसमूह को लड्डू दे।
५. सर्वस्मात् ग्रामात् जनः आगतः—सब गांव से लोग आए हैं।
६. सर्वस्य पुस्तकस्य किं मूल्यम् अस्ति—सारी पुस्तक का क्या मूल्य है ?
७. सर्वस्मिन् ग्रन्थे धर्मः प्रतिपादितः—सारे ग्रन्थ में धर्म का प्रतिपादन किया है।

इसी प्रकार निम्न सर्वनाम चलते हैं—

अन्यः – दूसरा।	विश्वः—सब।
एकः – एक।	कः—कौन।

पाठक इनके रूप बना सकते हैं और वाक्यों में इनको प्रयुक्त कर सकते हैं। अब नीचे कुछ वाक्य देते हैं, जो पाठक पढ़ते ही समझ जाएंगे।

१. एकस्मिन् दिवसे अहं तस्य गृहं गतः २. अन्यस्मिन् दिने जगदीशराजः अत्र आगतः। ३. अन्यस्य धनं न स्वीकुरु। ४. देवदत्तः सर्वं द्रव्यं तस्मै न ददाति किम्? ५. यदि एकस्मात् ग्रामात् पुरुषः न आगतः। ६. तर्हि अन्यस्मात् ग्रामात् सः कथम् आगमिष्यति? ७. एकस्मिन् मार्गे यथा दुःखम्[1] अस्ति न तथा अन्यस्मिन् मार्गे अस्ति। ८. अतः अन्येन मार्गेण एव तं ग्रामं गच्छ। ९. एकेन गुरुणा एव सर्वं पुस्तकं पाठितम्[2]। १०. अन्यस्मिन् पुस्तके सा[3] कथा नास्ति।

१. द्वारं पिधेहि। २. पात्रम् इदानीं कुत्र नयसि। ३. सः मोदकम् आम्रं च मध्याह्ने भक्षयति। ४. वृक्षे मूषकं पश्य। ५. नृपतिः चौरं ताडयति। ६. यदा चौरः तत्र गमिष्यति तदा त्वम् अपि तत्र एव गच्छ। ७. यथा त्वं दुग्धं पिबसि तथा एव सः पिबति। ८. स्वर्गस्य द्वारं तेन उद्घाटितम्। ९. हरिद्वारनगरे यथा स्वादु दुग्धं भवति न तथा अमृतसरे। १०. यथा विहगः आकाशे गच्छति, तथा मनुष्यः अत्र गच्छति। ११. अद्य कुमारः कुत्र वर्तते?

पाठ १८

शब्द

मार्जनलेपः—साबुन।	पर्यङ्कः—पलंग।
आलस्यम्—आलस।	आनन्दः—आनन्द।
ईन्धनम्—लकड़ी, इंधन	शौचम्—शौच।

---

१. दुःखम्—तकलीफ। २. पाठितम्—पढ़ाई। ३. सा—वह।

उत्तिष्ठामि – उठता हूं। उत्तिष्ठसि – (तू) उठता है।
पङ्कः—कीचड़। सूत्रम्—धागा।
हवनार्थम्—हवन के लिए। इह—यहां।
इति—ऐसा। उत्तिष्ठति—(वह) उठता है।
हवनकुण्डम्—हवनकुण्ड। यज्ञसामग्री—हवन-सामग्री।

वाक्य

१. भो शिष्य ! उत्तिष्ठ, आलस्यं न कुरु—हे शिष्य ! उठ, आलस न कर।
२. अहम् उत्तिष्ठामि, शौचं स्नानं च कृत्वा हवनार्थम् आगच्छामि—मैं उठता हूं, शौच और स्नान करके हवन के लिए आता हूं।
३. शीघ्रम् उत्तिष्ठ तत्र च सत्वरम् आगच्छ—जल्दी उठ और वहां शीघ्र आ।
४. तत्र हवनार्थम् ईन्धनं नास्ति—वहां हवन के लिए लकड़ी नहीं है।
५. यज्ञकुण्डं कुत्र अस्ति—हवनकुण्ड कहां है ?
६. अहं न जानामि—मैं नहीं जानता।
७. तत्र एव पश्य शीघ्रं च अत्र आनय—वहां ही देख और शीघ्र यहां ले आ।
८. भो मित्र ! हवनकुण्डम् अहम् आनयामि, त्वम् ईन्धनम् आनय—हे मित्र ! हवनकुण्ड मैं लाता हूं, तू लकड़ी ले आ।
९. यज्ञसामग्री अत्र अस्ति – हवन सामग्री यहां है।
१०. स्नानं कृत्वा एव हवनं करोमि—स्नान करके ही हवन करता हूं।
११. स्नानं सन्ध्यां च कृत्वा हवनं कुरु—स्नान और सन्ध्या करके हवन कर।
१२. इदानीं देवदत्तः सन्ध्यां करोति—अब देवदत्त सन्ध्या करता है।

शब्द

आरभे – मैं आरम्भ करता हूं ।
आरभते – वह आरम्भ करता है ।
एहि—आओ ।
माम् – मुझे ।
आज्ञापयति—आज्ञा देता है ।
आज्ञापयामि – आज्ञा देता हूं ।
तम् – उसको ।
इति—ऐसा, यह ।
आरभसे—तू आरम्भ करता है ।
उपास्य – उपासना करके ।
कुशलः – स्वस्थ, प्रवीण ।
कम्बलम्—कंबल ।
आज्ञापयसि—तू आज्ञा देता है ।
त्वाम्—तुझे ।
शुभम्—अच्छा ।
ऊर्णावस्त्रम्—ऊनी कपड़ा ।

वाक्य

१. रामचन्द्रः इदानीं कुशलः अस्ति—रामचन्द्र अब स्वस्थ है ।
२. सः प्रातः एव सन्ध्याम् उपास्य बहिः गच्छति—वह सवेरे ही संध्या करके बाहर जाता है ।
३. सः मध्याह्ने आगच्छति तदा भोजनं च करोति—वह दोपहर (के समय) आता है और तब भोजन करता है ।
४. सः माम् आज्ञापयति—वह मुझे आज्ञा देता है ।
५. अहं त्वां न आज्ञापयामि—मैं तुझको नहीं आज्ञा देता ।
६. सः तं किमर्थम् आज्ञापयति—वह उसको किसलिए आज्ञा देता है ।
७. सः तं कदापि न आज्ञापयति—वह उसको कभी नहीं आज्ञा देता ।
८. एहि, पश्य एतत्—आ, इसको देख ।
९. सः शुभं कर्म इदानीम् आरभते—वह श्रेष्ठ कार्य अब आरम्भ करता है ।

१०. अहम् इदानीं संस्कृतं पठितुम् आरभे- मैं अब संस्कृत पढ़ना प्रारंभ करता हूं।

११. त्वम् अपि किं न आरभसे--तू भी क्यों नहीं आरम्भ करता।

१२. समयः न अस्ति, अतः न आरभे—समय नहीं है, इसलिए नहीं आरम्भ करता।

१३. त्वम् इदानीं कुशलः असि किम्—तू अब कुशलपूर्वक है क्या ?

१४. सः तत्र गत्वा भूमिं खनति—वह वहां जाकर जमीन खोदता है।

१५. तत्र न गच्छ इति सः त्वाम् आज्ञापयति—वहां (तू) न जा ऐसी वह तुझे आज्ञा देता है।

पुंल्लिग में 'किम्' शब्द के रूप

१. प्रथमा	कः	कौन
२. द्वितीया	कम्	किसको
३. तृतीया	केन	किसने
४. चतुर्थी	कस्मै	किसके लिए
५. पंचमी	कस्मात्	किससे
६. षष्ठी	कस्य	किसका
७. सप्तमी	कस्मिन्	किसमें

शब्द

गतः--गया।
आलेख्यम्—चित्र, तस्वीर।
मन्दिरम्—घर, पूजास्थान।
आलिख्य—लिखकर।
ददाति—(वह) देता है।
ददासि—(तू) देता है।
भवति—(वह) होता है।
भवसि—(तू) होता है।

भवामि—होता हूं। मत्वा—मानकर।
गृहीत्वा—लेकर। भूत्वा—होकर।

वाक्य

१. कः तत्र अस्ति—कौन वहां है ?
२. त्वं कं पश्यसि—तू किसको देखता है ?
३. केन मार्गेण सः गतः—किस मार्ग से वह गया ?
४. कस्मै धनं ददासि—किसके लिए (को) धन देते हो ?
५. कस्मात् ग्रामात् सः आगच्छति—किस गांव से वह आता है ?
६. कस्य एतत् पुस्तकम् अस्ति—किसकी यह पुस्तक है ?
७. कस्मिन् पुस्तके तत् आलेख्यम् अस्ति—किस पुस्तक में वह तस्वीर है ?
८. कः तत्र न गच्छति—कौन वहां नहीं जाता ?
९. कस्मै कारणाय त्वं धनं न ददासि—किस कारण तू धन नहीं देता ?
१०. कस्मिन् स्थाने तस्य पाठशाला अस्ति—किस स्थान में उसकी पाठशाला है ?

किं कृष्णः मन्दिरं न गच्छति ? अद्य कृष्णः मन्दिरं नैव गच्छति। देवदत्तः यदि रामचन्द्राय पुस्तकं न ददाति तर्हि कस्मै ददाति ? त्वं कुत्र गत्वा इदानीम् अत्र आगतः ? मित्र, पश्य, तस्य गृहम् अत्र एव अस्ति। मम गृहम् अत्र नास्ति। तव वस्त्रं मलिनम्। कं प्रणम्य सः आगतः ? सः गुरुं प्रणम्य आगतः।

निम्न वाक्यों के संस्कृत-वाक्य बनाइए—

हे विष्णुदत्त, तू कब आएगा ? मैं शाम के समय सन्ध्या करके वहां

आऊंगा। तू वहां क्यों नहीं जाता ? कह, यदि तू जाएगा तो मैं अवश्य जाऊंगा। वह तुमको पीटता है। रामचन्द्र यज्ञदत्त के लिए पुस्तक नहीं देता। देख, मेरा घर कैसा उत्तम है ! मैं ठंडे पानी से स्नान करके आया। तू अब पुस्तक पढ़। मैं भोजन करके पत्र पढ़ूंगा।

पाठ १९

शब्द

मसूराः—मसूर।
तिलाः—तिल।
मनुष्यः—मनुष्य।
पुरुषः—मर्द
कलमः—कलम, लेखनी।
मुद्गाः—मूंग।
स्त्री—स्त्री।
कृष्णाः—काले।

यवाः—जौ।
गोधूमाः—गेहूं, कनक।
काचः—शीशा।
तण्डुलाः—चावल।
माषाः—माष, उड़द।
सन्ति—हैं।
अर्धम्—आधा।

वाक्य

१. सः पुरुषः नगरं गत्वा जलम् आनयति—वह पुरुष शहर जाकर जल लाता है।

२. तत्र गोधूमाः सन्ति परन्तु यवाः न सन्ति—वहाँ गेहूं हैं परन्तु जौ नहीं हैं।

३. तिलाः कृष्णाः सन्ति तथा एव माषाः अपि—तिल काले हैं वैसे ही माष भी।

४. माषाः न तथा कृष्णाः यथा तिलाः—माष वैसे काले नहीं, जैसे तिल।

५. पश्य, अत्र पुरुषः अस्ति —देख, यहाँ मर्द है।

६. अत्र पुरुषः अस्ति परन्तु स्त्री नास्ति — यहां पुरुष है परन्तु स्त्री नहीं है।

७. दुर्गादासः किं करोति—दुर्गादास क्या करता है ?

८. बाबूरामः तत्र तिष्ठति लिखति च—बाबूराम वहां ठहरता है और लिखता है।

९. तव दूतः लेखितुं न शक्नोति—तेरा दूत लिख नहीं सकता।

१०. मम स्त्री संस्कृतं वक्तुं शक्नोति—मेरी स्त्री संस्कृत बोल सकती है।

११. तत्र उपविश, यत्र बालकः स्वपिति—वहाँ बैठ, जहाँ बालक सोता है।

१२. अत्र बालकः नास्ति—यहां बालक नहीं है।

१३. तर्हि सः कुत्र अस्ति इति अहं न जानामि—तो वह कहां है यह मैं नहीं जानता।

१४. सः इदानीम् उपरि अस्ति—वह अब ऊपर है।

१५. त्वं नीचैः गच्छ—तू नीचे जा।

शब्द

त्यजति—छोड़ता है।
त्यजसि—तू छोड़ता है।
त्यजामि—छोड़ता हूं।
त्यक्त्वा—छोड़कर।
त्यक्तुम्—छोड़ने के लिए।
हस्तौ—दोनों हाथ।
प्रक्षालयति—(वह) धोता है।
प्रक्षालयसि—(तू) धोता है।
प्रक्षालयामि—धोता हूं।
प्रक्षालयितुम्—धोने के लिए।
प्रक्षालय—धो।
मुखम्—मुंह।
पादौ—दोनों पाव।
प्रक्षालनम्—धोना।

कठिनम्—सख्त ।
प्रथमम्—पहले ।
त्यज—छोड़ ।
जडः—मूर्ख ।

वाक्य

१. सः हस्तौ पादौ च प्रक्षालयति—वह हाथ और पांव धोता है ।
२. अहं वस्त्रं प्रक्षालयामि—मैं कपड़ा धोता हूं ।
३. त्वम् इदानीं किं प्रक्षालयसि—तू अब क्या धोता है ?
४. त्वम् इदानीम् एव किमर्थं तत् प्रक्षालयसि—तू अभी किसलिए उसे धोता है ।
५. अद्य सायङ्काले जलम् आनय वस्त्रं च प्रक्षालय—आज सायंकाल जल ला और वस्त्र धो ।
६. त्वम् अनृतं किमर्थं न त्यजसि—तू झूठ क्यों नहीं छोड़ता ?
७. सः असत्यं शीघ्रम् एव त्यजति—वह असत्य को जल्दी छोड़ देता है
८. प्रथमं हस्तौ पादौ च प्रक्षालय—पहले हाथ-पैर धो ।
९. पश्चात् भोजनं कुरु—पीछे भोजन कर ।
१०. प्रातर् एव उत्तिष्ठ मुखं च प्रक्षालय—सवेरे ही उठ और मुंह धो ।
११. सः प्रातर् उत्तिष्ठति, बहिर् गच्छति, तत्र मुखं प्रक्षालयति—वह सवेरे उठता है, बाहर जाता है, वहां मुंह धोता है ।
१२ सः उष्णं जलं न पिबति—वह गरम जल नहीं पीता ।
१३. अहं शीतं जल न पिबामि—मैं ठंडा जल नहीं पीता हूं ।
१४. त्वं तत्र गच्छ वस्त्रं च प्रक्षालय—तू वहां जा और कपड़ा धो ।
१५. जडः न पठति - मूर्ख नहीं पढ़ता ।
१६. सः बालकः मूढः नैव अस्ति—वह बालक मूढ़ नहीं है ।

पुंल्लिंग 'अस्मत्' शब्द

१. प्रथमा	अहम्	मैं
२. द्वितीया	माम्	मुझे
३. तृतीया	मया	मैंने, मुझसे
४. चतुर्थी	मह्यम्	मेरे लिए
५. पंचमी	मत्	मुझसे
६. षष्ठी	मम	मेरा
७. सप्तमी	मयि	मुझमें, पर

शब्द

लिखित्वा, लेखित्वा—लिखकर।

हृतम् हरण किया। तपः—तप।
जानाति—वह जानता है। जानासि—(तू) जानता है।
जानामि—जानता हूं। हर्तुम्—हरण करने के लिए।
कर्तुम्—करने के लिए। आनेतुम्—लाने के लिए।
प्रष्टुम् पूछने के लिए। आलस्यम्—सुस्ती।
मिलित्वा—मिलकर। मिलित्वा—मिलकर।
पाहि—रक्षा कर। आचरति—आचरण करता है।
उत्थाय—उठकर। गन्तुम्—जाने के लिए।
आगन्तुम्—आने के लिए। हन्तुम्—हनन (मारने) के लिए।
नेतुम्—ले जाने के लिए। हत्तुम्—शौच, पाखाना करने के लिए
वेत्तुम्—जानने के लिए

वाक्य

१. अहं भ्रात्रा सह ग्रामं गच्छामि—मैं भाई के साथ गांव को जाता हूं।

२. मया सह त्वम् अपि आगच्छ—मेरे साथ तू भी आ।
३. मह्यं वस्त्रं देहि—मेरे लिए (मुझे) कपड़ा दे।
४. हे ईश्वर ! मां पाहि—हे परमात्मन् ! मेरी रक्षा कर।
५. मम धनं तेन हृतम्—मेरा धन उसने चुरा लिया है।
६. मत् अन्नं गृहीत्वा तस्मै देहि—मुझसे अन्न लेकर उसे दे।
७. मयि पातकं नास्ति—मुझमें पाप नहीं है।

सुगम वाक्य

तं मुनिं पश्य। सः मुनिः प्रातर् एव उत्तिष्ठति। सः प्रातर् उत्थाय किं करोति ? सः प्रातर् उत्थाय तपः आचरति। यज्ञमित्रः भूमित्रस्य पुत्रः अस्ति। सः तं मुनिं प्रणम्य अत्र आगच्छति। सः मुनिः कस्मात् स्थानात् अत्र आगतः इति त्वं जानासि किम् ? सः मुनिः कस्माद् ग्रामाद् अत्र आगतः अहं नैव जानामि, यज्ञमित्रः जानाति। हे मित्र, किं त्वं जानासि ? सः मुनिः अयोध्यानगरात् अत्र आगतः। कदा आगतः इति अहं न जानामि। सः सर्वं शास्त्रं जानाति।

पाठ २०

पाठक ! इस समय तक आपके उन्नीस पाठ हो चुके हैं, और आपके पास नित्य व्यवहार में उपयुक्त होनेवाले बहुत शब्द आ चुके हैं। अगर आपने ये शब्द स्मरण किए होंगे तथा उस-उस पाठ में जो-जो वाक्य दिए हैं, उनकी पद्धति की ओर ध्यान देकर, उन वाक्यों को अच्छी तरह कण्ठ किया होगा, तो निस्सन्देह दैनिक व्यवहार के उपयोगी कुछ वाक्य आप घड़ सकेंगे। प्रत्येक पाठ में आपके पास दस-बीस उपयोगी शब्द आते हैं और जो पाठक उनका उपयोग अधिक

करेंगे वे संस्कृत भाषा जल्दी बोल सकेंगे।

आज के पाठ में कोई नया शब्द नहीं दिया जाता, परन्तु जो शब्द और वाक्य पूर्वोक्त उन्नीस पाठों में आ चुके हैं, उन्हीं को आज दुबारा याद कीजिए, ताकि वे भूल न जाएं! अगर आप पिछला भूलेंगे तो आगे नहीं बढ़ सकेंगे। हम ऐसे क्रम से वाक्य देने का यत्न करते हैं कि शब्दों को कण्ठ किए बिना ही शब्द अपने-आप ही स्मरण हो जाएं। तथापि हमारा प्रयत्न सफल होने के लिए आपका दृ अभ्यास भी तो होना चाहिए।

आप नये संस्कृत वाक्य बनाने के समय डरते होंगे कि शायद वाक्य अशुद्ध बनेंगे, परन्तु हम आपको कहते हैं कि आप ऐसा डर मन में न रखिए, आपके वाक्य शुद्ध हों अथवा अशुद्ध, कोई परवाह नहीं। आप वाक्य बनाते जाइए और साथ-साथ हमारे दिए हुए वाक्यों की तर्ज़ (पद्धति) ध्यान में रखिए। आपके वाक्य निस्सन्देह ठीक हो जाएंगे।

इस पाठ में पूर्व आए हुए शब्दों में से कई नये वाक्य दिए गए हैं। आप उनको विशेष ध्यान से पढ़िए। अगर आपके साथ पढ़ने-वाला कोई नहीं है, तो आप ही ऊंचे स्वर से पढ़ते जाइए। तात्पर्य यह है कि आपके कानों को संस्कृत भाषा सुनने का अभ्यास हो जाए। कई लोग शब्द तथा वाक्य मन में कण्ठ करते हैं, यह बड़ी भारी गलती है। जब तक भाषा सुनने का कानों को अभ्यास न होगा तब तक कोई भाषा अच्छी तरह नहीं आ सकती। इस कारण दो विद्यार्थियों का साथ पढ़ना बहुत लाभकारी होता है अथवा ऊंचा पढ़ने से भी लाभ हो सकता है। अब आगे लिखे हुए वाक्य स्मरण कीजिए —

वाक्य

१. तत्र शङ्करदासः गन्तुं शक्नोति न वा—वहां शंकरदास जा सकता है या नहीं ?

२. सः तत्र यदा गन्तुम् इच्छति तदा गच्छति—वह वहां जब जाना चाहता है, तब जाता है।

३. ईश्वरः सर्वत्र अस्ति—ईश्वर सब कहीं है।

४. सः आपणं गत्वा कुण्डलिनीम् आनयति—वह बाज़ार जाकर जलेबी लाता है।

५. यदा सः पाठशालां न गच्छति, तदा उद्यानम् अपि न गच्छति—जब वह पाठशाला को नहीं जाता, तब बाग को भी नहीं जाता।

६. त्वं सदा किमर्थं नगरं गच्छसि—तू हमेशा क्यों शहर को जाता है ?

७. श्वः जालन्धरनगरं गमिष्यति, देवव्रतं च आनेष्यति—वह कल जालन्धर शहर आएगा और देवव्रत को ले आएगा।

८. यदि जानसनः घटिकायन्त्रं सुष्ठु करिष्यति तर्हि अहम् आनेष्यामि—अगर जानसन घड़ी को ठीक कर देगा तो मैं ले आऊंगा।

९. त्वम् औषधालयं कदा गमिष्यसि औषधं च कदा आनेष्यसि—तू दवाखाने कब जाएगा और दवा कब लाएगा ?

१०. अहं सर्वदा फलं भक्षयामि, अन्नं कदापि नैव भक्षयामि—मैं हमेशा फल खाता हूं, अन्न कभी नहीं खाता।

११. तस्मै धनं, वस्त्रं अन्नं च देहि—उसको धन, कपड़ा और अन्न दे।

१२. शीघ्रं रथम् आनय, अहं बहिः गन्तुम् इच्छामि—जल्दी गाड़ी ले आ, मैं बाहर जाना चाहता हूं।

१३. हे दास ! द्वारम् उद्घाटय, अहं आगन्तुम् इच्छामि—हे नौकर ! दरवाजा खोल, मैं आना चाहता हूं ।

१४. पानार्थं मह्यं मधुरं दुग्धं देहि—पीने के लिए मुझे मीठा दूध दे।

(१) तस्मै फलं न देहि । (२) यस्मै त्वया अन्नं दत्तं तस्मै जलम् अपि देहि । (३) यस्मात् स्थानात् त्वम् अद्य आगतः तस्मात् स्थानात् यज्ञदत्तः अपि आगतः । (४) रामदेवः तत्र नास्ति इति कः वदति । (५) धर्मदत्तस्य एतत् पुस्तकम् अस्ति । (६) तत् सोमदत्तेन तत्र नीतम् । (७) कः प्रथमम् उत्तिष्ठति । (८) विश्वामित्रः शीघ्रं वदति ।

परीक्षा

सूचना—पाठकों के इस समय तक बीस पाठ हो चुके हैं । यहां उचित है कि पाठक पूर्व पाठों को दुबारा पढ़कर सब शब्द तथा वाक्य स्मरण करें और इन प्रश्नों का उत्तर देने के पश्चात् ही इक्कीसवें पाठ को प्रारम्भ करें ।

परीक्षा के प्रश्न

(१) निम्न स्वरों की सन्धि कीजिए—

इ+ई	आ+ओ
आ+इ	उ+अ
अ+ए	इ+आ
ओ+आ	ऐ+इ

(२) निम्न शब्दों को सातों विभक्तियों के एकवचन के रूप दीजिए—

राम । देवदत्त । ग्राम । इन्द्र । नृपति । भूपति । भानु । कर्तृ । धर्तृ ।

(३) निम्न शब्दों के पंचमी के एकवचन के रूप लिखिए—
नरपति। चित्रभानु। । वसु। किम्। अस्मद्। भोक्तृ। दातृ। रथ। कवि। शम्भु।

(४) निम्न वाक्यों के अर्थ कहिए—
१. किं त्वम् अद्य ग्रामं न गच्छसि? २. सः तत्र गत्वा किं किं करोति? ३. अहं रात्रौ ग्रामाद् बहिः न गच्छामि। ४. सः दिवा यत्र कुत्र अपि भ्रमति। ५. अहं परश्वः हरिद्वारं गत्वा गङ्गाजलम् आनेष्यामि। ६. पर्वतस्य शिखरं रमणीयं नास्ति। ७. तेन उत्तमं पुस्तकं रचितम्। ८. सः स्नात्वा पठति, पठित्वा भोजनं करोति। ९. रवेः प्रकाशो भवति। १०. नृपतेः प्रसादेन तेन धनं प्राप्तम्। ११. मुनिना मोदकः न भक्षितः। १२. सः रात्रौ भोजनं न करोति। १३. सेनापतिना सैन्यम् अत्र आनीतम्। १४. वह्निना सर्वं गृहं दग्धम्[1]। १५. वाल्मीकिना रामायणं रचितम्। १६. व्यासेन महाभारतं लिखितम्।

(५) निम्न वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—
१. कब वह नगर को जाएगा? २. अब तू कहां जाता है? ३. बोल, तू वहां क्यों नहीं जाता? ४. हे भाई, तू वहां शीघ्र जा। ५. जहां तू दिन में जाता है वहां वह रात्रि में जाता है। ६. वहां वह कैसे परसों जा सकता है? ७. तू अब वन को जा, मैं नगर को जाऊंगा और मेरा भाई गांव को जाएगा। ८. मैं घर जाऊंगा। ९. तू वहां जल्दी जा। १०. आज विष्णुशर्मा आ गया। ११. मैं परसों स्नान करूंगा।

---

१. दग्धम्—जला।

पाठ २१

रेखा—लकीर।	लोभः—लालच।
सिद्धम्—तैयार।	शुद्धः—स्वच्छ।
वायुः—हवा।	नगरे—शहर में।
स्वभावः—आदत।	वेषः—पहनावा।
मार्जारम्—बिल्ली को।	अश्वम्—घोड़े को।
आकाशः—आकाश।	तारकाः—तारागण।

वाक्य

१. तव भोजनं सिद्धम् अस्ति इति त्वं जानासि किम्—तेरा भोजन तैयार है, ऐसा तू जानता है क्या ?
२. भो मित्र ! अहं न जानामि—हे मित्र ! मैं नहीं जानता।
३. एतत् ज्ञात्वा भोजनाय कथं न आगमिष्यामि—यह जानकर भोजन के लिए कैसे नहीं आऊंगा।
४. प्रातर् एव उत्तिष्ठ व्यायामं च कुरु—सवेरे ही उठ और व्यायाम कर।
५. त्वं प्रातः वनं किमर्थं गच्छसि—तू सवेरे वन को क्यों जाता है।
६. तत्र प्रातः शुद्धः वायुः भवति—वहाँ सवेरे शुद्ध वायु होती है।
७. किं नगरे शुद्धः वायुः न भवति—क्या शहर में शुद्ध वायु नहीं होती ?
८. नगरे शुद्धः वायुः कदापि न भवति—शहर में शुद्ध वायु कभी नहीं होती।
९. त्वम् अत्र सायङ्कालपर्यन्तं स्थातुं शक्नोषि किम्—तू यहाँ शाम तक ठहर सकता है क्या ?

१०. सः अतीव दुर्बलः जातः, अतः गन्तुं न शक्नोति—वह बहुत ही दुर्बल हो गया है, इसलिए जा नहीं सकता ।
११. त्वम् इदानीं ज्वरितः असि, अतः अल्पम् अन्नं भक्षय—तू अब ज्वर युक्त है, इसलिए थोड़ा अन्न खा ।
१२. सः किमर्थं मार्जारं ताडयति—वह किसलिए बिल्ली को मारता है ?
१३. सः कदा नीरोगः भविष्यति—वह कब स्वस्थ होगा ?
१४. आकाशे तारकान् पश्य—आकाश में तारे देख ।
१५. बालकः वने क्रीडति किम्—बालक वन में खेलता है क्या ?

शब्द

अस्तसमये—सूर्य डूबनें के समय । भानुः—सूर्य ।
उदयसमये—उदयकाल में । उदयते—उगता है ।
हसनम्—हंसना । प्रतिमा—मूर्ति ।
रजकः—धोबी । गृहीत्वा—लेकर ।
दुग्धपानार्थम्—दूध पीने के लिए । गोदुग्धम्—गाय का दूध ।
नमनम्—नमस्कार । आलोकचित्रम्—फोटोग्राफ ।

वाक्य

१. एष भानुर् आकाशे उदयते—यह सूर्य आकाश में निकलता है ।
२. यदा भानुर् उदयते तदा आकाशः रक्तो जायते—जब सूर्य निकलता है तब आकाश लाल हो जाता है ।
३. यथा उदयसमये तथा अस्तसमये अपि भवति—जैसा उदयकाल में वैसा अस्तसमय में भी होता है ।
४. भद्रसेनः अतीव दरिद्रः अस्ति इति त्वं न जानासि किम्—भद्रसेन अत्यन्त दरिद्र है, यह तू नहीं जानता क्या ?

५. पश्य, सः किमर्थं हसति—देख, वह क्यों हंसता है ?

६. अहमदः मार्गे पतितः अतः सः हसति—अहमद सड़क पर गिर पड़ा, इसलिए वह हंसता है।

७. किम् एतद् वरम् अस्ति—क्या यह ठीक है ?

८. एवं हसनं वरं नैव अस्ति—इस प्रकार हंसना ठीक नहीं है।

९. इदानीं सः रजकः वस्त्रं कुत्र नयति—अब वह धोबी वस्त्र कहां ले जाता है ?

१०. रजकः प्रातर् एव वस्त्रं गृहीत्वा कूपं गच्छति—धोबी सवेरे ही वस्त्र लेकर कूएं पर जाता है।

११. सः तत्र गत्वा वस्त्रं प्रक्षालयति—वह वहां जाकर वस्त्र धोता है।

१२. सः परकीयां गां किमर्थं गृहम् आनयति—वह दूसरे की गाय किस लिए घर में लाता है ?

१३. दुग्धपानार्थं गाम् आनयति—(वह)दूध पीने के लिए गाय लाता है।

१४. गोदुग्धं त्वं पिबसि किम्—गाय का दूध तू पीता है क्या ?

१५. गोदुग्धं मिष्टं भवति अतः तद् एव अहं पिबामि—गाय का दूध मीठा होता है इसलिए वही मैं पीता हूं।

१६. शृणु, अद्य अहं तत्र नैव गमिष्यामि—सुन, आज मैं वहां नहीं जाऊंगा।

पुंल्लिंग में 'युष्मत्' शब्द

१. प्रथमा	त्वम्	तू
२. द्वितीया	त्वाम्	तुझे
३. तृतीया	त्वया	तूने, तेरे द्वारा
४. चतुर्थी	तुभ्यम्	तेरे लिए, तुझे
५. पंचमी	त्वत्	तुझसे

६. षष्ठी	तव	तेरा
७. सप्तमी	त्वयि	तुझमें, पर

शब्द

स्थातुम्—बैठने के लिए। उत्थातुम्—उठने के लिए।
आसितुम्—बैठने के लिए। भोक्तुम्—खाने के लिए।
पातुम्—पीने के लिए। स्वप्तुम्—सोने के लिए।
जेतुम्—विजय पाने के लिए। वक्तुम्—बोलने के लिए।
स्वीकर्तुम्—स्वीकार करने के लिए। भक्षयितुम्—खाने के लिए।
गणयितुम्—गिनने के लिए। चोरयितुम्—चुराने के लिए।
हसितुम्—हंसने के लिए। पठितुम्—पढ़ने के लिए।
मार्ष्टुम्—मांजने के लिए। ताडयितुम्—पीटने के लिए।
जागरितुम्—जागने के लिए। चिन्तयितुम्—विचार करने के लिए।
द्रष्टुम्—देखने के लिए। स्मर्तुम्—याद करने के लिए।

वाक्य

१. त्वं प्रष्टुं गच्छ—तू पूछने के लिए जा।
२. तत्र अन्नं भोक्तुं गच्छति—(वह)वहां अन्न खाने के लिए जाता है।
३. अहं जलं पातुम् अत्र आगतः—मैं जल पीने के लिए यहां आया हूं।
४. ईश्वरदत्तः स्वप्तुं स्वगृहं गतः—ईश्वरदत्त सोने के लिए अपने घर गया।
५. बालकः पठितुं न इच्छति—बालक पढ़ने के लिए (पढ़ना) नहीं चाहता।
६. सेनापतिः जेतुम् उद्यमं करोति—सेनापति विजय पाने के लिए उद्योग करता है।
७. त्वम् अध्यापकस्य समीपे तं प्रश्नं प्रष्टुं गच्छसि किम्—तू गुरु के

पास वह प्रश्न पूछने के लिए जाता है क्या ?

८. आः ! विष्णुशर्मा तत्र शीघ्रं गन्तुं धावति—अरे ! विष्णुशर्मा वहां जल्दी जाने के लिए दौड़ता है।

९. सः गुरुं प्रणम्य अध्ययनं करोति—वह गुरु को प्रणाम करके अध्ययन करता है।

सरल वाक्य

१. किं त्वं तस्य गृहे तिष्ठसि ? २. अहम् आचार्यस्य समीपं वेदं पठितुं नित्यं गच्छामि। ३. त्वं तस्मात् स्थानात् उत्थातुं न इच्छसि किम् ? ४. सः आसनाद् उत्थातुम् अपि न इच्छति। ५. त्वं कदा ग्रामं गन्तुम् इच्छसि ? ६. अहं वने गत्वा व्याघ्रं हन्तुम् इच्छामि। ७. केन सह त्वं वनं गमिष्यसि ? ८. अहम् अद्य रात्रौ सरदारदिलीपसिंहेन सह वनं गमिष्यामि। ९. केन दिलीपसिंहेन सह त्वं गन्तुम् इच्छसि ? १०. यः दिलीपसिंहः अमृतसरनगरे निवसति[१]। ११. कस्य सः पुत्रः ? १२. सः सरदारसिंहस्य पुत्रः ज्वालासिंहस्य भ्राता[२] अस्ति ? १३. अहम् अपि तं द्रष्टुम्[३] आगमिष्यामि। १४. देवशर्मा इदानीं कुत्र गतः ? १५. यत्र विश्वदेवः गतः तत्र एव देवशर्मा अपि गतः। १६. देवदत्तः पुष्पमालां गृहीत्वा धावति। १७. किमर्थं सः धावति ? १८. सः शीघ्रं गृहं गन्तुम् इच्छति, अतः एव धावति। १९. तेन द्रव्यं दत्त्वा पठितम्। २०. परन्तु मया द्रव्यम् अदत्त्वा[४] एव पठितम्। २१. यदि सः वेदं पठति तर्हि त्वम् अपि वेदं पठ। २१. प्रातःकाले उत्थाय ईश्वरस्य स्मरणं[५] कर्तव्यम्। २३. प्रातःकाले उत्थाय विद्याऽभ्यासः[६] कर्तव्यः। २४. प्रातःकाले अभ्यासे कृते[७] विद्या सत्वरम् आगमिष्यति। २५. विद्यां

---

१. निवसति—रहता है। २. भ्राता—भाई। ३. द्रष्टुम्—देखने के लिए ४. अदत्त्वा—न देकर। ५. स्मरणम्—याद। ६. विद्याभ्यासः—पढ़ना। ७. अभ्यासे कृते—अभ्यास करने पर।

विना व्यर्थं जीवनम्[१] । २६. सः तत्र गत्वा आगतः किम् ?

१. क्या तू उसके घर रहता है ? २. मैं गुरु के पास वेद पढ़ने के लिए हमेशा जाता हूं । ३. तू उस स्थान से उठना नहीं चाहता है क्या ? ४. वह आसन से उठना भी नहीं चाहता । ५. तू कब गांव को जाना चाहता है । ६. मैं वन जाकर बाघ को मारना चाहता हूं । ७. किसके साथ तू वन को जाएगा ? ८. मैं आज सरदार दिलीपसिंह के साथ जाना चाहता हूं । ९. कौन से दिलीपसिंह के साथ जाना चाहते हो ? १०. जो अमृतसर में रहता है । ११. किसका वह लड़का है ? १२. देवशर्मा आज यहां नहीं है । १३. तू ऊपर जा, मैं नीचे जाता हू । १४. जल्दी जलेबियां ले आ ।

पाठ २२

शब्द

स्मृत्वा—स्मरण करके ।
सदाचारः—सदाचार ।
स्मरति—वह स्मरण करता है ।
स्मरामि—स्मरण करता हूं ।
स्थान – जगह ।
विषये—विषय में ।
स्मरिष्यति – वह स्मरण करेगा ।
स्मरिष्यामि—स्मरण करूंगा ।

ज्ञानम्—ज्ञान ।
शृङ्गवेरम्—अदरक ।
स्मरसि – तू स्मरण करता है ।
गणयति—वह गिनता है ।
सकलम्— सम्पूर्ण ।
शास्त्रस्य—शास्त्र का ।
स्मरिष्यसि— तू स्मरण करेगा ।
चोरयति—वह चुराता है ।

---

१. व्यर्थं जीवनम्—जिन्दगी व्यर्थ है ।

वाक्य

१. सः स्मृत्वा वदति—वह स्मरण करके बोलता है।
२. यस्य ज्ञानं नास्ति तस्मिन् विषये सः किमर्थं वदति—जिसका ज्ञान नहीं है उस विषय में वह क्यों बोलता है ?
३. सदाचारः एव धर्मः अस्ति—सदाचार ही धर्म है।
४. शृङ्गवेरं त्वं भक्षयसि किम्—अदरक तू खाता है क्या ?
५ देवदत्तस्य स्थानं त्वं जानासि किम्—देवदत्त का स्थान तू जानता है क्या ?
६. इदानीं तु न जानामि—अब तो नहीं जानता।
७. परन्तु स्मृत्वा वदिष्यामि—परन्तु स्मरण करके बताऊंगा।
८. तस्य गृहम् अतीव दूरम् अस्ति—उसका घर बहुत ही दूर है।
९. तत्र त्वम् इदानीं किमर्थं गन्तुम् इच्छसि—वहां तू अब क्यों जाना चाहता है ?
१०. सः शास्त्रस्य सर्वं ज्ञानं जानाति—वह शास्त्र का सब ज्ञान जानता है।
११. यदि त्वं तद् ज्ञातुम् इच्छसि तर्हि आगच्छ—अगर तू उसे जानना चाहता है तो आ।
१२. त्वं घृतं कथं पिबसि—तू घी कैसे पीता है ?
१३. अहं तु न पातुं शक्नोमि—मैं तो नहीं पी सकता।
१४. पश्य अहं कथं पिबामि—देख मैं कैसे पीता हूं।

शब्द

रिपुः—शत्रु।
हस्तः—हाथ।
मालिन्यम्—मलीनता।
केशः—केश।
रोचते—पसन्द है।
माषवटी—कचौरी।

विक्रीय—बेचकर ।
क्रीणासि · तू खरीदता है ।
आलोकयति—वह देखता है ।
चेत्—यदि ।
वा—अथवा ।
क्रीणाति—वह खरीदता है ।
क्रीणामि—खरीदता हूं ।
कृष्णः—काला ।
मा—नहीं ।
विलोकयति—वह देखता है ।

वाक्य

१. मालिन्यं वरं नास्ति—मलिनता अच्छी नहीं है ।
२. तस्य केशाः अतीव कृष्णाः सन्ति—उसके बाल बहुत ही काले हैं ।
३. यदि रोचते तर्हि गृहाण—अगर पसन्द हैं तो तो ले ।
४. न रोचते चेत्* मा कुरु—यदि* पसन्द नहीं है (तो*) न कर ।
५. किं क्रीणासि पुष्पं फलं वा—क्या खरीदते हो फूल या फल ?
६. न अहम् इदानीं पुष्पं क्रीणामि नापि फलम्—न मैं अब फूल खरीदता हूं न ही फल ।
७. तर्हि किमर्थम् अत्र मार्गे तिष्ठसि—तो क्यों तू यहां मार्ग पर ठहरता है ।
८. मम मित्रम् इदानीम् अत्र आगमिष्यति—मेरा मित्र अब यहां आएगा ।
९. सः किम् आनेष्यति—वह क्या लाएगा ?
१०. सः इदानीं माषवटीः भक्षणार्थम् आनेष्यति—वह अब कचौरी खाने के लिए लाएगा ।
११. सः दुग्धं विक्रीय आगच्छति—वह दूध बेचकर आता है ।

*'चेत्' शब्द वाक्य के पश्चात् आता है, परन्तु उसका भाषा में अर्थ पहले लिखा जाता है, तथा 'तो' शब्द संस्कृत में न बोला हुआ भी भाषा में अर्थ से बोला जाता है ।

दकारान्त पुंल्लिग 'तद्' शब्द

१. प्रथमा	सः	वह
२. द्वितीया	तम्	उसको
३. तृतीया	तेन	उसने
४. चतुर्थी	तस्मै	उसके लिए
५. पंचमी	तस्मात्	उससे
६. षष्ठी	तस्य	उसका
७. सप्तमी	तस्मिन्	उसमें, पर

दकारान्त पुंल्लिग 'यद्' शब्द

१. प्रथमा	यः	जो
२. द्वितीया	यम्	जिसको
३. तृतीया	येन	जिसने
४. चतुर्थी	यस्मै	जिसके लिए
५. पंचमी	यस्मात्	जिससे
६. षष्ठी	यस्य	जिसका
७. सप्तमी	यस्मिन्	जिसमें, पर

१. येन सह त्वं वदसि, सः न साधुः अस्ति – जिसके साथ तू बोलता है, वह उत्तम मनुष्य नहीं है।

२. यस्मै त्वं धनं दातुम् इच्छसि, सः तत्र नास्ति जिसके लिए तू धन देना चाहता है, वह वह नहीं है।

३. यस्य गृहम् अग्निना दग्धम्, सः अत्र आगतः—जिसका घर आग से जला, वह यहां आ गया (है)।

४. यस्मिन् पात्रे दुग्धं रक्षितम् तत् पात्रं भिन्नम्—जिस बरतन में दूध रखा था, वह बरतन टूट गया।

५. यस्मात् ग्रामात् त्वम् इदानीम् आगतः, तस्य किं नाम अस्ति—जिस गांव से तू अब आया उसका क्या नाम है ?
६. यं त्वं पश्यसि सः कः अस्ति:—जिसको तू देखता है वह कौन है ?
७. यः पुस्तकं पठति सः एव मम भ्राता अस्ति—जो पुस्तक पढ़ता है वह ही मेरा भाई है।
८. यस्मै धनं दातुम् इच्छसि किम् सः दरिद्रः अस्ति—(तू) जिसको धन देना चाहता है, क्या वह निर्धन है ?
९. येन सह वदसि तम् एवं कथय—(तू) जिसके साथ बोलता है, उसको ऐसा कह।
१०. यः कूपस्य जलं पातुम् इच्छति तस्मै कूपस्य एव जलं देहि—जो कूए का जल पीना चाहता है, उसके लिए कूए का ही जल दे।
११. तथा यः गङ्गाजलं पातुम् इच्छति तस्मै शुद्धं गङ्गाजलं देहि—और जो गंगाजल पीना चाहता है उसके लिए शुद्ध गङ्गाजल दे।

सरल वाक्य

१. श्रीरामचन्द्रस्य पत्रम् आगतम्[1]। २. अहं पत्रं पठामि। ३. देवदत्तः कन्दुकेन क्रीडति। ४. पश्य, सः युवा लक्ष्मणशर्मा अत्र आगतः। ५. विष्णुदत्तेन रामायणं नाम[2] पुस्तकम् आर्यभाषायां[3] लिखितम्। ६. तेन शूरेण व्याघ्रः हतः। ७. सः आचार्यः सदा अत्र एव निवसति। ८. यदा सः पाठशालां गच्छति तदा दशवादन-समयः[4] भवति। ९. यदा त्वं गङ्गाजलम् आनेष्यसि तदा कूपस्य जलम् अपि-आनय। १०. मध्याह्नसमयः जातः।

---

१. आगतम्—आया। २. नाम—नामक। ३. आर्यभाषायाम्—हिन्दी भाषा में। ४. दशवादन-समयः—दस बजे।

पाठ २३

क्रीणाति—खरीदता है। इसके पहले 'वि' लगाने से 'बेचता है' ऐसा अर्थ होता है। देखो—

क्रीणाति—वह खरीदता है।
क्रीणासि—तू खरीदता है।
क्रीणामि—खरीदता हूं।
क्रीत्वा—खरीदकर।
सूची—सूई।
नौका—किश्ती, बेड़ी।
विक्रीणीते—वह बेचता है।
विक्रीणीषे—तू बेचता है।
विक्रीणे—बेचता हूं।
विक्रीय—बेचकर।
समीपम्—पास।
कण्ठः—गला।

वाक्य

१. अधुना आपणं गत्वा त्वं किं क्रीणासि—अब तू बाजार जाकर क्या खरीदता है?
२. अहं पुस्तकं मसीपात्रं लेखनीं च क्रीणामि—मैं पुस्तक, दवात और कलम खरीदता हूं।
३. त्वं यत्र स्थास्यसि अहमपि तत्र स्थातुम् इच्छामि—जहां तू ठहरेगा मैं भी वहाँ ठहरना चाहता हूं।
४. यत् त्वं लेखितुम् इच्छसि, तद् अत्र लिख—जो तू लिखना चाहता है, वह यहाँ लिख।
५. नवनीतं विक्रीय घृतं च क्रीत्वा आगच्छ—मक्खन बेचकर और घी खरीदकर आ।

'१. अहं+अपि' इन दो शब्दों का जोड़ 'अहमपि' ऐसा होता है। शब्द के अन्त में जो नुक्ता होता है उसको अनुस्वार कहते हैं, जैसे 'घृतं, दुग्धं' इत्यादि इस अनुस्वार के आगे स्वर आने से इसका 'म्' बनता है; जैसे 'दुग्धं+अस्ति' इसका दुग्धम् अस्ति (दुग्धमस्ति) ऐसा हो जाता है।

६. अद्यश्व आपणे पुराणं मलिनं च घृतमस्ति—आजकल बाजार में पुराना और मलिन घी है।

७. यदि तत्र नवीनं शुद्ध स्वादु च घृतं नास्ति—अगर वहां नया, शुद्ध और मजेदार घी नहीं है।

८. तर्हि तद् न आनय—तो उसको न ला।

९. अहं शुद्धम् एव घृतं भक्षयामि—मैं शुद्ध ही घी खाता हूं।

पूर्व स्थल में कहा है कि स्वर आगे आने से अनुस्वार का 'म्' बन जाता है। उदाहरण देखिए—

अहं अस्मि	अहमस्मि	मैं हूं
त्वं इच्छसि	त्वमिच्छसि	तू चाहता है
दुग्धं आनय	दुग्धमानय	दूध ला
घृतं उत्तमं अस्ति	घृतमुत्तमस्ति	घी उत्तम है।
त्वं औषधं आनय	त्वमौषधमानय	तू दवा ले आ।

इसी प्रकार संस्कृत में जोड़ होते हैं। इसको देखकर पाठकों को घबराना नहीं चाहिए। इस समय तक हमने जोड़ (जिनको संस्कृत में सन्धि कहते हैं) नहीं बताए, परन्तु अब बताना चाहते हैं। यदि पाठक थोड़ा-सा ध्यान देंगे तो उनको कोई कठिनता प्रतीत नहीं होगी। जो-जो जोड़ (सन्धि) हम देंगे, उनके अलग-अलग शब्द हम नीचे टिप्पणी में देंगे जिससे पाठक यह जान सकेंगे कि किन-किन शब्दों का वह जोड़ है। जैसे—त्वमत्र[1] आगच्छ—तू यहां आ। सः दुग्धमानयति[2]—वह दूध लाता है। त्वमिदानीं[3] कुत्र गच्छसि—तू अब कहां जाता है? अहमत्र[4] तिष्ठामि—मैं यहां ठहरता हूं।

---

१. त्वम् अत्र। २. दुग्धम् आनयति। ३. त्वम् इदानीम्। ४. अहम् अत्र।

जहां-जहां इस प्रकार का जोड़ आएगा, वहां-वहां पाठकों को सोचना चाहिए कि किन-किन शब्दों का यह जोड़ (सन्धि) हो सकता है।

पाठकों ने इस समय तक पुंल्लिग शब्दों को चलाने का प्रकार जान लिया है। प्रायः पन्द्रह शब्द सातों विभक्तियों में चलाकर बताए हैं। अगर पाठक उनको ठीक स्मरण रखेंगे तो उनके समान शब्दों के रूप बनाने में उनके लिए कोई कठिनाई नहीं होगी। अब स्त्रीलिंग शब्दों के विषय में पाठकों को ध्यान में रखना चाहिए कि कोई अकारान्त शब्द स्त्रीलिंग में नहीं है। आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग हुआ करते हैं। क्षमा, कृपा, दया, भार्या, जाया, बालिका, गंगा, ब्रह्म-पुत्रा, विद्या, माला, लता, प्रविष्टा इत्यादि शब्द आकारान्त हैं। इनको आकारान्त कहते हैं क्योंकि इनके अन्त में 'आ' रहता है। अब इनके रूप देखिए।

आकारान्त स्त्रीलिंग 'विद्या' शब्द

१. प्रथमा	विद्या	विद्या
२. द्वितीया	विद्याम्	विद्या को
३. तृतीया	विद्यया	विद्या ने
४. चतुर्थी	विद्यायै	विद्या के लिए
५. पंचमी	विद्यायाः	विद्या से
६. षष्ठी	विद्यायाः	विद्या का
७. सप्तमी	विद्यायाम्	विद्या में
सम्बोधन	(हे) विद्ये	(हे) विद्ये

'विद्या' के समान चलनेवाले आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

कृपा—दया   **दया—कृपा, मेहरबानी।**

भार्या—स्त्री ।
बालिका—लड़की ।
यमुना—यमुना नदी ।
शाला—गृह, घर ।
लता—बेल ।
पुत्रिका—लड़की ।
प्रतिष्ठा—यश ।
शर्करा—खांड, शक्कर ।
धर्मशाला—धर्मशाला, सराय ।
बाला—लड़की ।
गङ्गा—गंगा नदी ।
अम्बा—माता ।
ब्रह्मपुत्रा—ब्रह्मपुत्र नदी ।
माला—माला ।
जाया—स्त्री, धर्मपत्नी
सुता—लड़की ।
पाठशाला—पाठशाला ।
प्रपा—प्याऊ ।

वाक्य

१. दयां कुरु—दया कर ।
२. भार्यया सह रामः वनं गतः—स्त्री के साथ राम वन को गया ।
३. यमुनायाः जलम् आनीतम्—यमुना का जल लाया ।
४. बालिकायाः वस्त्रम् आनय—लड़की का कपड़ा ले आ ।
५. सुता कुत्र गता—लड़की कहां गई ।
६. दुग्धाय शर्करां देहि—दूध के लिए शक्कर दे ।
७. शर्करया मिष्टं भवति—शक्कर से मीठा होता है ।
८. धर्मशालायाः रक्षकः कुत्र अस्ति धर्मशाला का चौकीदार कहां है ?
९. अम्बा बालिकया सह अद्य ग्रामं न गता—माता लड़की के साथ आज गांव को नहीं गई ।
१०. गङ्गायाः जलम् आनयामि—गंगा का जल लाता हूं ।
११. ईश्वरस्य दया अस्ति—ईश्वर की दया है ।

१२. ईश्वरस्य कृपया सर्वं शुभं भवति—ईश्वर की कृपा से सब शुभ होता है।

१३. तस्य शाला उत्तमा अस्ति—उसका मकान उत्तम है।

१४. या कृष्णस्य सुता सा पालकस्य भार्या—जो कृष्ण की लड़की (है) वह पालक की धर्मपत्नी (है)।

१५. त्वया कस्मात् स्थानात् सा पुष्पमाला आनीता—तुम किस स्थान से वह फूलों की माला लाए।

सरल वाक्य

१. सः तत्र तिष्ठति। २. अहम् अत्र क्रीडामि। ३. सः पाठशालां गत्वा पुस्तकं पठति। ४. त्वं शुद्धं गङ्गाजलं पिबसि। ५. त्वं तत् स्मरसि किम्? ६. सः स्वगृहं गत्वा अन्नं भक्षयति। ७. रामः तम् एवं वदति। ८. शृणु, इदानीं हरिः दिल्लीनगरं गन्तुम् इच्छति। ९. इदानीं तत्र न गन्तव्यम् इति त्वं तं कथय। १०. नरः ग्रामं गच्छति किम्! अथ किम्? सः अद्य एव ग्रामं गमिष्यति। ११. चौरः धनं चोरयति। १२. पण्डितः पुस्तकं पठति। १३. धेनुः वनं गमिष्यति। १४. सा पुत्रिका पुष्पमालां करोति। १५. रामः फलं भक्षयति। १६. अद्य सा बालिका अम्बया सह वनं गता। १७. रामेण सह लक्ष्मणः वनं गतः। सीतया सह रामः वनं गतः।

पाठ २४

शब्द

पादुके—जूता, दो खड़ाऊं।
वृषभः—बैल।
मेषः—मेढ़ा।
शृणोति—वह सुनता है।

शृणोषि—तू सुनता है।
मस्तकपीडा—सिर दर्द।
घटिका—घड़ी।
श्रुत्वा—सुनकर।
श्रुतम्—सुना।
शृणोमि—सुनता हूं।
धूम्रयानम्—रेलगाड़ी।
अश्वः—घोड़ा।
श्रोतुम्—सुनने के लिए।
स्मरणपुस्तकम्—डायरी।

वाक्य

१. मम पादुके गृहाण तस्मै च देहि—मेरी दो खड़ाऊं ले और उसको दे।
२. पश्य, तत् धूम्रयानं कथं शीघ्रं गच्छति—देख, वह रेलगाड़ी कैसी जल्दी जाती है।
३. मेषः धावति परन्तु अश्वः तिष्ठति—मेढ़ा दौड़ता है, परन्तु घोड़ा खड़ा है।
४. इह इदानीं श्रीकृष्णः हवनार्थम् आगमिष्यति—यहां अब श्रीकृष्ण हवन के लिए आएगा।
५. सः इदानीं सन्ध्याम् उपास्य पठनम् आरभते—वह अब सन्ध्या करके पढ़ना आरम्भ करता है।
६. त्वं माम् अधुना किम् आज्ञापयसि—तू अब मुझे क्या आज्ञा करता है।
७. शृणु, त्वम् इदानीं वनं न गच्छ, अत्र एव तिष्ठ—सुन, तू अब वन को न जा (और) यहां ही ठहर।
८. किं त्वं कुशलः असि इदानीम्—क्या तू नीरोग है अब ?
९. अहमिदानीं[1] कुशलः अस्मि—मैं अब स्वस्थ हूं।
१०. भो मित्र ! तण्डुलाः कुत्र सन्ति—हे मित्र ! चावल कहां हैं ?
११. सः यथा श्रुतमस्ति[2] तथा एव वदति—वह जैसा सुनता है वैसा ही बोलता है।

---

१. अहम् इदानीम्। २. श्रुतम् अस्ति।

१२. यथा-यथा सः मालिन्यं त्यजति, तथा-तथा शुद्धः भवति—जैसे-जैसे वह मलिनता छोड़ता है, वैसे-वैसे शुद्ध होता है।

शब्द

कथाम्—कथा को
व्याख्यानम्—व्याख्यान को।
श्रवणाय—सुनने के लिए।
शिवालये—शिवालय में।
दास्यसि—तू देगा।
त्यक्त्वा—छोड़कर।
स्थापय—रख।
उपदेशम्—उपदेश को।
पण्डितः—पंडित, विद्वान्।
उद्याने—बाग में।
दास्यति—वह देगा।
दास्यामि—दूंगा।
दृष्ट्वा—देखकर।
चल—चल, जा।

वाक्य

१. त्वम् इदानीं कुत्र गन्तुम् इच्छसि—तू अब कहां जाना चाहता है?
२. अहमद्य[1] उपदेशं श्रोतुं गच्छामि—मैं आज उपदेश सुनने के लिए जाता हूं।
३. कुत्र अस्ति उपदेशः अद्य—कहां है उपदेश आज?
४. तत्र उद्याने पण्डितः विश्वामित्रः उपदेशं दास्यति—वहां बाग में पंडित विश्वामित्र उपदेश देगा।
५. न न, उद्याने उपदेशः नास्ति, शिवालये अस्ति—नहीं नहीं, बाग में उपदेश नहीं है, शिवालय में है।
६. कः वर व्याख्यानं ददाति—कौन अच्छा व्याख्यान देता है।
७. पण्डितवरः देवव्रतः एव उत्तमं व्याख्यानं ददाति—पण्डित देवव्रत ही अच्छा व्याख्यान देता है।
८. व्याख्यानश्रवणाय आलस्यं त्यक्त्वा गच्छ—व्याख्यान सुनने के

---

१. अहम् अद्य।

लिए आलस्य छोड़कर जा।

९. प्रथमं शुद्धं जलम् आनय, पश्चाद् भोजनं कुरु—पहले शुद्ध जल ला, पीछे भोजन कर।

१०. सः अश्वं दृष्ट्वा किं स्मरति—वह घोड़े को देखकर क्या याद करता है ?

११. तत्र वायुः नास्ति, जलमपि[1] नैवास्ति[2]—वहां वायु नहीं है, जल भी नहीं है।

१२. मन्दिरे मार्जारः नास्ति, अतः दुग्धं तत्र स्थापय—मन्दिर में बिल्ली नहीं है, इसलिए दूध वहां रख।

१३. त्वं गोदुग्धं गृहीत्वा एव शिवालयं गच्छ—तू गाय का दूध लेकर ही शिवालय को जा।

१४. सः पण्डितः कुत्र अस्ति इदानीम्—वह पण्डित कहां है अब ?

आकारान्त स्त्रीलिंग 'प्रतिज्ञा' शब्द

१. प्रथमा	प्रतिज्ञा	प्रतिज्ञा
२. द्वितीया	प्रतिज्ञाम्	प्रतिज्ञा को
३. तृतीया	प्रतिज्ञया	प्रतिज्ञा से
४. चतुर्थी	प्रतिज्ञायै	प्रतिज्ञा के लिए
५. पंचमी	प्रतिज्ञायाः	प्रतिज्ञा से
६. षष्ठी	,,	प्रतिज्ञा का
७. सप्तमी	प्रतिज्ञायाम्	प्रतिज्ञा में
सम्बोधन	(हे) प्रतिज्ञे	(हे) प्रतिज्ञा

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के पंचमी तथा षष्ठी के एकवचन के रूप एक जैसे ही होते हैं। इसलिए षष्ठी के रूप के स्थान पर

१. जलम् अपि। २. न-एव-अस्ति।

(,,) ऐसा चिह्न किया है। इसका मतलब यह है कि यहां का रूप ऊपर के रूप के समान ही होता है। आगे भी जहां-जहां रूपों के नीचे (,,) ऐसा चिह्न दिया होगा, वहां पाठक समझें कि यहां का रूप पूर्ववत् ही होता है।

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

इच्छा—ख्वाहिश।
चिन्ता—फिकर।
दीक्षा—व्रत।
रेखा—लकीर।
निद्रा—नींद।
पाषाणपट्टिका—स्लेट।
मलिनता—गंदगी।
देवता—देवी।
आज्ञा—हुक्म।
जरा—बुढापा।
पत्रिका—पत्र, खत।
रूक्षता—रुखापन।
हरिद्रा—हल्दी।
कामात्मता—विषयीपन, कामीपन।
जिह्वा—जबान।
मुक्ता—मोती।
कन्या—लड़की।
पूजा—सत्कार।
मूर्खता—पागलपन।
क्षुधा—भूख।
गीता—गीता।
चेष्टा—प्रयत्न।
वाटिका—बाड़ी, बगीचा।
अपूजा—सत्कार न करना।
पूपला—खांड की पूरी।
सन्ध्या—ध्यान।

वाक्य

१. सः इच्छां करोति—वह इच्छा करता है।
२. त्वया सा मुक्ता कुत्र स्थापिता—तूने वह मोती कहां रखा ?
३. गीतायां किम् उक्तम् ? गीता में क्या कहा है ?
४. तस्य आज्ञया अहम् इदं कार्यं करोमि—उसको आज्ञा से मैं यह कार्य करता हूं।

५. त्वं देवतायाः पूजां कुरु—तू देवता की पूजा कर ।
६. तेन पत्रिका प्रेषिता किम्—उसने पत्र भेजा है क्या ?
७. जरायै किम् औषधम्—बुढ़ापे के लिए क्या दवा ?
८. हरिद्रायाः पीतः वर्णः—हल्दी का पीला रंग ।
९. तस्य कन्यया मुक्ता न आनीता—उसकी लड़की से मोती नहीं लाया गया ।
१०. मनुष्यः जिह्वया वदति—मनुष्य जबान से बोलता है ।

सरल वाक्य

१. रामः मित्रेण सह कुत्र तिष्ठति ? आचार्यः शिष्येण सह वदति । गुरुः कुमारिकया सह कथां वदति । २. कन्यया सह सः मनुष्यः उद्यानं गच्छति । किं सः मनुष्यः प्रतिदिनं कन्यया सह उद्यानं गच्छति ? अथ किम्, सः पुरुषः प्रतिदिनं सायङ्काले पंचवादनसमये भ्रमणाय कन्यया सह उद्यानं गच्छति ? ३. तदा तत्र त्वम् अपि गच्छसि किम् ? अथ किम्, अहम् अपि तस्मिन् एव समये उद्यानं गच्छामि? ४. रामाय नमः । ईश्वराय नमः । नमः ते । नमस्ते । तस्मै नमः । अम्बायै नमः । ५. वृक्षात् फलं पतति । पर्वतात् वृक्षः पतितः । नगरात् जनः आगच्छति । तडागात् जलम् आनयामि । उद्यानात् पुष्पम् आनयति । आपणात् वस्त्रम् आनय ।

पाठ २५

शब्द

स्थापयति—वह रखता है । स्थापयसि—तू रखता है ।
स्थापयामि—रखता हूं । प्रत्येकम्—हरएक ।
नित्यम्—नित्य । परमेश्वरम्—ईश्वर को ।

कृतम्—किया।
स्रवति—चूता है।
स्थापयितुम्—रखने के लिए।
मञ्चः—मेज, मंजा।
गतः—गया।
संस्थाप्य—रखकर।
स्थापनम्—रखना।
स्थापयित्वा—रखकर।
स्थापनाय—रखने के लिए।
विष्टरः—कुरसी, आसन।
आगतः—आ गया।
विरोधः—मुकाबला।

वाक्य

१. नित्यं परमेश्वरं स्मृत्वा कर्म कुरु—नित्य परमेश्वर को स्मरण करके कार्य कर।
२. सः मम पुस्तकं कुत्र स्थापयति—वह मेरी पुस्तक कहां रखता है?
३. यत्र मंचः अस्ति तत्र सः तत् स्थापयति—जहां मेज है वहां वह उसे रखता है।
४. सः तत्र दीपं स्थापयितुं गतः—वह वहां दीप रखने के लिए गया है।
५. त्वं मसीपात्रं कुत्र स्थापयितुम् इच्छसि—तू दवात कहां रखना चाहता है?
६. सः तत्र फलं स्थापयित्वा अत्र आगतः—वह वहां फल को रखकर यहां आया।
७. कृतं कर्म स्मर—किया कर्म स्मरण कर।
८. अत्र स्थित्वा कर्म कुरु नोचेत् अत्र न तिष्ठ—यहां रहकर कार्य कर, नहीं तो यहां न ठहर।
९. यदि वरं कर्म कर्तुमिच्छसि[1] तर्हि एव अत्र तिष्ठ—अगर श्रेष्ठ कार्य करना चाहता है तो ही यहां रह।

---

१. कर्तुम् इच्छसि।

१०. नोचेत् यत्र इच्छसि तत्र द्रुतं गच्छ—नहीं तो जहां चाहता है वहां शीघ्र जा।

११. अहं निर्धनः अस्मि, पुस्तकं पठितुमिच्छामि[1]—मैं निर्धन हूं पुस्तक पढ़ना चाहता हूं।

१२. सः मञ्चं गृहीत्वा अत्र एव आगच्छति—वह मेज लेकर यहां ही आता है।

शब्द

आलेख्यम्—तसवीर। कस्य—किसका।
तस्य—उसका। उपविश—बैठ।
उपविशति—(वह) बैठता है। उपविशसि—(तू) बैठता है।
उपविशामि—बैठता हूं। उपविश्य—बैठकर।

वाक्य

१. एतत् कस्य आलेख्यम् अस्ति—यह किसका चित्र है?

२. सः पुरुषः श्रुतमपि[2] न स्मरति—वह मनुष्य सुना हुआ भी नहीं स्मरण रखता।

३. त्वं तस्य व्याख्यानं शृणोषि किम्—तू उसका व्याख्यान सुनता है क्या?

४. अत्र एव उपविश व्याख्यानं च शृणु—यहां ही बैठ और व्याख्यान सुन।

५. सः तत्र एव उपविश्य सर्वं पश्यति—वह वहां ही बैठकर सब कुछ देखता है।

६. कः अत्र उपविश्य आलेख्यं करोति—कौन यहां बैठकर तसवीर खींचता है?

---

१. पठितुम् इच्छामि। २. श्रुतम् अपि।

७. श्रीधरः अत्र स्थित्वा आलेख्यम् आलिखति—श्रीधर यहां ठहर-कर चित्र खींचता है।

८. सः उक्तमेव[1] पुनः पुनः वदति—वह कहे हुए को ही बार-बार बोलता है।

९. यदि त्वम् अत्र एव उपविशसि तर्हि अहं तुभ्यं द्रव्यं दास्यामि—अगर तू यहीं बैठता है तो मैं तुझे धन दूंगा।

१०. सः किमर्थं सदा शिवालयं गच्छति—वह क्यों हमेशा मन्दिर जाता है?

११. सः तत्र गत्वा सन्ध्यामुपास्ते[2], ईश्वरं च स्मरति—वह वहां जाकर सन्ध्या करता है और ईश्वर का स्मरण करता है।

१२. अहं स्वरथम् अत्र न स्थापयामि—मैं अपनी गाड़ी यहां नहीं रखूंगा।

१३. मम विष्टरः कुत्र अस्ति—मेरी कुर्सी कहां है?

१४. यत्र ह्यः स्थापितः तत्र एव अस्ति—जहां कल रखी थी वहां ही है।

ईकारान्त स्त्रीलिंग 'नदी' शब्द

१. प्रथमा	नदी	नदी
२. द्वितीया	नदीम्	नदी को
३. तृतीया	नद्या	नदी से
४. चतुर्थी	नद्यै	नदी के लिए
५. पंचमी	नद्याः	नदी से
६. षष्ठी	,,	नदी का
७. सप्तमी	नद्याम्	नदी में
सम्बोधन	(हे) नदि	हे नदि

---

१. उक्तम् एव। २. सन्ध्याम् उपास्ते।

'नदी' शब्द के समान चलने वाले शब्द

मातुलानी, मातुली—मामी। मातृभगिनी—माता की बहिन मासी।
पितृभगिनी—पिता की बहिन।
मातामही—माता की माता, नानी। भगिनी—बहिन।
उर्वी—पृथ्वी। ब्राह्मणी—ब्राह्मण की स्त्री।
पितामही—पिता की माता, दादी। कुण्डलिनी—जलेबी।
कमलिनी—कमल की बेल। कुमारी—लड़की।

इनके सब विभक्तियों के रूप बनाकर पाठक उनसे बहुत-से वाक्य बना सकते हैं।

सरल वाक्य

१. यज्ञदत्तात् देवदत्तः पुस्तकं गृह्णाति। २. सोमदत्तात् ब्राह्मणः धनं गृह्णाति। सः ब्राह्मणः तडागात् रक्तं कमलम् आनयति। ३. रामस्य रावणेन सह युद्धं भवति। रावणस्य रामेण सह युद्धं भवति। भीमस्य जरासन्धेन सह युद्धं जातम्[1]। जरासन्धस्य भीमसेनेन सह युद्धं जातम्। ४. तत्र हरिः अस्ति। तं हरिं पश्य। हरिणा पुस्तकं लिखितम्। हरये नमः। हरेः[2] लेखनीम् आनय। इदं हरेः[3] गृहम् अस्ति। हरौ पापं नास्ति।

पाठ २६

शब्द

आक्रोशति—चिल्लाता है। पुरी—नगर, शहर।
गर्जति—(वह) गरजता है। गर्जसि—(तू) गरजता है।
गर्जामि—गरजता हूं। कीदृशम्—कैसा।

---

१. जातम्—हो गया। २. हरेः—हरि से। ३. हरेः—हरि का।

बाढम्—निश्चय से ।
वलयम्—गोल ।
उपधिः—स्टूल ।
तूष्णीम्—चुपचाप ।
महिषः—भैंसा ।
अङ्गनम्—आंगन ।
घटिका—घटिका ।
शूकरः—सूअर ।

वाक्य

१. वने सिंहः गर्जति, ग्रामे शूकरः गर्जति—वन में शेर गरजता है, ग्राम में सूअर गरजता है ।
२. त्वं वृथा किमर्थं गर्जसि—तू व्यर्थ क्यों गरजता है ?
३. आकाशे मेघः अधुना गर्जति—आकाश में मेघ अब गरजता है ।
४. उद्याने सिंहः सायंप्रातः च गर्जति—बाग में शेर सायंकाल तथा प्रात:काल गरजता है ।
५. यदि त्वं तत्र न गमिष्यसि तर्हि तत् कथं ज्ञास्यसि—अगर तू वहां न जाएगा तो उसे कैसे जानेगा ?
६. त्वम् इदानीमेव[1] औषधालयं गच्छ औषधं च आनय—तू अभी दवाखाने को जा और दवा ले आ ।
७. यदि त्वं मुद्गौदनं भक्षयिष्यसि तर्हि स्वस्थः भविष्यसि—अगर तू खिचड़ी खाएगा तो अच्छा हो जाएगा ।
८. सः दुग्धम् अपूपं च भक्षयितुमिच्छति[2]—वह दूध और पेड़ा खाना चाहता है ।
९. सिंहः कदापि अन्नं न भक्षयति—शेर कभी अन्न नहीं खाता है ।
१०. अहम् इदानीमेव स्नात्वा शीघ्रमागमिष्यामि[3]—मैं अभी स्नान करके जल्दी आऊंगा ।
११. शुद्धं धौतं वस्त्रं देहि—शुद्ध धोया हुआ वस्त्र दे ।

१. इदानीम् एव । २. भक्षयितुम् इच्छति । ३. शीघ्रम् आगमिष्यामि ।

शब्द

भोजनात्—भोजन से ।
परिचारकः—नौकर ।
ग्रामात्—गांव से ।
कूपात्—कूएं से ।
अभ्यन्तरे—अन्दर ।
नगरात्—शहर से ।
गृहात्—घर से ।
प्रायः—बहुधा ।

वाक्य

१. ब्रूहि, त्वं प्रातः सन्ध्यां करोषि न वा बोल, तू सवेरे सन्ध्या करता है या नहीं ?
२. वद, त्वं तत् पुस्तकं पठसि न वा—बतला, तू वह पुस्तक पढ़ता है या नहीं ?
३. यद्, अहं त्वामाज्ञापयामि तत् कर्म शीघ्रं कुरु—जो मैं तुझे आज्ञा करता हूं वह जल्दी कर ।
४. नोचेत् त्वाम् अधुना एव ताडयिष्यामि—नहीं तो तुझे अभी पीटूंगा ।
५. अहं भोजनात् पूर्वं किमपि[1] कर्म कर्तुं न इच्छामि—मैं भोजन के पूर्व कोई भी कार्य नहीं करना चाहता ।
६. हे परिचारक ! कपाटमुद्घाटय अहमभ्यन्तरे[2] आगन्तुमिच्छामि[3]—हे नौकर ! दरवाजा खोल, मैं अन्दर आना चाहता हूं ।
७. यद् अहं वदामि तत् न शृणोषि किम्—जो मैं बोलता हूं वह तू नहीं सुनता है क्या ?
८. यदि त्वम् उच्चैः वदसि तदा अहं तव भाषणं श्रोतुं शक्नोमि—अगर तू ऊंचा बोलता है तो मैं तेरी बात सुन सकता हूं ।

---

१. किम् अपि । २. अहम् अभ्यन्तरे । ३. आगन्तुम् इच्छामि ।

९. सः नगरात् नगरं गच्छति—वह (एक) शहर से (दूसरे) शहर को जाता है।

१०. सः ग्रामाद् बहिः गत्वा वनं गतः—वह गांव से बाहर जाकर वन को गया।

११. सः मनुष्यः कूपात् जलमानयति[1]—वह मनुष्य कुएं से जल लाता है।

१२. सः इदानीमेव[2] गृहात् बहिर्गतः—वह अभी घर से बाहर गया है।

१३. सः पुनः कदा गृहमागमिष्यति[3]—वह फिर घर कब आएगा।

१४. सः प्रायः सायङ्कालमागमिष्यति[4]—वह प्रायः शाम को आएगा।

१५. सुतः रक्षति—लड़का रक्षा करता है।

१६. कुमारी तिष्ठति—लड़की ठहरती है।

१७. अहमत्र लिखामि—मैं यहां लिखता हूं।

१८. मातामही नीचैः स्वपिति—माता की माता (नानी) नीचे सोती है।

१९. तस्य भ्राता वरं न लिखति—उसका भाई अच्छा नहीं लिखता।

२०. कः त्वम्—कौन तू है?

२१. सः कः अस्ति—वह कौन है?

२२. सः दूरं तिष्ठति—वह दूर ठहरता है।

२३. तव उपानत् कुत्र अस्ति—तेरा जूता कहां है?

२४. तस्य भ्राता शीघ्रं न आगमिष्यति—उसका भाई जल्दी नहीं आएगा।

२५. एष कः अस्ति—यह कौन है?

२६. तव भ्राता क्व अस्ति—तेरा भाई कहां है?

२७. सः किं लिखति—वह क्या लिखता है?

---

१. जलम् आनयति। २. इदानीम् एव। ३. गृहम् आगमिष्यति। ४. सायङ्कालम् आगमिष्यति।

सरल वाक्य

१. तस्मै कुण्डलिनीं देहि। २. तस्य सुतः दुग्धम् पिबति। ३. तस्य भ्राता गृहं न गच्छति। ४. धनं दत्त्वा फलं गृहाण। ५. मित्राय पत्रं लिख। ६. तस्मै पुष्पं देहि। ७. यदा त्वं स्वपिषि तदा तव भ्राता कुत्र भवति ? ८. सः वनं गत्वा फलं भक्षयति। ९. यदा सः वनं गतः तदा अहं न गतः। १०. सः मां न ताडयति। ११. सः तम् एव किमर्थं ताडयति ? १२. त्वम् तस्य पुस्तकं गृहीत्वा शीघ्रम् अत्र आगच्छ। १३. सः त्वां न जानाति किम् ? १४. तस्य पुत्रः पुस्तकं चोरयति। १५. कः तुभ्यम् अद्य भोजनं दास्यति ?

पाठ २७

शब्द

अटति—वह घूमता है।
अटसि—तू घूमता है।
अटामि—घूमता हूं।
अटित्वा—घूमकर।
अटितुम्—घूमने के लिए।
अटिष्यति—(वह) घूमेगा।
अटिष्यसि—तू घूमेगा।
अटिष्यामि—घूमूंगा।
पक्वम्—पका हुआ।
पठितम्—पढ़ा हुआ।

वाक्य

१. कृष्णचन्द्रः नित्यं ग्रामाद् ग्रामम् अटति—कृष्णचन्द्र नित्य (एक) गांव से (दूसरे) गांव को घूमता है।
२. तं कुमारं पश्य किं सः करोति इति—उस लड़के को देख कि वह क्या करता है।
३. सः भोजनाय पक्वमन्नं[1] पानाय जलं च इच्छति—वह भोजन के

---

१. पक्वम् अन्नम्।

लिए पका हुआ अन्न और पीने के लिए जल चाहता है।

४. **सः पठितमपि पाठं न स्मरति**—वह पढ़े हुए पाठ को भी नहीं स्मरण करता।

५. **सः द्रव्यं दत्त्वा धान्यं क्रीणाति**—वह धन देकर धान खरीदता है।

६. **सः रात्रौ किमपि न भक्षयति**—वह रात्रि में कुछ भी नहीं खाता।

७. **सूर्यं दृष्ट्वा जनः उत्तिष्ठति**—सूर्य को देखकर मनुष्य उठता है।

८. **तथा तारकान् दृष्ट्वा मनुष्यः स्वपिति**—वैसे सितारे देखकर मनुष्य सोता है।

९. **सः सर्वदा वृथा अटितुमिच्छति**[1]—वह हमेशा व्यर्थ घूमना चाहता है।

१०. **सः इदानीं किं करोति इति अहं ज्ञातुमिच्छामि**[2]—वह अब क्या करता है यह मैं जानना चाहता हूं।

११. **शीघ्रं रथमानय**[3], **अहम् अन्यं नगरं गन्तुमिच्छामि**[4]—जल्दी गाड़ी ले आ मैं दूसरे नगर को जाना चाहता हूं।

१२. **इदानीं मेघः गर्जति, अतः बहिर् न गच्छ**—अब मेघ गरजता है, इस कारण बाहर न जा।

शब्द

वटुः—बालक।	**पीडयति**—(वह) दुःख देता है।
पीडयसि—(तू) दुःख देता है।	**पीडयामि**—दुःख देता हूं।
ऊर्ध्वम्—ऊपर, पश्चात्।	**उपरि**—ऊपर।
यतिः—संन्यासी।	**बहु**—बहुत।
वृक्षस्य—वृक्ष के।	**श्रान्तम्**—थका हुआ।
प्रतीयते—मालूम होता है।	**खण्डः**—टुकड़ा।

---

१. अटितुम् इच्छति। २. ज्ञातुम् इच्छामि। ३. रथम् आनय। ४. गन्तुम् इच्छामि।

वाक्य

१. पश्य, सः बालः कथं शीघ्रं धावति—देख, वह बालक कैसा जल्दी दौड़ता है।
२. भो मित्र ! इदानीं मां बुभुक्षा अतीव पीडयति—हे मित्र ! अब मुझे भूख बहुत ही दुःख देती है।
३. त्वं मह्यं पक्वम् अन्नं दातुं शक्नोषि किम्—तू मुझे पका हुआ अन्न दे सकता है क्या ?
४. भोजनाद् ऊर्ध्वं त्वं शीतं जलमपि[1] पातुमिच्छसि[2] किम्—भोजन के पश्चात् तू ठण्डा जल भी पीना चाहता है क्या ?
५. यदि त्वं शीतं जलमपि आनेतुं शक्नोषि तर्हि शीघ्रम् आनय—अगर तू ठण्डा जल भी ला सकता है तो जल्दी ले आ।
६. यत् त्वम् इच्छसि तत् अहम् आनेष्यामि—जो तू चाहता है वह मैं लाऊंगा।
७. एतद् अन्नम् अतीव उष्णम् अस्ति—यह अन्न बहुत ही गरम है।
८. मम भ्राता इदानीं कुत्र गतः, न जानामि—मेरा भाई अब कहां गया है, (मैं) नहीं जानता।
९. सः उद्याने वृक्षस्य अधः इदानीं स्वपिति—वह बाग में वृक्ष के नीचे अब सोता है।
१०. सः बहु कर्म कृत्वा श्रान्तः इति प्रतीयते—वह बहुत कार्य करके थका है, ऐसा मालूम होता है।
११. सः तत्र तूष्णीमेव[3] स्थितः, किमपि[4] न वदति—वह वहां चुपचाप ही बैठा है, कुछ भी नहीं बोलता।
१२. सः स्वपाठं स्मरति इति प्रतीयते—वह अपना पाठ स्मरण करता

---

१. जलम् अपि। २. पातुम् इच्छसि। ३. तूष्णीम् एव। ४. किम् अपि।

है, ऐसा मालूम होता है।

१३. सः स्वगृहमिदानीं[1] रक्षति अतः बहिर् गन्तुं न शक्नोति—वह अब अपने घर की रक्षा करता है इसलिए बाहर नहीं जा सकता।

उकारान्त स्त्रीलिंग 'धेनु' शब्द

१. प्रथमा	धेनुः	गौ
२. द्वितीया	धेनुम्	गौ को
३. तृतीया	धेन्वा	गौ से
४. चतुर्थी	धेनवे धेन्वै	गौ के लिए
५. पंचमी	धेनोः धेन्वाः	गौ से
६. षष्ठी	धेनोः धेन्वाः	गौ का
७. सप्तमी	धेनौ धेन्वाम्	गौ में
सम्बोधन	(हे) धेनो	हे गौ

चतुर्थी से सप्तमी पर्यन्त चारों विभक्तियों में एकवचन के रूप दो-दो होते हैं, यह बात ध्यान में अवश्य रखनी चाहिए।

शब्द

रज्जुः—रस्सा। तनुः—शरीर। हनुः—ठुड्डी।

वाक्य

१. मातृदेवो भव—माता को देवता समझ।
२. पितृदेवो भव—पिता को देवता समझ।

---

१. स्वगृहम् इदानीम्।

३. आचार्यदेवो भव—गुरु को देवता समझ।

४. अतिथिदेवो भव—अतिथि को देवता मान।

५. सत्यं ब्रूयात्—सच बोल।

६. प्रियं ब्रूयात्—प्रिय बोल।

७. सत्यम् अप्रियं न ब्रूयात्—अप्रिय सत्य न बोल।

८. प्रियम् असत्यं न ब्रूयात्—प्रिय असत्य न बोल।

९. सत्यात् परः धर्मः नास्ति—सत्य से ऊंचा धर्म नहीं है।

१०. असत्यसमः नः कः अपि अधर्मः—असत्य के समान कोई अधर्म भी नहीं।

११. इह एहि—यहां आ।

१२. श्वः विसृष्टिः अस्ति—कल छुट्टी है।

१३. शास्त्रेण विना मनुष्यः अन्धः—शास्त्र के बिना मनुष्य अन्धा (है)।

सरल वाक्य-संवाद

रामः—हे मित्र ! त्वं कुत्र गच्छसि इदानीम् ?

विष्णुः—इदानीमहं भ्रमणार्थं गच्छामि।

रामः—कः समयः इदानीम् ?

विष्णुः—इदानीं सप्तवादनसमयः।

रामः—इदानीं भ्रमणाय बहिः गत्वा पुनः कदा स्वगृहमागमिष्यसि ?

विष्णुः—अहमवश्यमष्टवादनसमये स्वगृहमागमिष्यामि।

रामः—तर्हि अहमपि त्वया सह आगच्छामि।

विष्णुः—आगच्छ तर्हि शीघ्रम्। समयः गच्छति।

रामः—शीघ्रमागतः[1]। क्षणं तिष्ठ[2]।

१, जल्दी आया। २. क्षण-भर ठहर।

पाठ २८

'स्मर' के पूर्व 'वि' लगाने से 'विस्मर' रूप बनता है और उसका अर्थ भूलना होता है। देखिए—

स्मरति—स्मरण करता है।
स्मरसि—तू स्मरण करता है।
स्मरामि—स्मरण करता हूं।
स्मरिष्यति—वह स्मरण करेगा।
स्मरिष्यसि—तू स्मरण करेगा।
स्मरिष्यामि—स्मरण करूंगा।
त्वया—तूने।
मया—मैंने।
तेन—उसने।
विस्मरति—वह भूलता है।
विस्मरसि—तू भूलता है।
विस्मरामि—भूलता हूं।
विस्मरिष्यति—वह भूलेगा।
विस्मरिष्यसि—तू भूलेगा।
विस्मरिष्यामि—भूलूंगा।
बालकेन—लड़के से।
पुरुषेण—मनुष्य ने।
पुत्रेण—पुत्र से।

वाक्य

१. **यत् त्वं पठसि तत् सर्वदा स्मरसि न वा**—जो तू पढ़ता है, उसे स्मरण करता है या नहीं ?
२. **यद् अहं पठामि तत् कदापि न विस्मरामि**—जो मैं पढ़ता हूं, वह कभी नहीं भूलता।
३. **यदि त्वम् एवं विस्मरिष्यसि तर्हि कथं पठिष्यसि**—अगर तू इस प्रकार भूलेगा तो कैसे पढ़ेगा ?
४. **अतः ऊर्ध्वं न विस्मरिष्यामि**—(मैं) इसके पश्चात् नहीं भूलूंगा।
५. **यथा तव गुरुः आज्ञापयति तथा कुरु**—जैसा तेरा गुरु आज्ञा देता है वैसा कर।
६. **सः मां वृथा पीडयति**—वह मुझे व्यर्थ दुःख देता है।

७. अतः अहं तम् अवश्यं ताडयिष्यामि—इसलिए मैं उसको अवश्य पीटूंगा ।

८. सः महिषः कस्य अस्ति—वह भैंसा किसका है ?

९. सः महिषः नास्ति वृषभः अस्ति—वह भैंसा नहीं है, बैल है ।

शब्द

गतः—गया ।	आगतम्—आ गया ।
भक्षितम्—खाया ।	दत्तम्—दिया ।
स्वीकृतम्—स्वीकार किया ।	उक्तम्—कहा ।
नीतम्—ले गया ।	आनीतम्—लाया ।
कृतम्—किया ।	पीतम्—पिया ।
स्नातम्—स्नान किया ।	इष्टः—वांछित ।
जातम्—उत्पन्न हुआ ।	उत्थितम्—उठा हुआ ।
स्थितम्—ठहरा हुआ ।	ताडितम्—ताड़ना किया (पीटा) हुआ ।
गृहीतम्—लिया ।	आज्ञापितम्—आज्ञा की ।
स्मृतम्—स्मरण किया ।	विस्मृतम्—भूला ।
श्रुतम्—सुना ।	दृष्टम्—देखा ।
पठितम्—पढ़ा ।	उद्घाटितम्—खोला ।
पिहितम्—बन्द किया ।	लिखितम्—लिखा ।
ज्ञातम्—जाना ।	विज्ञातम्—जाना ।
प्रक्षालितम्—धोया ।	क्रीडितम्—खेला ।
रक्षितम्—रक्षा की ।	आरब्धम्—आरम्भ किया ।
क्रीतम्—खरीदा ।	विक्रीतम्—बेचा ।
अटितम्—घूमा ।	कथितम्—कहा ।

वाक्य

१. त्वया फलं नीतं किम्—क्या तू फल ले गया ?

२ मया तद् अद्यापि[1] न दृष्टम्—मैंने वह आज भी नहीं देखा।

३. बालकेन वस्त्रं प्रक्षालितम्—बालक ने कपड़ा धोया।

४. मया शोभनं कर्म आरब्धम्—मैंने श्रेष्ठ कार्य आरम्भ किया।

५. त्वया तत् कथं विस्मृतम्—तूने वह कैसे भुला दिया।

ऋकारान्त स्त्रीलिंग 'मातृ' शब्द

१. प्रथमा	माता	माता
२. द्वितीया	मातरम्	माता को
३. तृतीया	मात्रा	माता से
४. चतुर्थी	मात्रे	माता के लिए।
५. पंचमी	मातुः	माता से
६. षष्ठी	"	माता का
७. सप्तमी	मातरि	माता में
सम्बोधन	(हे) मातः	(हे) माता

माता शब्द के समान चलने वाले शब्द

दुहितृ—लड़की, पुत्री। यातृ—देवरानी।

ननन्दृ, ननान्दृ—ननद, पति की बहिन।

वाक्य

१. सर्वदा उद्यमः कर्तव्यः—सदा उद्योग करना चाहिए।

२. उद्यमेन एव सुखं भवति—उद्योग से ही सुख होता है।

३. भुक्त्वा बदरीफलं भक्षणीयम्—भोजन करके बेर खाना चाहिए।

४. अभुक्त्वा आमलकं पथ्यम्—भोजन न करके (भोजन से पूर्व)

---

१. अद्य+अपि।

आंवला हितकर (है)।

५. त्वं बालकेन सह क्रीडसि—तू लड़के के साथ खेलता है।

६. अहं तु न क्रीडामि—मैं तो नहीं खेलता।

७. सः तत्र किमर्थं कोलाहलं करोति—वह वहां क्यों शोर करता है?

८. यदि अहं क्रीडिष्यामि तर्हि गुरुः मां ताडयिष्यति—अगर मैं खेलूंगा तो गुरु मुझे मारेगा।

९. तव मातुः किम् नाम अस्ति—तेरी माता का क्या नाम है?

१०. तस्य पितुः नाम यज्ञदत्तशर्मा इति—उसके पिता का नाम यज्ञदत्त शर्मा ऐसा (है)।

११, दुग्धं पीत्वा फलं भक्षयामि—दूध पीकर फल खाऊंगा।

१२. अश्वः शीघ्रं धावति—घोड़ा तेज दौड़ता है।

सरल वाक्य

(१) किमर्थं त्वं तत्र गत्वा मोदकं भक्षयसि? (२) मया तत् कर्म न कृतम्। (३) दुर्जनः अन्यस्मै दुःखं ददाति। (४) सुजनः अन्यस्मै सुखं ददाति। (५) आकाशे रविं पश्य। (६) पाठशालायां सदा नियमेन गन्तव्यम्। (७) मित्रेण सह कलहः न कर्तव्यः। (८) यदा गुरुः पाठं पाठयति तदा तत्र चित्तं देयम्। (९) इतस्ततः न द्रष्टव्यम्। (१०) सशर्करं दुग्धं पेयम्।

शब्द

अन्यस्मै—दूसरों के लिए।
कलहः—झगड़ा।
देयम्—देने योग्य।
द्रष्टव्यम्—देखने योग्य।
पेयम्—पीने योग्य।
दुर्जनः—दुष्ट मनुष्य।
सुजनः—सज्जन।
नियमः—नियम।
चित्तम् मन, दिल।
इतस्ततः—इधर-उधर।

सशर्करम्—खांड से युक्त। बदरीफलम्—बेर।
कर्म—उद्योग।

सरल वाक्य

१. सः यत् पठति तत् कदाऽपि न विस्मरति। २. अहं यत् शृणोमि[1] तत् कदापि न विस्मरामि। ३. यथा गुरुः मां आज्ञापयति तथैव[2] अहं करोमि। ४. त्वं बालकेन सह किमर्थं क्रीडसि इदानीम्? ५. तं पुरुषं त्वं पश्यसि किम्? ६. यदा-यदा प्रकाशः न भवति तदा-तदा दीपं प्रज्वालय।[3]

पाठ २९

१. इदानीं त्वया किं कृतम्—अब तूने क्या किया।
२. गृहं गत्वा अधुना मया अन्नं भक्षितम्—घर जाकर अब मैंने अन्न खाया।
३. तस्य पुस्तकं त्वया नीतं किम्—उसकी पुस्तक तूने ली है क्या?
४. तेन तद् वरं कर्म अद्यापि न कृतम्—उसने वह अच्छा काम अब तक नहीं किया।
५. तत् सर्वं शोभनं जातम्—वह सब ठीक हुआ।
६. यत् त्वया पुस्तकं गृहीतं तत् मम अस्ति—जो तूने पुस्तक ली वह मेरी है।
७. यत् त्वया आज्ञापितं तत् मया न श्रुतम्—जो तूने आज्ञा की वह मैंने नहीं सुनी।
८. किम् त्वया न स्मृतं यत् तेन उक्तम्—क्या तुझे स्मरण नहीं जो उसने कहा था।

---

१. सुनता हूं। २. वैसा ही। ३. जलाओ।

९. यत् तेन उक्तं तत् सर्वं मया पूर्वम् एव विस्मृतम्—जो उसने कहा वह सब मैंने पहले ही भुला दिया।
१०. यत् त्वया दृष्टं तत् सर्वं कथय—जो तूने देखा वह सब कह।
११. यदि त्वया तद् ज्ञातं तत् मामपि वद—अगर तूने उसे जान लिया तो मुझे भी कह।
१२. यदि त्वया स्वगृहं रक्षितं तर्हि वरं कृतम्—अगर तूने अपने मकान की रक्षा की तो अच्छा किया।
१३. यदि त्वया अद्यापि वस्त्रं न विक्रीतम्—अगर तूने आज भी कपड़ा नहीं बेचा।
१४. तर्हि तद् मह्यं देहि—तो उसे मुझे दे।
१५. यदि त्वया इदानीं पर्यन्तं द्वारं न उद्घाटितम्—अगर तूने अब तक दरवाज़ा नहीं खोला।
१६. तत् केन उद्घाटितम् इति शीघ्रं कथय—तो किसने उसे खोला यह शीघ्र कह।
१७. तद् अहं न जानामि—वह मैं नहीं जानता।
१८. त्वया जलं पीतं किम्—तूने जल पिया क्या ?

शब्द

ग्लानिः—शिथिलता, घिन।
खलु—निश्चय से।
सत्यात्—सत्यता से।
प्रतिष्ठितम्—स्थित है।
अभ्युत्थानम्—उन्नति।
मूलम्—जड़।
परः—श्रेष्ठ, दूसरा, भिन्न।
पिष्टक्व—डबलरोटी।

वाक्य

१. यदा-यदा धर्मस्य ग्लानिः भवति—जब-जब धर्म की शिथिलता होती है।

२. तदा-तदा अधर्मस्य अभ्युत्थानं भवति—तब-तब अधर्म की उन्नति होती है।
३ सत्यात् परः धर्मः नास्ति—सत्य से श्रेष्ठ दूसरा धर्म नहीं है।
४. असत्यात् परः अधर्मः न कः अपि अस्ति—असत्य से बड़ा अधर्म कोई भी नहीं है।
५. त्वं सत्यं वदसि इति वरं करोषि—तू सत्य बोलता है, यह ठीक करता है।
६. कदापि असत्यं न वद—कभी भी असत्य न बोल।
७. सर्वं खलु धर्ममूलं सत्ये प्रतिष्ठितम्—निश्चय ही सब धर्म का मूल सत्य में स्थित है।
८. यः सत्यं न वदति सः असत्यवादी भवति—जो सत्य नहीं बोलता है वह असत्यवादी होता है।
९. असत्यात् दारिद्र्यं वरम् अस्ति—असत्य से गरीबी अच्छी है।
१०. त्वं सर्वदा असत्यं किमर्थं वदसि—तू सर्वदा असत्य क्यों बोलता है ?
११. मया कदापि असत्यं न उक्तम्—मैंने कभी असत्य नहीं कहा।
१२. यद् द्रव्यं मया रक्षितं तत् सर्वं त्वया त्यक्तम्—जो द्रव्य मैंने रखा था, वह सब तूने छोड़ दिया।
१३. पुनः पुनः श्रुतम् अपि लेखितुं न शक्नोमि—बार-बार सुने हुए को भी (मैं) लिख नहीं सकता।
१४. यत् जलं त्वया आनीतं तत् शुद्ध नास्ति—जो जल तू लाया है वह शुद्ध नहीं है।
१५. मया कूपात् जलम् आनीतम् अस्ति, अतः तद् शुद्धम् एव अस्ति —कुएं से जल लाया हूं, इसलिए वह शुद्ध ही है ।

दकारान्त स्त्रीलिंग 'तद्' शब्द

१. प्रथमा	सा	वह	स्त्री
२. द्वितीया	ताम्	उसको	"
३. तृतीया	तया	उसने	"
४. चतुर्थी	तस्यै	उसके लिए	"
५. पंचमी	तस्याः	उससे	"
६. षष्ठी	तस्याः	उसका	"
७. सप्तमी	तस्याम्	उसमें	"

तद् शब्द के पुंल्लिंग रूप पृष्ठ १०७ पर दिए हुए हैं। पाठकों को चाहिए कि वे पुंल्लिग रूपों में जो भिन्नता है उसको ठीक प्रकार ध्यान में रखें। पुंल्लिग शब्द के बदले पुंल्लिग रूप आएंगे और स्त्रीलिंग शब्द के बदले स्त्रीलिंग रूप आएंगे, यह नियम है। निचले वाक्यों को ध्यान से देखने से इस नियम का पूरा पता लग जाएगा।

वाक्य

१. यः पुरुषः ग्रामाद् आगतः सः इदानीम् अत्र नास्ति—जो पुरुष गांव से आया, वह अब यहां नहीं है।

२. या बालिका नगरं गता सा कस्य पुत्री—जो लड़की शहर गई वह किस की पुत्री है?

३. तं पुत्रं तस्मिन् स्थाने पश्य—उस पुत्र को उस स्थान में देख।

४. तां पुत्रीं तस्मिन् स्थाने पश्य—उस बेटी को उस स्थान में देख।

५. तव धर्मपत्नी अत्र अस्ति किम्? यदि अस्ति तर्हि तया किम् इदानीं कर्तव्यम्—तेरी धर्मपत्नी यहां है क्या? अगर है तो उसने क्या अब करना है।

६. तस्यै जलं देहि—उस स्त्री के लिए जल दे।

७. तस्याः वस्त्रं कुत्र अस्ति—उस स्त्री का कपड़ा कहां है ?

८. तां पाठशालां पश्य, तस्यां मम पुत्रः पठति—उस पाठशाला को देख, उसमें मेरा लड़का पढ़ता है।

९. यत्र त्वं गच्छसि तत्र सा न गच्छति किम्—जहां तू जाती है वहां वह नहीं जाती है क्या ?

पाठ ३०

शब्द

गजः—हाथी
लवपुरम्–लाहौर
विद्यालयम्—पाठशाला को।
शब्दः—शब्द।
प्रयत्नः—उद्योग।
प्रकाशः—प्रकाश।
घण्टानादः—घण्टे की आवाज।
प्रथमः–पहला।
सर्पः—सांप।
नैव—नहीं।
ब्रह्मचारी—ब्रह्मचारी।
उदेति—उगता है, निकलता है।
अधिकारः—ओहदा।
अन्धकारः—अंधेरा।
एकः—एक।
द्वितीयः—दूसरा।

वाक्य

१. पुस्तकं लेखनीं मसीपात्रं च मह्यंदेहि—पुस्तक, कलम और दवात मुझे दे।

२. कोलाहलं न कुरु इति हरिदत्तं कथय—कोलाहल न कर, ऐसा हरिदत्त को कह।

३. यत्र भूमित्रः अस्ति तत्र त्वं शीघ्रं गच्छ—जहां भूमित्र है वहां त शीघ्र जा।

४. तत्र वृषभः जलं पिबति—वहां बैल जल पीता है।

५. सः लवपुरम् अतः ऊर्ध्वं नैव गमिष्यति—वह लाहौर को इसके पश्चात् नहीं जाएगा।
६. यत्र शूकरः धावति तत्र त्वमपि[1] गच्छ—जहां सूअर दौड़ता है वहां तू भी जा।
७. अत्र दीपः नास्ति अतः अहं किमपि[2] न पश्यामि—यहां दीपक नहीं है, इसलिए मैं कुछ भी नहीं देखता।
८. विद्यालयं पश्य, तत्र मम ब्रह्मचारी पठति—विद्यालय को देख, वहां मेरा ब्रह्मचारी पढ़ता है।
९. सः वृथा एव असत्यं वदति—वह व्यर्थ ही झूठ बोलता है।
१०. यदा प्रातःकाले सूर्यः उदेति—जब प्रातःकाल में सूर्य निकलता है।
११. तदा सर्वत्र प्रकाशः भवति—तब सब स्थानों पर प्रकाश हो जाता है।
१२. घण्टानादः भवति, त्वं तं शृणु—घण्टी बज रही है, तू उसे सुन।

शब्द

नाम—नाम।
निपुणः—प्रवीण।
स्वनगरम्—अपने शहर को।
आगतः – आया।
स्वामी – स्वामी।
धर्मप्रचारम्—धर्म के प्रचार को।

वाक्य

१. सः पण्डितः अस्ति—वह बुद्धिमान् है।
२. तस्य नाम विश्वामित्रशर्मा इति—उसका नाम विश्वामित्र शर्मा है।
३. सः कलिकत्तानगरात् अत्र आगतः—वह कलकत्ता शहर से यहां आया है।
४. अत्र तेन शोभनं व्याख्यानं दत्तम्—यहां उसने अच्छा व्याख्यान दिया।

---

१. त्वम्+अपि। २. किम्+अपि।

५. सः वरं व्याख्यानं ददाति—वह अच्छा व्याख्यान देता है।
६. एवम् अत्र न कः अपि वक्तुं शक्नोति—इस प्रकार यहां कोई भी नहीं बोल सकता।
७. सः संस्कृत-भाषायां प्रवीणः अस्ति—वह संस्कृत-भाषा में निपुण है।
८. यथा स्वामी सर्वदानन्दः प्रवीणः अस्ति—जैसे स्वामी सर्वदानन्द प्रवीण है।
९. न तथा पण्डितः विश्वामित्रशर्मा—नहीं (हैं) वैसे पं० विश्वामित्र शर्मा।
१०. त्वया तस्य व्याख्यानं श्रुतं किम्—क्या तूने उसका व्याख्यान सुना।
११. कदा सः पुनः स्वनगरं गमिष्यति—कब वह फिर अपने शहर को जाएगा?
१२. सः इदानीं नैव गमिष्यति—वह अब नहीं जाएगा।
१३. अत्र स्थित्वा सः किं कर्तुमिच्छति[1]—यहां ठहरकर वह क्या करना चाहता है।
१४. अत्र स्थित्वा सः धर्मप्रचारं करिष्यति—यहां ठहरकर वह धर्म का प्रचार करेगा।
१५. यदि सः अत्र स्थास्यति तर्हि वरं भविष्यति—अगर वह यहां ठहरेगा तो अच्छा होगा।

दकारान्त स्त्रीलिंग 'यद्' शब्द

१. प्रथमा	या	जो	स्त्री
२. द्वितीया	याम्	जिसको	,,

---

१. कर्तुम् + इच्छति।

३. तृतीया	यया	जिससे	स्त्री
४. चतुर्थी	यस्यै	जिसके लिए	,,
५. पंचमी	यस्याः	जिस से	,,
६. षष्ठी	,,	जिसका	,,
७. सप्तमी	यस्याम्	जिसमें	,,

स्त्रीलिंग 'किम्' शब्द

१. प्रथमा	का	कौन	स्त्री
२. द्वितीया	काम्	किस को	,,
३. तृतीया	कया	किसने	,,
४. चतुर्थी	कस्यै	किसके लिए	,,
५. पंचमी	कस्याः	किससे	,,
६. षष्ठी	,,	किसका	,,
७. सप्तमी	कस्याम्	किस में	,,

वाक्य

१. का पुत्रिका पुस्तकं पठति—कौन-सी बेटी पुस्तक पढ़ती है ?

२. या बालिका पाठशालां गच्छति सा एव पठितुं शक्नोति—जो लड़की पाठशाला को जाती है वह ही पढ़ सकती है।

३. यया पुस्तकं पठितं तस्यै धनं वस्त्रं च देहि—जिस (स्त्री) ने पुस्तक पढ़ी है उसको धन और कपड़ा दे।

४. यस्याः कृते त्वं तत्र गतः सा न आगता किम्—जिस (स्त्री) के लिए तू वहां गया, वह नहीं आई क्या ?

५. यस्यां पाठशालायां मम पुत्रः पठति, तव अपि तस्याम् एव पठति—जिस पाठशाला में मेरा लड़का पढ़ता है, तेरा भी उसमें ही पढ़ता है।

६. तस्यां देवतायां भक्ति धारय—उस देवता में भक्ति धारण कर।
७. पठनस्य काले तस्याः शब्दः महान् भवति—पढ़ने के समय उस (स्त्री) का शब्द बड़ा होता है।

परीक्षा

अब तीस पाठ हो चुके हैं। आज पाठकों की परीक्षा होनी है। अगर पाठक सब प्रश्नों के ठीक-ठीक उत्तर दे सकेंगे तो वे आगे बढ़ सकते हैं। अन्यथा उनको चाहिए कि वे पूर्व के तीस पाठ प्रारम्भ से दुबारा पढ़ें और सबको ठीक-ठीक स्मरण करें। जब तक पिछला स्मरण न होगा तब तक आगे बढ़ने से कोई लाभ नहीं होगा।

परीक्षा के प्रश्न

(१) निम्न शब्दों के सातों विभक्तियों के एकवचन के रूप दीजिए—

पुंल्लिंग शब्द

मार्ग। देव। भाग। धनञ्जय। कवि। अरि। भानु। पितृ। भ्रात। सर्व।

स्त्रीलिंग शब्द

उपासना दया। मातृ। विद्या। जिह्वा। नासिका। किम्। यद्। धेनु। नदी।

(२) निम्न शब्दों के केवल तृतीया, चतुर्थी तथा पंचमी के एकवचन के रूप लिखिए—

राम। देवता। विष्णु। कर्तृ। अस्मत्।

(३) निम्न वाक्यों का भाषा में अर्थ लिखिए—

सः त्वां न जानाति किम्? यदा सः आगतः तदा एव त्वं गतः। दशरथस्य पुत्रः श्रीरामचन्द्रः अस्ति। विश्वामित्रेण सह रामचन्द्रः वनं

गतः। तत्र का अद्य अन्नं भक्षयति? सा बाला तस्मिन् गृहे न पठति।

(४) निम्न वाक्यों के उत्तर संस्कृत में ही दीजिए—

तव किम् नाम अस्ति ? इदानीं त्वं किम् पठसि ? श्रीकृष्णचन्द्रः कस्य पुत्रः आसीत्? श्रीरामचन्द्रेण केन सह युद्धं कृतम् ? धर्मेण किम् भवति।

(५) निम्न भाषा के वाक्यों के संस्कृत-वाक्य बनाइए—

मैं पाठशाला जाता हूं। वह मुझे देखता है। राजा ने उसके लिए धन दिया। सूर्य आकाश में आया। प्रातःकाल में संध्या कर। सवेरे उठ और स्नान कर।

(६) आप कोई एक कथा संस्कृत में लिखने का यत्न कीजिए।

(७) निम्न शब्दों के अर्थ कीजिए—

उत्तिष्ठ। व्यायामः। पंचवादनसमयः। नागः। याचकः। सैनिकः। रविः। कोलाहलः। स्वमपि। युवा। कुशलः। शुभम्। जाया।

पाठ ३१

हे सुविज्ञ पाठको ! इस समय तक आपने ३० पाठ स्मरण किए हैं, और व्याकरण के नियमों का विशेष ज्ञान न होते हुए भी आपने व्यावहारिक बातचीत संस्कृत-भाषा मे करने की योग्यता प्राप्त की है।

अब इसके पश्चात् थोड़ा-थोड़ा व्याकरण का परिचय आपको करने की आवश्यकता है। व्याकरण के जानने के लिए प्रथम संस्कृत अक्षरों की बनावट पर तथा शब्दों की घटना पर एक दृष्टि डालनी चाहिए, अन्यथा व्याकरण के नियम ठीक ध्यान में नहीं आ सकते।

व्यञ्जन और स्वर मिलकर संस्कृत के तथा भाषा के अक्षर बनते हैं। जैसे देखिए—

क्+अ=क। म्+अ=म। ल्+अ=ल।

अर्थात् 'कमल' शब्द की बनावट 'क्+अ+म्+अ+ल्+अ' इतनें वर्णों से हुई है। इसी प्रकार—

(र्+आ)+(म्+अ)=राम।
(प्+इ)+(त्+आ)=पिता।
(उ)+(द्+य्+आ)+(न्+अ+म्)=उद्यानम्।
(ई)+(श्+व्+अ)+(र्+अः)=ईश्वरः।
(प्+उ)+(स्+त्+अ)+(क्+अ+म्)=पुस्तकम्।
(य्+अ+त्)=यत्।
(द्+ए)+(व्+अः)=देवः।

पाठकों को चाहिए कि वे इस अक्षर-घटना तथा शब्द-घटना को स्मरण रखें। संस्कृत के अक्षर तथा शब्द जैसे लिखे जाते हैं, वैसे हीं बोले जाते हैं; और जैसे बोले जाते हैं, वैसे ही लिखे जाते हैं। उर्दू-अंग्रेजी को तरह 'लिखना कुछ, और बोलना कुछ' वाली बात यहां नहीं है, इसलिए संस्कृत को शब्द-घटना (Spelling, स्पैलिंग—हिज्जे) उर्दू अंग्रेजी की अपेक्षा सुगम है।

संस्कृत में व्यञ्जन और स्वर आमने-सामने आते ही जुड़ जाते हैं। जैसे देखिए—

(तं=)तम्+अपि—तमपि।
(त्वं=) त्वम्+आगच्छ—त्वमागच्छ।
यद्+अस्ति—यदस्ति।
तद्+अस्ति—तदस्ति।

इस प्रकार के जोड़ का वर्णन हम आगे के पाठ में करेंगे। इसलिए पाठकों को उचित है कि वे इस जोड़ को व्यवस्था को ध्यान में रखें।

जहां-जहां जोड़ आएगा वहां-वहां पृष्ठ के नीचे टिप्पणी देकर उस शब्द को खोलकर भी बताएंगे। अस्तु, जोड़ के विषय में इतना पर्याप्त है।

अब कुछ वाक्य दिए जाते हैं। उनकी ओर पाठकों को ध्यान देना चाहिए। इन वाक्यों के अन्दर उक्त प्रकार के जोड़ दिए गए हैं।

वाक्य

१. यदस्ति[1] तत्र, तदत्र[2] त्वमानय[3]—जो है वहां, वह यहां तू ले आ।
२. रामः शीघ्रमागच्छति[4]—राम जल्दी आता है।
३. त्वमधुना[5] पुस्तकं देहि—तू अब पुस्तक दे।
४. तदधुना[6] तत्र नास्ति[7]—वह अब वहां नहीं है।
५. सः कदापि[8] असत्यं नैव[9] वदति—वह कभी भी असत्य नहीं बोलता।
६. सः पुष्पमानयति[10]—वह फूल लाता है।
७. त्वमिदानीं[11] किं करोषि—तू अब क्या करता है।
८. अहमधुना[12] आलेख्यं पश्यामि—मैं अब चित्र देखता हूं।
९. त्वमिदानीं किमर्थं हुसेनमाज्ञापयसि[13]—तू अब क्यों हुसेन को आज्ञा करता है?
१० मित्र! पश्य, कथं सः रथः शीघ्रं धावति—मित्र! देख, कैसा वह रथ (गाड़ी) जल्दी दौड़ता है।
११. तत्र सूर्यं पश्य—वहां सूर्य को देख।

---

१. यद्+अस्ति। २. तद्+अत्र। ३. त्वम्+आनय। ४. शीघ्रम्+आगच्छति। ५. त्वम्+अधुना। ६. तद्+अधुना। ७. न+अस्ति। ८. कदा+अपि। ९. न+एव। १०. पुष्पम्+आनयति। ११. त्वम्+इदानीम्। १२. अहम्+अधुना। १३. हुसेनम्+आज्ञापयसि।

१२. यदत्र[1] अस्ति तत् तुभ्यमहं[2] दास्यामि—जो यहां है वह तुझे मैं दूंगा ।

१३. अश्वः धावति—घोड़ा दौड़ता है ।

१४. मनुष्यः अश्वं पश्यति—मनुष्य घोड़े को देखता है ।

१५. त्वमपि[3] तत्र गच्छ—तू भी वहां जा ।

१६. सः पुरुषः वृद्धः अस्ति—वह मनुष्य बूढ़ा है ।

१७. सः बालः अतीव दुर्बलः अस्ति—वह लड़का बहुत ही दुर्बल है ।

पुंल्लिग और स्त्रीलिंग सर्वनामों का उपयोग बताने वाले वाक्य

१. सः पुरुषः ।	सा स्त्री ।
२. तं पुरुषं पश्य ।	तां स्त्रीं पश्य ।
३. यः पश्यति ।	या पश्यति ।
४. कः पठति ।	का पठति ।
५. त्वं कस्मै धनं ददासि ।	त्वं कस्यै धनं ददासि ।
६. यस्मै त्वम् इच्छसि ।	यस्यै त्वम् इच्छसि ।
७. येन मनुष्येण जलं पीतम् ।	यया पुत्रिकया जलं पीतम् ।
८. तस्मै देहि ।	तस्यै देहि ।
९. यः गच्छति ।	या गच्छति ।
१०. कः एवं वदति ।	का एवं वदति ।
११. सः वदति ।	सा वदति ।
१२. केन न पठितम् ।	कया न पठितम् ।
१३. कस्य गृहम् अस्ति ।	कस्याः गृहम् अस्ति ।

---

१. यद्+अत्र । २. तुभ्यम्+अहम् । ३. त्वम्+अपि ।

संस्कृत में पत्र लेखन

ॐ

अलमोड़ानगरे
श्रावणस्य शुक्ल-चतुर्दश्याम्
रविवासरे सं० २००५

भो प्रियमित्र कृष्णवमन्,

नमस्ते । तव पत्रम् अद्य एव लब्धम् । आनन्दः जातः । अहं तव नगरं शीघ्रं न आगमिष्यामि । अत्र मम बहु कर्तव्यम् अस्ति । अहं श्वः हिमपर्वतं गमिष्यामि । तस्य स्थानस्य नाम त्वं जानासि एव । तस्य पर्वतशिखरस्य नाम धवलगिरिः इति अस्ति । तस्य दृश्यम् अतीव सुन्दरम् अस्ति । यदि त्वं तत्र आगमिष्यसि तर्हि वरं भविष्यति । यदि त्वम् आगन्तुम् इच्छसि तर्हि मम मातरम् अपि आत्मना सह आनय ।

सर्वम् अत्र कुशलम् अस्ति । तव सदैव कुशलम् इच्छामि ।

तव मित्रम्
सीतारामः

शब्द

भो—हे ।
नमस्ते—तुमको नमस्कार ।
लब्धम्—प्राप्त हुआ, मिला ।
आनन्दः—खुशी ।
वरम्—अच्छा ।
बहु—बहुत ।
हिमम्—बर्फ ।
पर्वतः—पहाड़ ।
शिखरम्—(पहाड़ की) चोटी ।
दृश्यम्—दृश्य, नज़ारा ।
कुशलम्—मंगल, राजी-खुशी ।
तपस्या—तप ।

सरल वाक्य

तव पुत्रिका कुत्र अस्ति ? सा मात्रा सह हरिद्वारनगरं गता ।

कदा सा पुनः स्वगृहमागमिष्यति ? यदा तस्याः माता आगमिष्यति तदा एव तया सह सा अपि आगमिष्यति । सा तत्र किं करोति ? ऋषीकेशनामके तीर्थस्थाने सा तपस्यां करोति । कथं पुत्रिका तपस्यां करोति ? तत्र कन्यागुरुकुलम् अस्ति। तत्र सा अध्ययनं कर्तुम् इच्छति। तर्हि एवं कथय । किमर्थम् असत्यं वदसि सा तत्र तपस्यां करोति इति।

पाठ ३२

शब्द के अन्त में जो हल् 'म्' होता है उसको 'क' से 'ह' तक के किसी भी वर्ण अर्थात् किसी भी व्यंजन के परे होने पर अनुस्वार (बिन्दीनुक्ता) हो जाता है। यदि उस 'म्' के सामने कोई स्वर अ, इ आदि आ जाता है तो म् उस स्वर से मिल सकता है या अलग ही रहता है; किन्तु स्वर परे रहते अनुस्वार नहीं होता । क से ह परे रहते :

देवम् + पश्य = देवं पश्य ।
ज्ञानम् + दत्तम् = ज्ञानं दत्तम् ।
जलम् + देहि = जलं देहि ।

स्वर परे रहते :

सर्वम् + अस्ति = सर्वमस्ति या सर्वम् अस्ति ।
ओदनम् + अद्धि = ओदनमद्धि या ओदनम् अद्धि ।
शीघ्रम् + ओदनम् = शीघ्रमोदनम् या शीघ्रम् ओदनम् ।

वाक्य

१. देवः तत्र गच्छति—देव (विद्वान्) वहां जाता है ।
२. तं देवं पश्य—उस देव को देख ।
३. देवेन ज्ञानं दत्तम्—देव (विद्वान्) ने ज्ञान दिया ।
४. देवाय जलं देहि—देव के लिए (को) जल दे ।

५. देवात् द्रव्यं गृह्णामि—देव से द्रव्य लेता हूं ।
६. देवस्य एतत् सर्वम् अस्ति—देव का यह सब है ।
७. देवे सर्वम् अस्ति—देव (ईश्वर) के अन्दर सब कुछ है ।
८. हे देव ! अत्र पश्य—हे देव, यहां देख ।
९. रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्—राम दशरथ का पुत्र था ।
१०. रामं दशरथः एवं वदति—राम को दशरथ ऐसे बोलता है ।
११. कृष्णेन जलं दत्तम्—कृष्ण ने जल दिया ।
१२. देवदत्ताय पुस्तकं देहि—देवदत्त को पुस्तक दे ।
१३. लवपुरात् फलम् आनय—लाहौर से फल ले आ ।
१४. रामस्य रावणस्य च युद्धं जातम्—राम और रावण का युद्ध हुआ ।
१५. तस्य गृहे मम वस्त्रम् अस्ति—उसके घर में मेरा कपड़ा है ।
१६. हे देवदत्त ! त्वं युद्धं न कुरु—हे देवदत्त ! तू युद्ध न कर ।
१७. बालकः उपरि अस्ति—बालक ऊपर है ।
१८. तं बालकं पश्य । कथं सः धावति—उस बालक को देख, कैसे वह दौड़ता है ।
१९. बालकेन स्नानं कृतम्—बालक ने स्नान किया ।
२०. बालकाय मोदकं देहि—बालक को लड्डू दे ।
२१. बालकात् पुस्तकं गृहाण—बालक से पुस्तक ले ।
२२. बालकस्य वस्त्रं रक्तमस्ति[1]—बालक का कपड़ा लाल है ।
२३. बालके दयां कुरु—बालक पर दया कर ।
२४. हे बालक त्वमुत्तिष्ठ[2]—हे बालक, तू उठ ।

---

१. रक्तम्+अस्ति । २. त्वम्+उत्तिष्ठ ।

शब्द

पालकः—पालनकर्त्ता । पानीयम्—जल । पेटकः—संदूक । पुच्छम्—पूंछ । कणः—धान का कण । दन्तः—दांत । तक्रम्—छाछ । घृतम्—घी । ओदनम्—भात । खट्वा—चारपाई, खटिया । कपिः—बंदर । वैरम्—शत्रुता ।

क्रिया

ज्वलति—(वह) जलती है । ज्वलसि—(तू) जलता है । वहति—(वह) उठाता है । कृन्तति—(वह) कुतरता है । ज्वलामि—जलता हूं । अत्ति—(वह) खाता है । अत्सि—(तू) खाता है । अद्मि—(मैं) खाता हूं । कृन्तसि—(तू) कुतरता है । कृन्तामि—(मैं) कुतरता हूं । निःसरति—(वह) निकलता है । निःसरसि—(तू) निकलता है ।

वाक्य

१. मम गृहे अश्वः अस्ति—मेरे घर में घोड़ा है ।
२. तस्य पुच्छं श्वेतम् अस्ति—उसकी पूंछ सफेद है ।
३. सः घृतं नैव अत्ति—वह घ नहीं खाता है ।
४. तस्य दन्तः श्वेतः नास्ति—उसका दांत सफेद नहीं है ।
५. अयं तस्य पेटकः नास्ति—यह उसका ट्रंक नहीं है ।
६. अहम् ओदनं भक्षयामि—मैं भात खाता हूं ।
७. सः ओदनं दुग्धेन सह अत्ति—वह भात दूध के साथ खाता है ।
८. त्वं कथं शर्करया सह ओदनम् अत्सि—तू कैसे शक्कर के साथ भात खाता है ।
९. अहं तस्य छत्रं नयामि—मैं उसका छाता ले जाता हूं ।
१० मूषकः तस्य पुच्छं कृन्तति—चूहा उसकी दुम काटता है ।

११. हे मित्र ! अधुना उद्यानं गच्छ, तत्र मम भृत्यः अस्ति—हे मित्र अब बाग को जा, वहां मेरा नौकर है।

सरल वाक्य

१. त्वम् अत्र शीघ्रम् ओदनम् आनय। २. अत्र जलम् अपि नास्ति। ३. तस्य पुस्तकं तव मित्रेण नीतम्। ४. तत्र दीपः ज्वलति। ५. तस्य प्रकाशे पुस्तकं पठ। ६. सः किं वदति इदानीम्।? ७. अहं स्वग्रामम् अद्य गमिष्यामि। ८. यदि भूमित्रः अत्र अस्ति तर्हि तम् अत्र आनय। ९. राजा चोरं दृष्ट्वा धावति। १०. यदा गृहे चोरः आगतः तदा त्वं कुत्र गतः ?

पाठ ३३

शब्द

आसीत्—था, हुआ था। राजा—नरेश, राजा। कृतम्—किया। युद्धम्—जंग, लड़ाई। हतः—मारा, हनन किया। बभूव—हो गया था, हुआ था। नेत्रम्—आंख। नामधेय, नामक—नाम वाला। अवलम्ब्य—अवलम्बन करके। राज्यम्—राज्य। अकरोत्—करता था। भार्या—स्त्री, धर्मपत्नी। नामधेया—नाम की। साध्वी—पतिव्रता।

वाक्य

१. रामचन्द्रः कः आसीत्—रामचन्द्र कौन था।

२. रामचन्द्रः अयोध्यानामकस्य नगरस्य राजा आसीत्—रामचन्द्र अयोध्या नाम की नगरी का राजा था।

३. तेन रामेण किं कृतम्—उस राम ने क्या किया।

४. रामेण युद्धे रावणः हतः—राम ने युद्ध में रावण को मारा।

५. रावणः कः आसीत्—रावण कौन था।

६. रावणः लङ्कानामधेयस्य नगरस्य राजा आसीत्—रावण लङ्का

नाम के नगर का राजा था ।

७. रावणेन सह रामस्य युद्धं किमर्थं बभूव—रावण के साथ राम का युद्ध किस कारण हुआ ?

८. रावणः धर्मं त्यक्त्वा अधर्मम् अवलम्ब्य राज्यम् अकरोत्, अतः रावणेन सह रामेण युद्धं कृतम्—रावण धर्म को छोड़कर, अधर्म का अवलम्बन करके राज्य करता था, इसलिए रावण के साथ राम ने युद्ध किया ।

९. रामस्य भार्या का आसीत्—राम की स्त्री कौन थी ।

१० सीता नामधेया रामस्य भार्या अतीव साध्वी आसीत्—सीता नाम वाली राम की धर्मपत्नी अत्यन्त पतिव्रता थी ।

११. रामचन्द्रस्य माता का आसीत्—रामचन्द्र की माता कौन थी ।

१२. कौशल्या नामधेया श्रीरामचन्द्रस्य माता आसीत्—कौशल्या नाम वाली श्रीरामचन्द्र की माता थी ।

१३. रावणस्य भ्राता कः आसीत्—रावण का भाई कौन था ।

१४. विभीषणः रावणस्य भ्राता आसीत्—विभीषण रावण का भाई था ।

१५. रामचन्द्रस्य लक्ष्मणनामधेयः बन्धुः आसीत्—रामचन्द्र का लक्ष्मण नामक भाई था ।

१६. तथा भरतः शत्रुघ्नः अपि—उसी प्रकार भरत और शत्रुघ्न भी ।

१७. रामेण सह साध्वी सीता वनं गता आसीत्—राम के साथ पति-व्रता सीता वन को गई थी ।

१८. रामेण सह लक्ष्मणः अपि वनं गतः आसीत्—राम के साथ लक्ष्मण भी वन को गया था ।

१९. यथा रामेण राक्षसाः हताः तथा एव लक्ष्मणेन अपि राक्षसाः हताः—जिस प्रकार राम ने राक्षसों को मारा उसी प्रकार लक्ष्मण

ने भी राक्षसों को मारा।

२०. रामः धर्मेण राज्यम् अकरोत्—राम ने धर्म से राज्य किया।

२१. अतः लोकः रामे प्रीतिम् अकरोत्—इसलिए लोग राम से प्रेम करते थे।

शब्द

वार्ता—बात। रम्या—रमणीय। नगरी—शहर। सा—वह (स्त्री)। वार्तालापः—वार्तालाप, बात-चीत। उष्ट्रम्—ऊंट। त्वरितम्—शीघ्र। नयनम्—आंख। उदकम्—जल। गतिः—गमन, चाल। वृष्टिः—वर्षा, बरखा। प्रकाशः—रोशनी। एषः—यह। मुम्बानगरे—बम्बई में। मेघः—बादल। द्रुतम्—शीघ्र। पत्रम्—पत्र, खत। पानीयम्—पानी।

वाक्य

१. युद्धस्य वार्ता रम्या भवति—युद्ध की बात रमणीय होती है।

२. सा नगरी अतीव रम्या अस्ति—वह शहर बहुत ही रमणीय है।

३. कृष्णेन सह वार्तालापं कुरु—कृष्ण के साथ बातचीत कर।

४. उष्ट्रस्य त्वरिता गतिः—ऊंट की चाल तेज़ (होती है)।

५. अश्वस्य गमनमपि[1] तथैव[2]—घोड़े की चाल भी वैसी ही (होती है)।

६. मेघात् वृष्टिः भवति—बादल से वर्षा होती है।

७. सूर्यात् प्रकाशः भवति—सूर्य से प्रकाश होता है।

८. रात्रौ सूर्यः न भवति—रात्रि में सूर्य नहीं होता।

९. अहं रामाय पत्रं लिखामि—मैं राम के लिए पत्र लिखता हूं।

१०. त्वं पत्रं शीघ्रं लिख—तू पत्र जल्दी लिख।

११. पत्रस्य लेखनेन किं भविष्यति—पत्र लिखने से क्या होगा।

---

१. गमनम् + अपि। २. तथा + एव।

१२. एष यज्ञदत्तस्य पुत्रः—यह यज्ञदत्त का पुत्र (है)।
१३. तव पुत्रः कुत्र अस्ति—तेरा पुत्र कहां है।
१४. मुम्बानगरे मम पुत्रः अस्ति—बम्बई में मेरा पुत्र है।

शब्द

पाचकः—रसोइया। महिषी—भैंस, महारानी। यष्टिः यष्टिका—सोटी। सूचिका—सूई। द्वारम्—दरवाजा। गण्डूषः—चुल्ली। अनृतम्—असत्य, झूठ। कशा—चाबुक। पर्पटः—पापड़। मृत्पिण्डः—मिट्टी का गोला। कर्तरी—कैंची। पटः—वस्त्र। महानसम्—रसोई का स्थान। पारितोषिकम्—इनाम। महिषः—भैंसा।

क्रिया

आरोहति—(वह) चढ़ता है। आरोहसि—(तू) चढ़ता है। आरोहामि—(मैं) चढ़ता हूं। उपविशति—(वह) बैठता है। भ्रामयसि—(तू) घुमाता है। उत्तिष्ठामि—(मैं) उठता हूं। हसति—(वह) हंसता है। निक्षिपति—(वह) फेंकता है। सिञ्चति—(वह) छिड़कता है। कर्तयति—(वह) काटता है।

वाक्य

१. अहं पर्पटं भक्षयामि—मैं पापड़ खाता हूं।
२. अयं पाचकः अस्ति—यह रसोइया है।
३. अरबदेशात् अश्वः आगच्छति—अरब देश से घोड़ा आता है।
४. अद्य मार्गे कर्दमः जातः—आज मार्ग में कीचड़ हो गया है।
५. तव वस्त्रं मलिनम् अस्ति—तेरा वस्त्र मैला है।
६. त्वां दृष्ट्वा सः हसति—तुझको देखकर वह हंसता है।
७. अहं तं दृष्ट्वा हसामि—मैं उसको देखकर हंसता हूं।
८. यष्टिकया मूषकं ताडय—सोटी से चूहे को मार।

९. यदि त्वं कूपस्य जलं पातुम् इच्छसि तर्हि मया सह आगच्छ—
अगर तू कुएं का जल पीना चाहता है तो मेरे साथ आ।

१०. अवन्तिनगरात् तस्य मित्रम् अद्य अपि न आगतम्—अवन्ति शहर से उसका मित्र आज भी नहीं आया।

सरल वाक्य

१. पश्य सः सूचिकायां सूत्रं निक्षिपति। २. सः कर्तर्या पत्रं कर्तयति। ३. सः उत्थाय गृहाद् अत्र एव आगतः। ४. महानसात् धूमः उत्तिष्ठति। ५. यत्र धूमः अस्ति तत्र न गन्तव्यम्। ६. जलस्य गण्डूषेण मुखं प्रक्षालयामि। ७. तेन पारितोषिकं प्राप्तम्। ८. तस्य महिषी दुग्धं ददाति। ९. अयं सैनिकः कशया अश्वं ताडयति। १०. पाठशालायां केनापि सह कलहं न कुरु।

निम्न भाषा के वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

१. उस याचक को अन्न दो। २. जो लड़की पाठशाला को जाती है वह किस की है? ३. मैं घोड़ा देखता हूं। ४. तू बादल देखता है। ५. तेरा सन्दूक कहां है?

पाठ ३४

अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

गमनम्—जाना। आगमनम्—आना। भक्षणम्—खाना। भोजनम्—भोजन, रोटी। क्रीडनम्—खेलना। पानम्—पीना। दानम्—देना। आदानम्—लेना। हसनम्—हंसना। स्वीकरणम्—स्वीकार करना। लेखनम्—लिखना। पत्रम्—पत्र। वस्त्रम्—वस्त्र। पात्रम्—बर्तन। शरीरम्—शरीर। अन्नम्—अन्न।

संस्कृत में शब्दों के तीन प्रकार के लिंग होते हैं कई शब्द

पुंल्लिग हैं, कई स्त्रीलिंग हैं और कई नपुंसकलिंग हैं। शब्दों के लिंग पहचानने के लिए कोई सामान्य नियम नहीं हैं, और जो नियम हैं वे इस समय पाठकों की समझ में नहीं आ सकते, इसलिए यहां नहीं दिए जाते।

सब अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप अकारान्त पुंल्लिग शब्द के समान ही होते हैं, केवल प्रथमा तथा द्वितीया के रूप कुछ भिन्न होते हैं। देखिए—

अकारान्त नपुंसकलिंग 'भोजन' शब्द

१. प्रथमा	भोजनम्	भोजन
२. द्वितीया	भोजनम्	भोजन को
३. तृतीया	भोजनेन	भोजन से
४. चतुर्थी	भोजनाय	भोजन के लिए
५. पंचमी	भोजनात्	भोजन से
६. षष्ठी	भोजनस्य	भोजन का
७. सप्तमी	भोजने	भोजन में
सम्बोधन	(हे) भोजन	(हे) भोजन

इसी प्रकार सब अन्य अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के विषय में जानना चाहिए। इन रूपों को देखकर पाठकों ने जान लिया होगा कि अकारान्त पुंल्लिग और नपुंसकलिंग शब्दों की प्रथमा, द्वितीया के अतिरिक्त अन्य विभक्तियां एक-सी होती हैं।

पाठकों ने देखा होगा कि तृतीया विभक्ति का जो 'न' है वह कई शब्दों में 'ण' बनता है, और कई शब्दों में 'न' ही रहता है। इसका पूरा-पूरा नियम हम आगे द्वितीय भाग में देंगे, परन्तु पाठकों को यहां इतना ही ध्यान में रखना चाहिए कि जिन शब्दों में 'र' व

'ष' अक्षर होता है, प्राय: उन शब्दों के 'न' का 'ण' बनता है। परन्तु कई अवस्थाएं ऐसी आती हैं कि जिनमें 'न' को 'ण' नहीं बनता; जैसे—(१) देवेन, भोजनेन, गमनेन। (२) रामेण, नरेण, पुरुषेण। (३) कृष्णेन, रथेन, रावणेन।

(१) देव, भोजन, गमन शब्दों में 'र' अथवा 'ष' वर्ण न होने से 'ण' नहीं हुआ, (२) राम, नर और पुरुष शब्दों में 'र' व 'ष' होने से 'ण' बना है, तथा (३) कृष्ण, रथ और रावण शब्दों में कुछ विशेष हालत न होने के कारण 'ण' नहीं बना। इस विशेष हालत का वर्णन हम आगे करेंगे। इस विशेष अवस्था की परवाह न करके पाठकों को रूप बनाने चाहिएं और वाक्यों में उनका प्रयोग करना चाहिए।

अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

पुण्यम्—पुण्य। **पातकम्**—पाप। **पोषणम्**—पुष्टि। **प्रक्षालनम्**—धोना। **ध्यानम्**—ध्यान। **भ्रमणम्**—भ्रमण, घूमना। **शीतनिवारणम्**—शीत का निवारण। **सत्यम्**—सत्य। **स्नानम्**—स्नान। **शूर्पम्**—छाज। **फलकम्**—फट्टा। **जीरकम्**—जीरा। **चक्रम्**—चक्र।

वाक्य

१. **द्रव्यस्य दानेन किं फलं भवति**—द्रव्य के दान से क्या फल होता है।
२. **द्रव्यस्य दानेन पुण्यं भवति**—द्रव्य के दान से पुण्य होता है।
३. **शरीरस्य पोषणाय अन्नमस्ति**[1]—शरीर की पुष्टि के लिए अन्न है।
४. **वस्त्रस्य प्रक्षालनाय शुद्धं जलं तत्र अस्ति**—कपड़ा धोने के लिए शुद्ध जल वहां है।
५. **पत्रस्य लेखनाय मसीपात्रं मह्यं देहि**—पत्र लिखने के लिए दवात मुझे दे।

---

१. अन्नम्+अस्ति।

६. कन्दुकः क्रीडनाय भवति—गेंद खेलने के लिए होती है।
७. नगरात् नगरं तस्य भ्रमणं सदा भवति—(एक) शहर से (दूसरे) शहर उसका भ्रमण सदा होता है।
८. वस्त्रेण शीतात् निवारणं भवति—कपड़े से सर्दी से बचाव होता है।
९. तव भोजने करपट्टिका नास्ति[1]—तेरे भोजन में फुलका नहीं है।
१०. मम भोजने ओदनमस्ति[2] व्यञ्जनमपि[3] अस्ति—मेरे भोजन में भात है 'और' चटनी भी है।
११. इदानीं तत्र तस्य गमनं वरम्—अब वहां उसका जाना अच्छा है।

अकारान्त नपुंसकलिंग 'ज्ञान' शब्द

१. प्रथमा	ज्ञानम्	ज्ञान
२. द्वितीया	ज्ञानम्	ज्ञान को
३. तृतीया	ज्ञानेन	ज्ञान ने (से)
४. चतुर्थी	ज्ञानाय	ज्ञान के लिए
५. पंचमी	ज्ञानात्	ज्ञान से
६. षष्ठी	ज्ञानस्य	ज्ञान का
७. सप्तमी	ज्ञाने	ज्ञान में
सम्बोधन	हे ज्ञान	(हे) ज्ञान

अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

अग्रम्—नोक। अंजनम्—कज्जल, सुरमा। पाटवम्—चंचलता, चतुराई। अभिवादनम्—श्रेष्ठों को नमन। अवलोकनम्—देखना। फलम्—फल। आरोग्यम्—तन्दुरुस्ती, स्वास्थ्य। स्थानम्—जगह। उन्मीलनम्—खोलना। कार्यम्—कृत्य, काम। गानम्—गाना। घ्राणम्—नाक। चित्तम्—मन। तरणम्—तैरना। धनम्—दौलत।

---

१ न + अस्ति। २. ओदनम् + अस्ति। ३. व्यञ्जनम् + अपि।

नर्तनम्—नाच । **दुःखम्**—तकलीफ । **अनामयम्**—आरोग्य । **अपाटवम्**—बीमारी । **असत्यम्**—झूठ । **सत्यम्**—सच । **उत्तरम्**—जवाब । **स्मरणम्**—याद । **खनित्रम्**—खोदने का हथियार । **उपवनम्**-बाग । **पालनम्**—रक्षा । **श्रवणम्**—सुनना । **जीवनम्**—जिन्दगी । **चलनम्**—चलना । **मूलम्**—जड़ । **तत्त्वम्**—तत्त्व । **शस्त्रम्**—हथियार । **इन्द्रियम्**—इन्द्रिय । **हवनम्**—हवन । **आसनम्**—आसन । **नामधेयम्**—नाम । **क्षेत्रम्**—खेत । **व्रतम्**—नियम । **पत्तनम्**—नगर । **हिंसनम्**—हिंसा, वध । **शीलम्**—स्वभाव ।

ये सब शब्द 'ज्ञान' शब्द के समान ही चलते है ।

वाक्य

१. **मम शरीरस्य अपाटवम् अस्ति**—मेरा शरीर बीमार है ।
२. **यथा आरोग्यं भवति तथा कार्यम्**—जैसे स्वास्थ्य हो वैसे करना चाहिए ।
३. **तव चित्तं कुत्र अस्ति**—तेरा मन कहां है ।
४. **ईश्वरस्य स्मरणं प्रभाते उत्थाय अवश्यं कर्तव्यम्**—ईश्वर का स्मरण सबेरे उठकर अवश्य करना चाहिए ।
५. **यदा त्वं व्रतं करोषि तदा किं भक्षयसि**—जब तू व्रत रखता है तब क्या खाता है ।
६. **अश्वस्य पालनं कुरु**—घोड़े का पालन करो ।
७. **यदा सः असत्यं वदति तदा तस्य मुखं मलिनं भवति**—जब वह झूठ बोलता है तब उसका चेहरा मलिन होता है ।
८. **येन केनापि मार्गेण गच्छ**—जिस किसी भी मार्ग से जा ।
९. **तव पित्रा धनं दत्तम्**—तेरे पिता ने धन दिया ।
१०. **मया शास्त्रं न पठितम्**—मैंने शास्त्र नहीं पढा ।

सरल वाक्य

१. माता पुत्राय भोजनं ददाति । २. पुत्रः पित्रे पत्रं लिखति । ३. तेन धनं न आनीतम् । ४. किं सः अद्यापि तत्रैव अस्ति ? ५. किं करोति सः तत्र ? ६. अहं तस्मै बालकाय किम् अपि दातुं न इच्छामि यतः सः स्वकीयं पुस्तकं न पठति, इतस्ततः भ्रमति च । ७. सः क्षुधया दुःखितं मनुष्यं दृष्ट्वा तस्मै एव अन्नं ददाति । ८. देवदत्त, किं त्वं जले तरणं जानासि ? तर्हि अद्य मया सह आगच्छ नदीम् । तत्र गत्वा स्नानं करिष्यामः । ९. इदानीं भोजनस्य समयः जातः, शीघ्रं जलं गृहीत्वा अत्र एव आगच्छ ।

पाठ ३५

शब्द

मुखम्—मुँह । नेत्रम्—आंख । कर्णः—कान । दन्तः—दांत । हस्तः—हाथ । पादः—पांव । नासिका—नाक । हृदयम्—दिल, हृदय । उदरम्—पेट । पृष्ठम्—पीठ । अङ्गुली—अंगुली । शिखा—चोटी ।

वाक्य

१. पश्य, नवीनचन्द्रस्य मुखं कथम् अतीव मलिनम् अस्ति—देख, नवीनचन्द्र का मुँह अधिक क्यों मलिन है ।
२. सः इदानीं मुखेन फलं भक्षयितुं न शक्नोति—वह अब मुँह से फल खा नहीं सकता ।
३. अहं कर्णाभ्यां तव अतीव मधुरं भाषणं शृणोमि—मैं कान से तेर बहुत ही मीठा भाषण सुनता हूं ।
४. मार्गे तस्य हस्तात् पुस्तकं पतितम्—मार्ग में उसके हाथ से पुस्तक गिर पड़ी ।

५. मार्गे पतितं तत् पुस्तकं श्रीधरेण गृहीतम्—मार्ग में गिरी हुई उस पुस्तक को श्रीधर ने ले लिया।

६. सः शूरपुरुषः इदानीं युद्धे पतितः—वह शूर पुरुष अब लड़ाई में गिर पड़ा (मर गया)।

७. तस्य मलिनहस्तात् कुण्डलिनीं न गृहाण—उसके मलिन हाथ से जलेबी न ले।

शब्द

नेत्राभ्याम्—दोनों आंखों से। **कर्णाभ्याम्**—दोनों कानों से। **हस्ताभ्याम्**—दोनों हाथों से। **पद्भ्याम्**—दोनों पांवों से। **नासिकया**—नाक से। **दन्तैः**—दांतों से। **आरोहति**—चढ़ता है। **विश्वम्**—संसार, सब। **सुगन्धम्**—खुशबू। **शठः**—ठग। **वाणी**—भाषण। **विष**—ज़हर।

वाक्य

१. अहं नेत्राभ्यां विश्वं पश्यामि—मैं (दोनों) आंखों से संसार को देखता हूं।

२. सः कर्णाभ्यां श्रोतुं न शक्नोति—वह (दोनों) कानों से सुन नहीं सकता।

३. त्वं नासिकया सुगन्धं गृह्णासि किम्—तू नाक से सुगन्ध लेता है क्या ?

४. मनुष्यः पद्भ्यां धावति—मनुष्य (दोनों) पांवों से दौड़ता है।

५. जनः दन्तैः फलम् अत्ति—मनुष्य दांतों से फल खाता है।

६. वानरः हस्ताभ्यां पादाभ्यां च वृक्षम् आरोहति—बन्दर (दोनों) हाथों तथा दोनों पांवों से वृक्ष पर चढ़ता है।

७. वानरः रात्रौ वृक्षस्य उपरि स्वपिति—बन्दर रात्रि में वृक्ष के ऊपर

सोता है।

८. शठस्य मुखे मधुरा वाणी तथा हृदये विषं भवति—ठग के मुंह में मीठा भाषण तथा हृदय में विष होता है।

९. पश्य, वानरस्य मुखं कथं कृष्णम् अस्ति—देख, बन्दर का मुंह कैसा काला है।

शब्द

इह—यहां, इस लोक में। **अमुत्र**—परलोक में। **संसारः**—संसार, दुनिया। **जगति**—जगत् में। **राष्ट्रः**—राष्ट्र कौम। **प्रसन्नः**—आनन्दित। **भिन्नः**—अलग। **आत्मा**—आत्मा, जीव। **पक्वम्**—पका हुआ। **बीजम्**—बीज।

वाक्य

१. इह मनुष्यः दिने दिने[1] अन्नं भक्षयति—यहां मनुष्य प्रतिदिन अन्न खाता है।

२. नगरे नगरे जनः क्रीडां करोति—हर शहर में मनुष्य खेलता है।

३. ग्रामे ग्रामे उद्यानं भवति—प्रत्येक गांव में बाग होता है।

४. शरीरे शरीरे आत्मा भिन्नः—हर शरीर में आत्मा अलग है।

५. वृक्षे वृक्षे फलं पक्वम् अस्ति—हर एक वृक्ष पर फल पका है।

६. राष्ट्रे राष्ट्रे राजा भवति—हर एक राष्ट्र में राजा होता है।

७. सायं सायं जलम् आगच्छति—प्रति सायंकाल जल आता है।

८. मार्गे मार्गे रथः धावति—हर एक मार्ग में रथ दौड़ता है।

९. पुस्तके पुस्तके आलेख्यं भवति—हर पुस्तक में चित्र होता है।

१० फले फले बीजं भवति—हर एक फल में बीज होता है।

---

१. संस्कृत में शब्दों का दुबारा उच्चारण करने से 'प्रत्येक' हर एक ऐसा अर्थ हो जाता है।

११. कूपे कूपे जलं भवति—हर एक कुएं में जल होता है।
१२. वने वने वृक्षः भवति—हर एक वन में वृक्ष होता है।

इकारान्त नपुंसकलिंग 'वारि' शब्द

१. प्रथमा	वारि	जल
२. द्वितीया	वारि	जल को
३. तृतीया	वारिणा	जल ने
४. चतुर्थी	वारिणे	जल के लिए
५. पंचमी	वारिणः	जल से
६. षष्ठी	वारिणः	जल का
७. सप्तमी	वारिणि	जल में
सम्बोधन	(हे) वारि	(हे) जल

इस प्रकार सब इकारान्त नपुंसकलिग शब्दों के रूप होते हैं।

वाक्य

१. मनुष्यस्य देहे प्रथमं घ्राणम् इन्द्रियम्, येन गन्धः गृह्यते--मनुष्य के शरीर में पहली नाक इन्द्रिय (है), जिससे गंध लिया जाता है।
२. द्वितीयं चक्षुः येन मनुष्यः सर्वं पश्यति—दूसरी आंख, जिससे मनुष्य सब कुछ देखता है।
३. तृतीयं श्रोत्रम्, येन शब्दः श्रूयते—तीसरी कान, जिससे शब्द सुना जाता है।
४. चतुर्थम् इन्द्रियम् जिह्वा, यया अन्नस्य रसः गृह्यते—चौथी इन्द्रिय जबान, जिससे अन्न का रस लिया जाता है।
५. पंचमम् इन्द्रियं त्वक्, यया मनुष्यः स्पर्शं जानाति—पांचवीं इन्द्रिय चमड़ी है, जिससे मनुष्य स्पर्श जानता है।

६. एतत् इन्द्रियपञ्चकं सर्वस्य ज्ञानस्य मूलम्—यह इन्द्रियपञ्चक (पांच इन्द्रियां) सब ज्ञान की जड़ है।
७. हे बालक! त्वं किं करोषि—हे बालक! तू क्या करता है?
८. त्वम् कदापि असत्यं मा वद। असत्यभाषणं पापं वर्तते—तू झूठ न बोल। झूठ बोलना पाप है।
९. यः असत्यं वदति कः अपि तस्य विश्वासं न करोति—जो झूठ बोलता है, कोई भी उसका विश्वास नहीं करता।
१०. यदि कः अपि बालकः असत्यम् वदति तर्हि गुरुः तं ताडयति—अगर कोई भी बालक झूठ बोलता है तो गुरु उसको मारता है।
११. यः सत्यं वदति तस्य सर्वजनः विश्वासं करोति—जो सच बोलता है। उसका सब मनुष्य विश्वास करते हैं।
१२. त्वं सदा सत्यं वद, सत्यभाषणं पुण्यं वर्तते—तू सदा सच बोल, सच बोलना पुण्य है।
१३. यदा बालकः सत्यं वदति तदा गुरुः तं नैवं ताडयति—जब बालक सच बोलता है तब गुरु उसको नहीं मारता।
१४. अतः कदापि असत्यं न वक्तव्यम्, परन्तु सदैव सत्यं वक्तव्यम्—इसलिए कभी भी झूठ नहीं बोलना चाहिए परन्तु सदा सच ही बोलना चाहिए।
१५. इदम् अहम् अनृतात् सत्यम् उपैमि—यह मैं झूठ से (झूठ को छोड़कर) सत्य को प्राप्त होता हूं।

पाठ ३६

पहले पाठों में पुंल्लिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग शब्दों के रूप सात विभक्तियों में दे चुके हैं। कोई अकारान्त शब्द स्त्रीलिंग में नहीं

है। जब कोई अकारान्त शब्द स्त्रीलिंग बनता है तब उसके 'अ' को प्रायः 'आ' हो जाता है। जैसे—

पुंल्लिंग	**उत्तमः पुरुषः**	उत्तम पुरुष
स्त्रीलिंग	**उत्तमा स्त्री**	उत्तम स्त्री

इनमें 'उत्तम' शब्द जो पहले वाक्य में पुंल्लिंग था, वह दूसरे वाक्य में स्त्रीलिंग बना, तब उसका 'उत्तमा' रूप हो गया। इसी प्रकार सब रूप बदलते रहते हैं। देखिये—

(१) **पुंल्लिंग**— १. **श्वेतः रथः**—सफेद रथ(गाड़ी)। २. **मधुरः आम्रः**—मीठा आम। ३. **शोभनः समयः**—अच्छा समय।

(२) **स्त्रीलिंग**—१. **श्वेता पुष्पमाला**—सफेद फूलों की माला। २. **मधुरा कुण्डलिनी**—मीठी जलेबी। ३. **शोभना वेला**—अच्छा समय।

(३) **नपुंसकलिंग**—१. **श्वेतं पुष्पम्** सफेद फूल। २. **मधुरं दुग्धम्**—मीठा दूध। ३. **शोभनं दृश्यम्**—सुन्दर दृश्य (नजारा)।

इस प्रकार तीनों लिंगों में रूप बदलते रहते हैं। विशेषण (गुण-वाचक शब्द) का लिंग विशेष्य (गुणीवाचक शब्द) जैसा होगा। इसी नियमानुकूल उक्त विशेषणों के लिंग गुणी के लिंगों के अनुसार बदलते आए हैं। स्पष्ट समझने के लिए पाठकों को दुबारा देखना चाहिए कि ऊपर दिए हुए तीनों लिंगों के विशेषण, एक ही होते हुए, गुणी के लिंग भिन्न-भिन्न होने के कारण, कैसे भिन्न-भिन्न हो गए हैं। अब इस पाठ में कुछ विशेषण देते हैं—

विशेषण शब्द

उत्तम—उत्तम। **श्रेष्ठ**—श्रेष्ठ अच्छा। **वर**—श्रेष्ठ। **पीत**—पीला।

रक्त—लाल । **नील**—नीला । **अन्ध**—अन्धा । **वधिर**—बहरा । **मध्यम**—बीचवाला । **कनिष्ठ**—कनिष्ठ, छोटा । **चतुर**—चतुर समझदार । **उद्यमशील**—मेहनती, परिश्रमी । **श्वेत**—सफेद । **हरित**—हरा । **ताम्र**—लाल । **तरुण**—जवान । **कृष्ण**—काला । **अलस**—आलसी । **रुग्ण**—रोगी । **नीरोग**—स्वस्थ । **वामन**—ठिगना ।

इन सब शब्दों के लिंग गुणियों (विशेष्यों) के लिंगों के अनुसार बदलते रहेंगे । यह आप निम्न वाक्यों में देख सकते हैं । यदि यह बात पाठकों के ध्यान में आ गई तो आगे का व्याकरण का विषय उनके लिए बहुत ही सुगम हो जाएगा ।

वाक्य

१. **उत्तमः पुरुषः शोभने प्रातःकाले उत्तिष्ठति**—उत्तम मनुष्य सुहावने सवेरे के समय में उठता है ।

२. **शुद्धेन जलेन स्नात्वा सन्ध्योपासनं करोति**—शुद्ध जल से स्नान करके सन्ध्योपासना करता है ।

३. **यः एवं सदा करोति सः एव उत्तमः मनुष्यः भवति**—जो इस प्रकार हमेशा करता है वही उत्तम मनुष्य होता है ।

४. **या एवं सदा करोति सा अपि उत्तमा स्त्री भवति**—जो इस प्रकार हमेशा करती है वह भी उत्तम स्त्री होती है ।

५. **प्रातः स्नानं सन्ध्योपासनं च श्रेष्ठं कर्म अस्ति, इति अहं वदामि**—प्रातः स्नान और सन्ध्योपासना श्रेष्ठ कार्य है यह मैं कहता हूं ।

६. **सः अन्धपुरुषः रक्तं वस्त्रम् आनयति**—वह अन्धा मनुष्य लाल कपड़ा लाता है ।

७. **सा अन्धा स्त्री श्वेतां पुष्पमालाम् आनयति**—वह अन्धी स्त्री सफेद फूलों की माला लाती है ।

८. सः वृद्धः पुरुषः श्वेते रथे उपविश्य अत्र आगच्छति—वह बूढ़ा मनुष्य सफेद गाड़ी में बैठकर यहां आता है।

९. सा वृद्धा स्त्री रक्तं वस्त्रं हस्ते गृहीत्वा धावति—वह बूढ़ी स्त्री लाल कपड़ा हाथ में लेकर दौड़ती है।

१०. सः उद्यमशीलः बालः सदा उत्तमं पुस्तकं पठति—वह उद्यमी बालक सदा उत्तम पुस्तक पढ़ता है।

११. उद्यमशीला बालिका सदा उत्तमां पुष्पमालां करोति—उद्यमी लड़की हमेशा उत्तम पुष्पमाला बनाती है।

१२. सः रुग्णः बालः मधुरम् अपि दुग्धं न पिबति—वह रोगी बालक मीठा दूध नहीं पीता।

१३. सा रुग्णा बालिका मधुरम् अपि दुग्धं न पिबति—वह रोगी लड़की मीठा दूध भी नहीं पीती।

विशेषण शब्द

अखिल—सब सम्पूर्ण। **अधिक**—और बहुत। **अध्येतव्य**—पढ़ने योग्य। **अनुत्तम**—सबसे उत्तम। **अभिवाद्य**—नमस्कार के योग्य। **अधीत**—पढ़ा हुआ। **अनर्घ**—बहुमूल्य। **अन्तिक**—पास। **अन्त्य**—आखीर का, अन्तिम। **अवाच्य**—बोलने के अयोग्य। **अर्पित**—अर्पण किया हुआ। **सन्तुष्ट**—खुश, प्रसन्न। **असन्तुष्ट**—नाखुश, अप्रसन्न। **कठिन**—मुश्किल। **कथनीय**—कहने योग्य। **तुल्य**—समान। **द्रष्टव्य**—देखने योग्य। **निकट**—समीप। **निखिल**—सब। **परिष्कृत**—संस्कार किया हुआ। **पूर्व**—पहला। **पेय**—पीने योग्य। **भक्ष्य**—खाने के योग्य। **दुःखित**—पीड़ित। **अविप्लुत**—सदाचारी। **अशिक्षित**—अज्ञानी। **ईदृश**—ऐसा। **ग्राह्य**—लेने योग्य। **चिन्तित**—सोचा हुआ। **दातव्य**—देने योग्य। **नष्ट**—नाश को प्राप्त। **पथ्य**—हितकारक। **पर**—दूसरा

पालनीय—पालने योग्य। **भीत**—डरा हुआ। **पूजनीय**—सत्कार के योग्य। **बुभुक्षित**—भूखा। **भयाकुल**—डरा हुआ। **मुखोद्गत**—मुख से निकला हुआ।

विशेषणों का उपयोग

पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
१. सन्तुष्टः पुरुषः	सन्तुष्टा नारी	सन्तुष्टं मित्रम्
२. कथनीयः वृत्तान्तः	कथनीया कथा	कथनीयं चरित्रम्
३. द्रष्टव्यः ग्रामः	द्रष्टव्या नदी	द्रष्टव्यं दृश्यम्
४. पूर्वः पुरुषः	पूर्वा दीपमाला	पूर्वं पुस्तकम्
५. दुःखितः पुत्रः	दुःखिता पुत्रिका	दुःखितं कलत्रम्
६. दातव्यः अश्वः	दातव्या गौः	दातव्यं दानम्
७. पालनीयः भृत्यः	पालनीया दासी	पालनीयं मित्रम्

इस प्रकार सब विशेषणों का भिन्न लिंगों में उपयोग होता है। आशा है कि पाठक इस प्रकार प्रयोग करके अनेक वाक्य बनाएंगे। यहां पाठकों को ध्यान में रखना चाहिए कि सब अकारान्त विशेषणों का स्त्रीलिंग में 'आ' बनता है, ऐसा कोई नियम नहीं। खास-खास अवस्था में 'ई' भी बनी है। जैसे—ईदृशः देशः। ईदृशी अवस्था। ईदृशं नगरम्।

इसका विशेष नियम आगे बताया जाएगा। साथ ही पाठकों को ध्यान में रखना चाहिए कि संस्कृत में (विशेष्य-विशेषणों के) लिंग, विभक्ति तथा वचन समान ही होते हैं। जैसे—

(क) १. दातव्यम् अश्वं सः आनयति। २. दातव्याय अश्वाय जलं देहि। ३ दातव्यस्य अश्वस्य वस्त्रं कुत्र अस्ति ?

(ख) १. पालनीयायै पुत्रिकायै अन्नं देहि। २. पालनीयां पुत्रिकां पश्य। ३. पालनीयायाः पुत्रिकायाः पत्रम् आगतम्।

(ग) १. अखिलः संसारः ईश्वरेण कृतः। २. अखिलया सेनया युद्धं

कृतम् । अखिलं पुस्तकं मया पठितम् ।

(घ) १. सन्तुष्टः राजा द्रव्यं ददाति । २ सन्तुष्टं मित्रं किं करोति ? ३. सन्तुष्टा बालिका इदानीं हसति ।

(ङ) १. पूजनीयः गुरुः आगतः । २. पूजनीया माता आगता । ३. पूजनीयं ज्ञानं देहि ।

पाठ ३७

नाम –नाम वाला । कश्चिद्—कोई एक । प्रज्वाल्य—जलाकर । स्वकीय—अपना । सत्वरम्—जल्दी । वर्ण—रंग । सौन्दर्यम्—खूबसूरती । नित्य—हमेशा । लघु—छोटा । आहार—भोजन । नवीन—नया । प्राचीन—पुराना । आकार –शक्ल । कुरूपता—बदसूरती ।

वाक्य

१. गङ्गाधरः नाम कश्चिद् बालः अतीव उद्यमशीलः अस्ति—गंगाधर नामक कोई एक बालक बहुत ही उद्योगी है ।

२. सः प्रातः एव उत्तिष्ठति, दीपं प्रज्वाल्य पुस्तकं गृहीत्वा, स्वीयं पाठं पठति—वह सवेरे ही उठता है, दीप जलाकर, पुस्तक लेकर अपना पाठ पढ़ता है ।

३. यदा सः उत्तिष्ठति तदा सूर्यः अपि न उदयते—जब वह उठता है तब सूर्य भी नहीं उगता ।

४. सः स्वकीयस्य पाठस्य अध्ययनं कृत्वा स्नानं करोति, स्नात्वा च नित्यं कर्म करोति—वह अपने पाठ का अध्ययन करके नहाता है, और नहाकर नित्यकर्म (संध्या आदि) करता है ।

५. पश्चाद् लघुम् आहारं भक्षयित्वा सत्वरं पाठशालां गच्छति—पीछे थोड़ा भोजन खाकर शीघ्र ही पाठशाला को जाता है ।

६. तत्र नवीनं पाठं गृहीत्वा स्वकीयं गृहम् आगच्छति—वहां नया पाठ लेकर अपने घर आता है।
७. सः कदापि मार्गे न क्रीडति—वह कभी मार्ग में नहीं खेलता है।
८. अतः सर्वदा सः प्रसन्नः भवति—अतः हमेशा वह खुश रहता है।

शब्द

पृच्छति—वह पूछता है। **पृच्छसि**—तू पूछता है। **पृच्छामि**—मैं पूछता हूं। **सम्यक्**—अच्छी प्रकार। **प्रतिदिनम्**—हर एक दिन। **पृष्टम्**—पूछा। **पृष्ट्वा**—पूछकर। **प्रश्न**—प्रश्न, सवाल। **उत्तरम्**—उत्तर, जवाब। **वायुसेवनम्**—हवाखोरी।

वाक्य

१. शृणु देवः तं किं पृच्छति—सुन, देव उसको क्या पूछता है।
२. सः उच्चैः न वदति, अतः अहं तस्य भाषणं श्रोतुं न शक्नोमि—वह ऊंचा नहीं बोलता, इसलिए मैं उसका भाषण सुन नहीं सकता।
३. सत्वरं तत्र गत्वा शृणु—शीघ्र वहां जाकर सुन।
४. मम भ्रमणस्य समयः जातः, अतः तत्र गन्तुं न शक्नोमि—मेरा घूमने का समय हो गया है, इसलिए वहां जा नहीं सकता।
५. किं त्वं प्रतिदिनं सायङ्काले भ्रमणाय गच्छसि—क्या तू प्रतिदिन शाम को घूमने के लिए जाता है।
६. अहं दिने दिने सायङ्काले प्रातःकाले वा भ्रमणाय गच्छामि—मैं प्रतिदिन शाम को या सवेरे के समय भ्रमण के लिए जाता हूं।
७. सायङ्कालभ्रमणात् प्रातःकाले भ्रमणं वरम् अस्ति—शाम के समय घूमने से सवेरे के समय घूमना अच्छा है।

क्रियाओं के तीन काल होते हैं। एक वर्तमान काल, दूसरा भूत

काल और तीसरा भविष्यत् काल। इन तीनों कालों में वर्तमान तथा भविष्यत् पाठकों ने जान लिया है। जैसे—

वर्तमान काल—**गच्छामि**—जाता हूं।

भविष्यत् काल—**गमिष्यामि**—जाऊंगा।

भूतकाल का सुगम रूप 'स्म' शब्द से बनता है। वर्तमान काल के रूप के आगे 'स्म' रखने से उसी क्रिया का भूतकाल बनता है। जैसे—

वर्तमान काल	भूतकाल
गच्छति—जाता है।	**गच्छति स्म**—जाता था।
करोति—करता है।	**करोति स्म**—करता था।
उत्तिष्ठति—उठता है।	**उत्तिष्ठति स्म**—उठता था।

वाक्य

१. **रामः उद्याने सदा गच्छति**—राम बाग में हमेशा जाता है।
२. **रामः उद्याने सदा गच्छति स्म**—राम बाग में हमेशा जाता था।
३. **कृष्णेन सह भाषणं करोमि**—(मैं) कृष्ण के साथ बात करता हूं।
४. **त्वं तेन सह भाषणं करोषि**—तू उसके साथ भाषण करता है।
५. **सः मित्रेण सह भाषणं करोति स्म**—वह मित्र के साथ भाषण करता था।
६. **सः बालः मार्गे क्रीडति स्म**—वह बालक मार्ग में खेलता था।
७. **राजा युद्धं करोति स्म**—राजा युद्ध करता था।
८. **सः कर्म करोति स्म**—वह काम करता था।
९. **सः फलं भक्षयति स्म**—वह फल खाता था।
१०. **सः प्रातः उत्तिष्ठति स्म** वह सवेरे उठता था।

पूर्व पाठ में जो विशेषण दिए हैं उनका तीनों लिंगों में उपयोग करके कुछ वाक्य यहां देते हैं। उन्हें देखकर पाठकों को विशेषणों के प्रयोग का ज्ञान हो जाएगा। इसलिए निवेदन है कि पाठक हर एक

वाक्य के विशेषणों को ध्यान से देखें और उपयोग का प्रकार जान लें।

वाक्य

१. अखिलस्य संसारस्य किं मूलम् ? २. अखिलायाः सृष्टेः किं मूलम् ? ३. अखिलस्य जगतः किं मूलम् ?

१. मया उत्तमाय ब्राह्मणाय मोदकः अर्पितः। २. मया उत्तमायै पंडितायै पुष्पमाला अर्पिता। ३. मया उत्तमाय मित्राय पुस्तकम् अर्पितम्।

१. पश्य तं दुःखितं बालकम्। २. पश्य तां दुःखितां नारीम। ३. पश्य तं दुःखितं मित्रम्।

१. तस्मै तृषिताय मनुष्याय पेयं जलं देहि। २. तस्यै तृषितायै पुत्रिकायै पेयां यवागूं देहि। ३. तस्मै तृषिताय मित्राय पेयं दुग्धं देहि।

१. मया अधीतं ग्रन्थं त्वं नय। २. मया अधीतां कथां त्वं शृणु। ३. मया अधीतं पुस्तकं त्वं पठ।

शब्द

संसारः—दुनिया (पुंल्लिग)। पिच्छा—पिच्छ, चावलों का पानी। जगत्—दुनिया (नपुंसक०)। सृष्टिः—दुनिया (स्त्री)। पण्डिता—विदुषी स्त्री। नारिका—स्त्री। शोभन—उत्तम। पण्डितः—विद्वान् पुरुष। कार्य—काम। तृषित—प्यासा। गौः—गाय।

सरल वाक्य

१. मया अभिवाद्यः गुरुः इदानीम् अत्र आगच्छति। २. तेन अद्य शोभना कथा कथनीया। ३. त्वं बधिराय मनुष्याय शुष्कं पुष्पं न देहि। ४. अहं तस्यै बुभुक्षितायै नारिकायै उत्तमम् अन्नं पेयं च पानीयं दातुम् इच्छामि। ५. यदा सः पूजनीयाय गुरवे अखिलं धनं दास्यति तदा

त्वम् एवं वद । ६. पश्य मित्र, मया अद्य प्रातःकाले उत्तमा गौः गंगायाः तीरे दृष्टा । ७. यदा त्वं कठिनं कार्यं करिष्यसि, तदा अहं तव साहाय्याय आगमिष्यामि ।

निम्न वाक्यों की संस्कृत बनाइए—

१. राम की सीता नामक पतिव्रता स्त्री थी । २. रामचन्द्र ने रावण का वध किया । ३. जैसा मार्ग में कल कीचड़ हुआ था, वैसा आज नहीं हुआ । ४. कल बादल से पानी बहुत पड़ा था, इसलिए कीचड़ हुआ था । ५. कपड़ा धोने के लिए शुद्ध जल उत्तम होता है । यह जल अत्यन्त अशुद्ध है, इससे कपड़ा कैसे धोऊं ।

पाठ ३८

शब्द

मालाकारः—माली । लौहकारः—लोहार । रथकारः, काष्ठकारः—तखानि, बढ़ई । वैद्यः—वैद्य । सुवर्णकारः—सुनार । चर्मकारः—चमार । उपानत्—जूता । घटीकारः—घड़ीसाज । वस्त्रकारः—दर्जी । चित्रकारः—चित्रकार । रजकः—धोबी । मूर्तिकारः—मूर्ति बनाने वाला ।

वाक्य

१. मालाकारः उद्याने कर्म करोति—माली बाग में काम करता है ।
२. वैद्यः रुग्णाय जनाय औषधं ददाति—वैद्य रोगी मनुष्य के लिए (को) दवाई देता है ।
३. सुवर्णकारः सुवर्णस्य आभूषणं करोति स्म—सुनार सोने का गहना बनाता था ।
४. चर्मकारः उपानत् करोति—चमार जूता बनाता है ।

५. चित्रकारः उत्तमम् आलेख्यम् आलिखति—चित्रकार उत्तम चित्र खींचता है।

६. रजकः जलेन वस्त्रं प्रक्षालयति—धोबी जल में कपड़े धोता है।

७. घटीकारः घटीयन्त्रं करोति—घड़ीसाज घड़ी बनाता है।

८. रथकारः रथं करोति स्म—बढ़ई गाड़ी बनाता है।

शब्द

पुष्पाणि—(अनेक) फूल। वस्त्राणि—(अनेक) वस्त्र। पात्राणि—(अनेक) पात्र। रजतम्—चांदी। ताम्रम्—तांबा। पित्तलम्—पीतल। भवन्ति-होते हैं। लौहः—लोहा। सुवर्णम्—सोना। वङ्गम्—कलई। रजताभ्रकम्—एलुमीनियम। मृण्मय—मिट्टी का। बहूनि—बहुत। साधु—अच्छे प्रकार।

वाक्य

१. मालाकारः उद्यानं गत्वा बहूनि पुष्पाणि आनयति—माली बाग में जाकर बहुत फूल लाता है।

२. सुवर्णकारः रजतस्य बहूनि पात्राणि अतीव मनोहराणि करोति—सुनार चांदी के बहुत बर्तन अत्यन्त सुन्दर बनाता है।

३. ताम्रस्य पात्रे जलम् अतीव सुशुद्धं भवति—तांबे के बर्तन में जल अत्यन्त पवित्र होता है।

४. पित्तलस्य पात्राणि पीतानि भवन्ति—पीतल के बर्तन पीले होते हैं

५. ताम्रस्य पात्राणि रक्तानि—तांबे के बर्तन लाल होते हैं।

६. रजकः रक्तं वस्त्रं साधु प्रक्षालयितुं न शक्नोति—धोबी लाल कपड़ा अच्छी प्रकार नहीं धो सकता।

७. सुवर्णपात्रं शोभनम्—सोने का बर्तन अच्छा है।

शब्द

तडागः—तालाब। कूपः—कुआं। समुद्रः—समुद्र। सागरः—समुद्र। समीपम्—पास। प्रपा—पानी पीने का स्थान, पियाऊ। नदी—दरिया। स्नानगृह—नहाने का स्थान। जलनलिका—पानी का नलका।

वाक्य

१. त्वं तडागस्य समीपं गच्छ तत्रैव[1] च स्नानं कुरु—तू तालाब के पास जा और वहां ही स्नान कर।
२. तस्य तडागस्य जलमतीव[2] मलिनमस्ति[3] तेन स्नानं कर्तुं नेच्छामि[4]—उस तालाब का जल बहुत ही मलिन है, उससे स्नान करना नहीं चाहता।
३. तर्हि अस्य कूपस्य जलेन स्नानं कुरु—तो इस कुएं के जल से स्नान कर।
४. अस्य कूपस्य जलं बहु शीतम् अस्ति, अतः अहं तेनापि स्नानं कर्तुं नेच्छामि—इस कुएं का जल बहुत ठंडा है, इसलिए मैं उससे भी स्नान करना नहीं चाहता।
५. यदि कूपस्य शुद्धेन जलेन अपि स्नानं कर्तुं नेच्छसि तर्हि मम स्नानागारे गत्वा तत्र स्थितेन जलेन स्नानं कुरु—अगर कुएं के शुद्ध जल से भी स्नान करना नहीं चाहता, तो मेरे स्नानघर में जाकर वहां पड़े हुए जल से स्नान कर।
६. शोभनम्! भो मित्र! यथा त्वया उक्तं तथा करोमि—अच्छी बात है! हे मित्र! जैसा तूने कहा वैसा करता हूं।

---

१. तत्र+एव। २. जलम्+अतीव। ३. मलिनम्+अस्ति। ४. न+इच्छामि।

शब्द

वक्तुम्—बोलने के लिए। **शिक्षितः**—सिखाया हुआ। **नरपतिः**—राजा **कस्मिश्चिद्**—किसी एक में। **प्रश्ने कृते**—प्रश्न करने पर। **अनयत्**—(वह) ले गया। **अनयः**—(तू) ले गया। **अनयम्**—(मैं) ले गया। **प्रविश्य**—प्रवेश करके। **भाषणम्**—बोलना। **श्रुत्वा**—सुनकर। **स्वमन्दिरम्**—अपना महल। **मूर्खः**—मूढ़। **क्रीतः**—खरीदा हुआ। **शुकः**—तोता। **सन्देहः**—सशंय। **नरेशः**—राजा। **राज्ञा**—राजा ने। **राजन्**—हे राजा। **राजसभा**—राजा का दरबार। **वाचम्**—वाणी को **लक्षरूप्यकाणि**—लाख रुपये। **ददौ**—दिये। **स्थापयित्वा**—रखकर। **कुपितः**—क्रोधित। **बहुमूल्यः**—बहुत कीमत वाला। **पृष्टवान्**—पूछा। **पक्षिपालकः**—पक्षियों का पालन करने वाला। **धूर्तः**—शठ, ठग।

शुकस्य कथा

केनचित् धूर्तेन पक्षिपालकेन एकः शुकः मनुष्य इव वक्तुं शिक्षितः। कस्मिश्चिद् अपि प्रश्ने कृते 'अत्र कः सन्देहः' इत्येव सः शुकः वदति। एकदा सः पक्षिपालकः तं शुकं नरेशस्य समीपम् अनयत्। तत्र राजसभां प्रविश्य पक्षिपालकेन उक्तम्—"हे राजन्! अयं शुकः मनुष्य इव सर्वभाषणं वदति।" पक्षिपालकस्य एतद् वचनं श्रुत्वा राज्ञा शुकं प्रति प्रश्नः कृतः—"हे शुक! किं त्वं सर्वदा मनुष्यस्य वाचं वदसि?

शुकेन उक्तम्—"अत्र कः सन्देहः।" इति तेन उत्तरेण अतीव सन्तुष्टः सः राजा तस्मै पक्षिपालकाय लक्षरूप्यकाणि ददौ। पश्चाद् स्वमन्दिरे शुकं नीत्वा तत्र च उत्तमे स्थाने तं स्थापयित्वा यदा प्रश्नः कृतः तदा सर्वस्य अपि प्रश्नस्य 'अत्र कः सन्देहः' इति एव एकम् उत्तरं तेन शुकेन दत्तम्। तदा कुपितेन राज्ञा पुनः शुकं प्रति प्रश्नः कृतः—

"रे शुक! त्वम् 'अत्र कः सन्देहः' इति एव वक्तुं जानासि?"

शुकेन उक्तम्—"अत्र कः सन्देहः" इति। तदा सः राजा तं शुकं पुनः पृष्टवान्—"रे शुक ! तर्हि किम् अहं मूर्खः, यत् मया बहुमूल्येन त्वं क्रीतः।" शुकेन उक्तम्—"अत्र कः सन्देहः" इति।

विचार्य एव सर्वं कार्यं कर्तव्यम्। यथा राज्ञा अविचार्य एव महता मूल्येन शुकः क्रीतः तथा केन अपि मूर्खत्वं न कर्तव्यम्।

पाठ ३९

शब्द

ईश्वरः—ईश्वर। पालकः—पालन करने वाला। जनः—मनुष्य। द्वारपालः—दरबान, चपरासी। कर्दमः—कीचड़। तन्तुवायः—जुलाहा। सौचिकः—दर्जी। गोधूमः—गेहूं, कनक। बिडालः—बिल्ली। मण्डूकः—मेंढक। वृषभः—बैल।

ऊपर लिखे शब्दों की सातों विभक्तियों के रूप पूर्वोक्त 'देव' शब्द के समान होते हैं।

वाक्य

१. द्वारपालकः द्वारि तिष्ठति गृहं च रक्षति—दरबान दरवाजे पर खड़ा रहता है और घर की रक्षा करता है।
२. वानरः वृक्षे स्थित्वा फलं भक्षयति—बन्दर वृक्ष पर रहकर फल खाता है।
३. ईश्वरः पालकः अस्ति, सर्वं च विश्वं सर्वदा रक्षति—परमेश्वर रक्षक है और सारे संसार की सदा रक्षा करता है।
४. ह्यः तेन द्वारपालेन चौरः अतीव ताडितः—कल उस पहरेदार ने चोर को बहुत ही पीटा।
५. मण्डूकः जले अस्ति, तं पश्य—मेंढक पानी में है, उसे देख।

६. बिडालः दुग्धं पिबति—बिल्ला दूध पीता है।

क्रिया

पतति—(वह) गिरता है। पतसि—(तू) गिरता है। पतामि—गिरता हूं। चलति—(वह) चलता है। पतिष्यति—(वह) गिरेगा। पतिष्यसि—(तू) गिरेगा। पतिष्यामि—गिरूंगा। चलसि—(तू) चलता है। चलामि—चलता हूं। चलिष्यति—(वह) चलेगा। चलिष्यसि—(तू) चलेगा। चलिष्यामि—चलूंगा।

वाक्य

१. रामचन्द्रस्य पुत्रः अतीव धावति, अतः पतति च—रामचन्द्र का लड़का बहुत ही दौड़ता है, इसलिए गिरता है।
२. यदि त्वम् एवं करिष्यसि तर्हि पतिष्यसि एव—अगर तू ऐसा करेगा तो गिरेगा ही।
३. त्वं श्वः प्रातःकाले भ्रमणाय चलिष्यसि किम्—तू कल सवेरे घूमने के लिए चलेगा क्या?
४. अहम् इदानीं तस्य छत्रं नयामि, त्वं तस्मै कथय—मैं अब उसका छाता ले जाता हूं, तू उसे कह।
५. तस्य गृहे अश्वः अस्ति तथा विडालः अपि अस्ति—उसके घर घोड़ा है तथा बिल्ला भी है।
६. तस्य वस्त्रं मया प्रक्षालितम्—उसका वस्त्र मैंने धोया।

शब्द

प्रदीप.—दीया। घृतम्—घी। तक्रम्—लस्सी (दही की), मट्ठा। भूतम्—हो गया। पचति—(वह) पकाता है। पचसि—(तू) पकाता है। पचामि—पकाता हूं। पचिष्यति—वह पकाएगा। पचिष्यसि—तू पकाएगा। पचिष्यामि—पकाऊंगा।

वाक्य

१. सः तस्य गृहे अन्नं पचति—वह उसके घर में अन्न पकाता है।
२. तस्य पेटकः कुत्र अस्ति यस्मिन् तेन स्वकीयं द्रव्यं रक्षितम् अस्ति—उसका सन्दूक कहां है, जिसमें उसने अपना धन रखा है ?
३. यदा सः पुरुषः स्वगृहं गतः तदा तेन स्वकीयः पेटकः कुत्र स्थापितः इति अहं न जानामि—जब वह मनुष्य अपने घर गया तब उसने अपना ट्रंक कहां रखा, यह मैं नहीं जानता।
४. भूमित्रः जानाति किम्—क्या भूमित्र जानता है ?
५. हे भूमित्र ! किं त्वं जानासि—हे भूमित्र ! क्या तू जानता है ?
६. अहमपि नैव जानामि परन्तु सूर्यसिंहः जानाति—मैं भी नहीं जानता, परन्तु सूर्यसिंह जानता है।
७. तर्हि तं पृच्छ—तो उसे पूछ।
८. स वदति स्वपेटकः अपि तेन स्वगृहं नीतः इति—वह कहता है कि वह अपना ट्रंक भी वहीं अपने घर ले गया।
९. ईश्वरस्य पूजनम् अवश्यं कर्तव्यम्—ईश्वर का पूजन अवश्य करना चाहिए।
१०. अध्यापकस्य समीपं सत्वरं गच्छ—गुरु के समीप जल्दी जा।

नपुंसकलिंग सर्वनामों के एकवचन में रूप

(१) सर्व—प्रथमा	सर्वम्	सब
,, द्वितीया	,,	सबको
(२) किम्—प्रथमा	किम्	कौन
,, द्वितीया	,,	किसको
(३) यत्—प्रथमा	यत्	जो
,, द्वितीया	,,	जिसको

(४) तत्—**प्रथमा** तत् वह
,, **द्वितीया** ,, उसको

इनकी शेष विभक्तियों के रूप सर्वनामों के पुंल्लिग रूपों के समान ही होते हैं। देखिए पाठ १७ में 'सर्व' शब्द' पाठ १८ में 'किम्' शब्द, पाठ २२ में 'यद्' शब्द तथा 'तद्' शब्द। पाठक इनके रूप बनाकर लिखे, जिससे वे इनको कभी भूल न सकें।

पाठ ४०

शब्द

कथयति—(वह) कहता है। **कथयसि**—(तू) कहता है। **कथयामि**—कहता हूं। **वहति**—(वह) बोझ उठाता है। **वहसि**—(तू) बोझ उठाता है। **वहामि**—(मैं) बोझ उठाता हूं। **शकटः**—गड्डा, छकड़ा। **बलीवर्दः**—बैल। **कथयिष्यसि**—(तू) कहेगा। **कथयिष्यति**—(वह) कहेगा। **वहिष्यति**—(वह) बोझ उठाएगा। **कथयिष्यामि**—कहूंगा। **वहिष्यामि**—(मैं) बोझ उठाऊंगा। **वहिष्यसि**—(तू) बोझ उठाएगा। **छत्रम्**—छाता। **भृत्यः**—नौकर। **विष्टरः**—कुर्सी, स्टूल, आसन।

वाक्य

१. **सः पण्डितः रात्रौ रामस्य कथां कथयिष्यति, त्वमपि श्रोतुम् आगच्छ**—पण्डित रात को राम की कथा करेगा, तू भी सुनने के लिए आ।

२. **बलीवर्दः शकटं वहति, ग्रामात् ग्रामं चलति च**—बैल गाड़ी खींचता है और एक गांव से दूसरे गांव को जाता है।

३. **रजकस्य महिषः अद्य अत्र न अस्ति, यत्र कुत्र अपि गतः**—धोबी का भैंसा आज यहां नहीं है, कहीं इधर उधर चला गया है।

४. मम भृत्यः इदानीमेव आपणं गतः, सः अद्य सायम् आगमिष्यति—मेरा नौकर अभी बाज़ार गया है, वह आज शाम को आएगा।

५. कथय, ह्यः तेन किं किं कृतं, कथं च दिनं गतम् इति—कह, कल उसने क्या-क्या किया और कैसे दिन गया ?

शब्द

ज्वलसि—(तू) जलता है। ज्वलामि—जलता हूं। जल्पति—(वह) बोलता है। जल्पसि—(तू) बोलता है। जल्पामि—बोलता हूं। योग्य—लायक। दीपशलाका-पेटिका—दियासलाई की डिब्बी। दीपशलाका—दियासलाई। ज्वलिष्यति—(वह) जलेगा। ज्वलिष्यसि—(तू) जलेगा। ज्वलिष्यामि—जलूंगा। जल्पिष्यति—(वह) बोलेगा। जल्पिष्यसि—(तू) बोलेगा। जल्पिष्यामि—बोलूंगा। गाढः—घना। प्रज्वालय—जला।

वाक्य

१. तत्र अग्निः ज्वलति, अतः तत्र त्वं न गच्छ—वहां आग जलती है, इसलिए वहां तू न जा।

२. सः एवं वृथा जल्पति, तत् न श्रोतुं योग्यम् अस्ति—वह इस प्रकार व्यर्थ बोलता है, वह सुनने योग्य नहीं।

३. इदानीं रात्रिः आगता, गाढः अन्धकारः भविष्यति, अतः प्रदीपं प्रज्वालयिष्यामि—अब रात्रि आ गई, घना अंधेरा हो जाएगा, इसलिए दिया जलाऊंगा।

४. तेन अग्निशलाका-पेटिका कुत्र रक्षिता इति न जानामि—उसने दियासलाई की डिब्बी कहां रखी यह मुझे पता नहीं।

५. तत्र मञ्चके दीपशलाका अस्ति। तां गृहीत्वा दीपं प्रज्वालय शीघ्रं च अत्र आनय—वहां मेज पर दियासलाई है। उसे लेकर दिया जला, और जल्दी यहां ले आ।

शब्द

निर्मितः—बनाया। **चोरयति**—(वह) चुराता है। **चोरयसि**—(तू) चुराता है। **चोरयामि**—चुराता हूं। **चोरयिष्यति**—(वह) चुराएगा। **चोरयिष्यसि**—(तू) चुराएगा। **चोरयिष्यामि**—चुराऊंगा। **अपहृता**—चुराई। **चपेटिका**—चपत। **कटः**—चटाई। **शिक्यम्**—छिक्का। **पुच्छम्**—पूंछ, दुम। **व्रश्चनः**—चाकू।

वाक्य

१. **त्वं तं कटं कुत्र नयसि**—तू उस चटाई को कहां ले जाता है।
२. **अहं तं स्वगृहं नयामि**—मैं उसे अपने घर ले जाता हूं।
३. **तव यष्टिका कुत्र अस्ति**—तेरी सोटी कहां है?
४. **मम यष्टिका चौरेण ह्यः अपहृता**—मेरी सोटी कल चोर नें चुराई।
५. **तस्य खट्वा कुत्र अस्ति**—उसकी चारपाई कहां है?
६. **तस्य अश्वस्य पुच्छं पश्य**—उसके घोड़े की पूंछ देख।
७. **तस्मिन् शिक्ये तेन पात्रं रक्षितम्**—उस छिक्के में उसने बर्तन रखा।
८. **तस्मिन् पात्रे मया दुग्धं रक्षितम्**—उस बर्तन में मैंने दूध रखा।
९. **तद् दुग्धं बिडालेन अद्य पीतम्, अतः तत्र दुग्धं नास्ति**—वह दूध बिल्ले ने आज पिया, इसलिए वहां दूध नहीं है।
१०. **यः लोहस्य पेटकः तेन लोहकारेण निर्मितः सः अतीव शोभनः**—जो लोहे का ट्रंक उस लोहार ने बनाया, वह बहुत ही अच्छा है।

शब्द

भाद्रपदः—भादों। **कृष्ण**—कृष्ण-पक्ष। **सप्तम्याम्**—सप्तमी के दिन। **ऊर्णा**—ऊन। **ऊर्णावस्त्रम्**—दुशाला, ऊनी वस्त्र। **प्राचीनतमः**—अत्यन्त पुराना। **मनोरमः**—मन को आनन्द देने वाला। **प्राचीनः**—पुराना। **प्रसन्नः**—आनन्दित। **घर्मः**—गरमी। **गुणसम्पन्नः**—गुणी।

नगरदर्शनाय—शहर दिखाने के लिए। **निश्चयः**—निश्चय। **अलम् अतिविस्तरेण**—बहुत विस्तार व्यर्थ है। **द्वन्द्वम्**—युद्ध। **काव्यम्**—काव्य। **छिद्रम्**—सूराख। **तैलम्**—तेल। **प्रेषितः**—भेजा हुआ। **शम्**—सुख। **अनुसृत्य**—अनुसरण करके। **द्रष्टव्यम्**—देखने योग्य। **शर्मणः**—शर्मा का। **क्रेतुम्**—खरीदने के लिए। **अतीव**—बहुत ही। **इतिहासः**—तवारीख, इतिहास। **नाम्ना**—नाम से। **आसीत्**—था। **चिह्न**—निशान। **पराकाष्ठा**—ऊंचे दर्जे तक। **धनाढ्य**—पैसे वाला। **अश्व-रथः**—घोड़ा-गाड़ी। **तैलवाष्पम्**—तेल की भाप। **पदातिना**—पैदल। **प्रशंसा**—स्तुति। **निन्दा**—निन्दा। **निद्रा**—नींद। **कौमुदी**—चांदनी।

पत्र-लेखनम्

ॐ

दिल्ली नगरे
विक्रमीये २००८ संवत्सरे
भाद्रपदस्य कृष्ण-सप्तम्याम्

भोः प्रियमित्र यज्ञदत्त !

नमस्ते ! तव आज्ञाम् अनुसृत्य अहम् अत्र अद्य प्रातः एव आगतः। अस्मिन् नगरे यत् किंचिद् अपि द्रष्टव्यम् अस्ति तद् दृष्ट्वा श्वः वा परश्वः वा अस्मात् स्थानात् अमृतसरनगरं गमिष्यामि। यदा अहम् अमृतसरं गमिष्यामि तदा तव मित्रस्य चन्द्रकेतुशर्मणः कृते एकं ऊर्णा-वस्त्रं क्रेतुम् इच्छामि।

भोः प्रियवयस्य ! एतद् दिल्लीनगरम् अतीव सुन्दरम् अस्ति। अस्य प्राचीनतमः इतिहासः च अतीव मनोरमः अस्ति। अद्य एव इन्द्रप्रस्थं तथा 'कुतुबमीनार' इति नाम्ना प्रसिद्धं स्थानम् अपि मया दृष्टम्।

पाण्डवानां समये एतद् एव दिल्लीनगर 'इन्द्रप्रस्थः' इति नाम्ना प्रसिद्धम् आसीत् । हस्तिनापुरं तु मेरठमण्डले अस्ति ।

ईदृशस्य प्राचीनतमस्य स्थानस्य दर्शनेन मम मनः प्रसन्नं भवति । पाण्डवकालस्य स्मरणम् अपि पुरुषम् आनन्दस्य पराकाष्ठां नयति ।

अत्र तु अस्मिन् मासे शीतं न भवति । सूर्यस्य आतपेन घर्मः एव भवति । शीतकाले बहुशीतं तथा उष्णकाले अतीव घर्मः भवति ।

अत्र अहं महाशयस्य कुन्दनलालस्य गृहे स्थितः । महाशयः कुन्दनलालः अतीव धनाढ्यः पुरुषः अस्मिन् नगरे अस्ति । तस्य पुत्रः चन्दनलालनामकः गुणसम्पन्नः अस्ति । एष चन्दनलालः मया सह नगरदर्शनाय भ्रमति ।

अहं न अश्वरथेन भ्रमामि नापि 'मोटर'-इति नाम्ना प्रसिद्धेन तैलवाष्प-रथेन । परन्तु यद् द्रष्टव्यम् अस्ति तत् सर्वं पदातिना एव द्रष्टव्यम् इति मया निश्चयः कृतः ।

इदानीम् अलम् अतिविस्तरेण । मम अन्यत् पत्रम् अमृतसरात् प्रेषितं भविष्यति । इति शुभम् ।

भवदीयः वयस्यः—

आनन्दसागरः

पाठ ४१

शब्द

(पुंलिंग)	(नपुंसकलिंग)
अर्भकः—बालक	कुसुमम्—फूल ।
ग्रामः—गांव ।	गरलम्—जहर ।
चरणः—पांव ।	जलम्—पानी ।
नृपः—राजा ।	पर्णम्—पत्ता ।

प्रसादः—कृपा, मेहरबानी । पत्रम्—पत्ता, पत्र ।
रक्षकः—पहरेदार । भूषणम्—ज़ेवर ।
वत्सः—बछड़ा, बालक । पुरम्—शहर ।

ऊपर पुंल्लिग तथा नपुंसकलिंग शब्द दिए हैं । जिनके आगे विसर्ग रखा हुआ है वे शब्द पुंल्लिग समझने चाहिएं, जैसे—नृपः, वत्सः इत्यादि । जिनके अन्त में अनुस्वार अथवा 'म्' हो वे शब्द नपुंसकलिंग समझने चाहिएं, जैसे—पुरं, पत्रम् इत्यादि । आगे के पाठों में हम इसी प्रकार शब्द रखेंगे जिससे पाठकों को शब्दों के लिंगों का पता लग जाए ।

जिन शब्दों के अन्त में 'आ' होता है, वे शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं । देखिए—

शब्द

गङ्गा—गङ्गा नदी । यमुना—यमुना । देवता—देवी, देवता । कला—हुनर । कन्या—लड़की । रेखा—लकीर । तारका—तारा । क्षमा—शान्ति, पृथ्वी । प्रिया—प्यारी, धर्मपत्नी ।

वाक्य

१. मनुष्यः ईश्वरस्य प्रसादेन सर्वं सुखं प्राप्नोति—मनुष्य ईश्वर की कृपा से सब सुख प्राप्त करता है ।
२. एषः मित्रस्य गृहस्य मार्गः अस्ति—यह दोस्त के घर का मार्ग है ।
३. देवदत्तः नृपस्य प्रसादेन अतीव धनं प्राप्नोति—देवदत्त राजा की कृपा से बहुत द्रव्य प्राप्त करता है ।
४. तव मित्रस्य निवासः कुत्र अस्ति—तेरे मित्र का निवास कहां है ।
५. अद्य-श्वः मम मित्रस्य निवासः अमृतसरनगरे अस्ति—आजकल मेरे मित्र का निवास अमृतसर शहर में है ।
६. किं त्वं तं द्रष्टुम् इच्छसि—क्या तू उसे देखना चाहता है ?
७. अथ किम्, अहं तं शीघ्रं द्रष्टुम् इच्छामि—और क्या, मैं उसको

जल्दी देखना चाहता हूं।

८. किमर्थं तं त्वम् एवं द्रष्टुम् इच्छसि—किसलिए तू उसे इस प्रकार देखना चाहता है।

९. अतीव कालः जातः यदा मया सः दृष्टः, अतः अहं तं द्रष्टुम् इच्छामि—बहुत समय हुआ जब मैंने उसको देखा था, इसलिए मैं उसे देखना चाहता हूं।

१०. तर्हि अद्य मध्याह्ने गच्छ—तो आज दोपहर को जा।

११. यद्यहम् इतः मध्याह्ने चलिष्यामि, तर्हि अमृतसरं कदा गमिष्यामि—अगर मैं यहां से दोपहर को चलूंगा तो अमृतसर कब पहुंचूंगा।

१२. यदि त्वं मध्याह्ने त्रिवादनसमये अग्निरथेन चलिष्यसि, तर्हि पञ्चवादनसमये अमृतसरं गमिष्यसि—अगर तू दोपहर तीन बजे के समय रेलगाड़ी से चलेगा तो पांच बजे अमृतसर पहुंचेगा।

१३. तर्हि तदा एव अहं गमिष्यामि—तो तभी मैं जाऊंगा।

१४. यदा त्वं तत्र गमिष्यसि तदा मम पुस्तकम् अपि तत्र नय—जब तू वहां जाएगा तब मेरी पुस्तक भी वहां ले जा।

१५. गङ्गाजलम् अतीव निर्मलम् अस्ति, अतः तद् एव पातुम् इच्छामि—गंगाजल बहुत ही स्वच्छ है, अतः वही पीना चाहता हूं।

१६. रक्षकः द्वारात् बहिः तिष्ठति—पहरेदार दरवाजे के बाहर खड़ा है।

१७. पुरात् बहिः वनम् अस्ति—शहर से बाहर जंगल है।

१८. तस्य पुत्रः पाठशालायां पठति—उसका लड़का स्कूल में पढ़ता है।

१९. समुद्रे अतीव जलं भवति—समुद्र में बहुत जल होता है।

२०. त्वं गरलं मा पिब—तू ज़हर न पी।

शब्द

लेखनम्—लिखना। धनिकः—पैसे वाला। अन्यः—दूसरा। वाचनम्—

बांचना, पढ़ना । धृत्वा—पकड़कर। विचार्य—विचार करके । उपविश्य—बैठकर । पालितः—पाला हुआ । निक्षिप्य—रखकर । साहित्यम्—सामान । आसनम्—बैठने का स्थान । बहिः—बाहर । यावत्—जब तक । एकः—एक । उक्तवान्—बोला । तावत्—तबतक । प्रारम्भः—आरम्भ । स्वकीयः—अपना । विहस्य हंसकर । विलोक्य—देखकर । यथापूर्वम्—पहले के समान ।

वानरस्य कथा

एकस्मिन् नगरे केनचिद् धनिकेन एकः वानरः पालितः । सः धनिकः नित्यं वानरस्य समीपे एव उपविश्य लेखनं वाचनं च करोति स्म । एकदा सः धनिकः लेखनस्य साहित्यं तत्र एव निक्षिप्य अन्यं कार्यं कर्तुं बहिः गतः । 'अहम् अपि धनिकवत् लिखामि' इति विचार्य वानरः धनिकस्य आसने उपविश्य एकेन हस्तेन पत्रं गृहीत्वा द्वितीयेन लेखनीं धृत्वा यावत् लेखनस्य प्रारम्भं कृतवान् तावद् धनिकः अपि तत्र आगतः । तं वानरं विलोक्य विहस्य उक्तवान्—'भोः वानरश्रेष्ठ ! इदं किं करोषि ? कस्मै पत्रं लिखसि ?' इति वानरः अपि शीघ्र स्वकीयस्थानं गत्वा यथापूर्वम् उपविष्टः ।

पाठ ४२

शब्द

पिष्टम्—आटा, पीसी हुई कोई वस्तु । कुसुमम्—फूल । एकदा—एक समय । इतः—यहां से । ततः—वहां से । कुतः—कहां से । सर्वतः—सब ओर । अक्षः—पांसा । अक्षैः—पांसों से । अग्रम्—नोक । अनृतम्—असत्य । ऋतम्—सत्य । अमृतम्—अमृत । अम्बरम्—आकाश । अम्बुजम्—कमल । अरण्यम्—जंगल । अङ्गरागः—उबटन ।

हृदयम्—दिल । **कम्पनम्**—कांपना । **अन्यायः**—अन्याय । **अपराधः**—गुनाह । **अभिप्रायः**—मतलब । **अलङ्कारः**—जेवर । **सैनिकः**—फौजी । आदमी । **भारवाहकः**—कुली । **अशुभम्**—पाप । **अक्षरम्**—अक्षर, हर्फ । **अङ्गम्**—अंग, शरीर । **अञ्जनम्**—सुरमा । **अध्ययनम्**—पढ़ाई । **अद्भुतम्**—अजीब । **कारागृहम्**—जेलखाना । **चाञ्चल्यम्**—चंचलता ।

क्रिया

परिदधाति—(वह) पहनता है । **परिदधासि**—(तू) पहनता है । **परिदधामि**—पहनता हूं । **परिधास्यति**—(वह) पहनेगा । **परिधास्यसि**—(तू) पहनेगा । **परिधास्यामि**—पहनूंगा । **यामि**—जाता हूं । **यासि**—(तू) जाता है । **याति**—(वह) जाता है । **यास्यामि**—जाऊंगा । **यास्यसि**—(तू) जाएगा । **यास्यति**—(वह) जाएगा ।

वाक्य

१. एकदा अहं वनं गतः—एक समय मैं वन को गया ।

२. तत्र मया एकः वृक्षः दृष्टः—वहां मैंने एक वृक्ष देखा ।

३. तस्य फलम् अतीव मधुरम्—उसका फल बहुत ही मीठा था ।

४. तत् फलं मया भक्षितम्—वह फल मैंने खाया ।

५. तस्य कन्या अलङ्कारं परिदधाति--उसकी लड़की जेवर पहनती है ?

६. अलङ्कारः सुवर्णस्य रजतस्य च भवति—जेवर सोने का तथा चांदी का होता है ।

७. तस्य कः अपराधः आसीत् यतः सः कारागृहे स्थापितः—उसका क्या कसूर था, जिस कारण वह जेलखाने में रखा गया ।

८. अक्षैः मा क्रीड—पांसों से न खेल ।

९. वृथा मा अट—व्यर्थ न घूम ।

१०. सदा अध्ययनं कुरु—हमेशा पढ़ ।

११. कदापि अन्यायं न कुरु—कभी अन्याय न कर।
१२. तस्य कः अभिप्रायः अस्ति—उसका क्या मतलब है ?
१३. अद्य अनेन मार्गेण यास्यामि—आज इस मार्ग से जाता हूं।
१४. तेन अद्भुतम् आलेख्यं निर्मितम्—उसने अद्भुत तस्वीर बनाई।
१५. सः भारवाहकः कुत्र अस्ति येन तव पेटकः नीतः—वह कुली कहां है जिसने तेरा ट्रंक उठाया ?

शब्द

तडागः—तालाब। उत्कण्ठे—समीप। समीपम्—पास। प्रभूतम्—बहुत। तृणम्—घास। खगः—पक्षी।

वाक्य

१. एकदा कश्चिद् बालकः तडागस्य समीपं गतः—एक समय कोई बालक तालाब के पास गया।
२. तेन बालकेन तत्र तडागे एकः मण्डूकः दृष्टः—उस बालक ने वहां तालाब में एक मेंढक देखा।
३. जलपानार्थं तत्र एकः बलीवर्दः अपि आगतः—पानी पीने के लिए वहां एक बैल भी आया।
४. तेन वृषभेण प्रभूतं जलं पीतम्—उस बैल ने बहुत जल पीया।
५. तेन बालकेन तस्मै वृषभाय भक्षणार्थं तृणं दत्तम्—उस बालक ने उस बैल को खाने के लिए घास दिया।
६. तत् तृणं तेन वृषभेण शीघ्रमेव भक्षितम्—वह घास उस बैल ने जल्दी से ही खा लिया।
७. पश्चात् तत्र एकः खगः आगतः—पीछे वहां एक पक्षी आ गया।
८. तस्मै केनचिद् एकः मोदकः दत्तः—उसको किसी ने एक लड्डू दिया।

संख्यावाचक शब्द

पुंल्लिग		स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
१. एकः	(एक)	एका	एकम्
२. द्वौ	(दो)	द्वे	द्वे
३. त्रयः	(तीन)	तिस्रः	त्रीणि
४. चत्वारः	(चार)	चतस्रः	चत्वारि

नीचे दिए हुए शब्दों के पुंल्लिग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग में एक जैसे ही रूप होते हैं।

५. पञ्च	(पांच)	१७. सप्तदश	(सत्रह)
६. षट्	(छः)	१८. अष्टादश	(अठारह)
७. सप्त	(सात)	१९. एकोनविंशतिः	(उन्नीस)
८. अष्ट	(आठ)	२०. विंशतिः	(बीस)
९. नव	(नौ)	२१. एकविंशतिः	(इक्कीस)
१०. दश	(दस)	२२. द्वाविंशतिः	(बाईस)
११. एकादश	(ग्यारह)	२९. एकोनत्रिंशत्	(उनत्तीस)
१२. द्वादश	(बारह)	३०. त्रिंशत्	(तीस)
१३. त्रयोदश	(तेरह)	३१. एकत्रिंशत्	(इकत्तीस)
१४. चतुर्दश	(चौदह)	४०. चत्वारिंशत्	(चालीस)
१५. पञ्चदश	(पन्द्रह)	५०. पञ्चाशत्	(पचास)
१६. षोडश	(सोलह)	६०. षष्टिः	(साठ)

बारह महीनों के नाम (पुंल्लिग)

१. चैत्रः २. वैशाखः ३. ज्येष्ठः ४. आषाढः ५. श्रावणः ६. भाद्रपदः ७. आश्विनः ८. कार्तिकः ९. मार्गशीर्षः १०. पौषः ११. माघः १२. फाल्गुनः।

तिथियों के नाम (स्त्रीलिंग)

१. प्रतिपदा २. द्वितीया ३. तृतीया ४. चतुर्थी ५. पंचमी ६. षष्ठी ७. सप्तमी ८. अष्टमी ९. नवमी १०. दशमी ११. एकादशी १२. द्वादशी १३. त्रयोदशी १४. चतुर्दशी १५. पूर्णिमा ३० अमावस्या।

पक्षों के नाम (पुंल्लिंग)

शुक्ल-पक्ष—चांदनी पाख, जिन पन्द्रह दिनों में शाम के समय चांद होता है। **कृष्ण-पक्ष**—अंधेरा पाख, दूसरे पन्द्रह दिन, जिन दिनों में शाम के समय चांद नहीं होता है।

पाठ ४३

इस पाठ में एक ब्राह्मण की कथा दी हुई है। इसके कठिन शब्दों का अर्थ पाठ के अन्त में दिया है।

१ **कस्मिश्चिद् ग्रामे यज्ञप्रियनामकः एकः ब्राह्मणः प्रतिवसति स्म**—किसी गांव में यज्ञप्रिय नामक एक ब्राह्मण रहता था।

२. **सः कस्मैचिद् कारणाय एकस्मिन् दिने अन्यं ग्रामं प्रस्थितः**—वह किसी कारण से एक दिन दूसरे गांव को चला।

३. **तदा तस्य माता तम् आह**—तब उसकी माता ने उसे कहा—

४. **हे पुत्र! एकाकी मा व्रज**—हे पुत्र! अकेला न जा।

५. **यज्ञप्रियः आह—हे मातः! भयं न कुरु। अस्मिन् मार्गे किमपि भयं नास्ति। अतः अहम् एकाकी एव गमिष्यामि**—यज्ञप्रिय बोला—हे माता! भय मत कर। इस मार्ग में कुछ भी भय नहीं है। इसलिए मैं अकेला ही जाऊंगा।

६. **तस्य निश्चयं ज्ञात्वा एकं कुक्कुरं हस्ते कृत्वा माता आह**—उसका निश्चय जानकर, एक कुत्ता हाथ में देकर माता बोली।

७. यदि त्वं गन्तुम् इच्छसि तर्हि एनं कुक्कुरं गृहीत्वा गच्छ—अगर तू जाना चाहता है तो इस कुत्ते को लेकर जा।

८. तेन उक्तं तथा एव करोमि इति—उसने कहा, वैसे ही करता हूं।

९. ततः सः कुक्कुरं गृहीत्वा प्रस्थितः—फिर वह कुत्ते को लेकर चला।

१०. अथ सः मार्गे गमनश्रमेण श्रान्तः कस्यचिद् वृक्षस्य अधस्तात उपविश्य प्रसुप्तः—अब वह मार्ग में चलने की मेहनत से थका हुआ किसी वृक्ष के नीचे बैठकर सो गया।

११. तत्र कश्चित् सर्पः आगतः—वहां कोई एक सांप आ गया।

१२. सर्पः तेन कुक्कुरेण हतः—उस सांप को उस कुत्ते ने मार डाला।

१३. यदा सः ब्राह्मणः प्रबुद्धः तदा तेन दृष्टं कुक्कुरेण सर्पः हतः इति—जब वह ब्राह्मण जागा तब उसने देखा कि कुत्ते ने सांप मारा है।

१४. तं हतं सर्पं दृष्ट्वा प्रसन्नः ब्राह्मणः तदा अब्रवीत्—उस मारे हुए सांप को देखकर खुश हुआ ब्राह्मण तब बोला—

१५. अरे ! सत्यम् उक्तं मम मात्रा—पुरुषेण कः अपि सहायः कर्तव्यः इति—अरे ! सच कहा मेरी माता ने कि मनुष्य को कोई सहायक बनाना ही चाहिए।

१६. एकाकिना एव न गन्तव्यम् इति—अकेले ही नहीं जाना चाहिए।

१७. एवम् उक्त्वा सः ब्राह्मणः ग्रामं गतः—ऐसा कहकर वह ब्राह्मण गांव को चला गया।

१८. तत्र गत्वा स्वकीयं कार्यं च तेन कृतम्—वहां जाकर अपना कार्य उसने किया।

शब्द

'चित्' शब्द का भाषा में 'एक' अर्थ होता है।

कः चित्—कोई एक। केनचिद्—किसी एक ने। कस्मिंश्चित्—

किसी एक में। **कस्यचित्**—किसी एक का। **प्रसुप्तः**—सो गया। **सर्पः**—सांप। **हतः**—मारा। **प्रबुद्धः**—जागा। **ब्राह्मणः**—ब्राह्मण। **प्रतिबसति**—रहता है। **कारणम्**—कारण। **आह**—बोला। **एकाकी**—अकेला। **व्रज**—जा। **व्रजति**—(वह) जाता है। **व्रजसि**—(तू) जाता है। **व्रजामि** जाता हूं। **मातः**—हे माता। **निश्चयम्**—निश्चय। **कुक्कुरम्**—कुत्ते को। **प्रस्थितः**—चला। **श्रमः**—मेहनत। **श्रान्तः**—थका हुआ। **अधः**—नीचे। **उपविश्य**—बैठकर। **दृष्टम्**—देखा। **दृष्ट्वा**—देखकर। **प्रसन्नः**—खुश। **अब्रवीत्**—बोला। **अरे**—अरे। **मात्रा**—माता से। **सहायः**—मददगार। **कर्तव्यम्**—करने योग्य। **एकाकिना**—अकेले। **गन्तव्यम्**—जाने योग्य। **वक्तव्यम्**—बोलने योग्य। **दातव्यम्**—देने योग्य। **पठितव्यम्**—पढ़ने योग्य। **लेखितव्यम्**—लिखने योग्य। **द्रष्टव्यम्**—देखने योग्य। **अत्तव्यम्**—खाने योग्य। **स्थातव्यम्** रहने योग्य।

मन्त्रः

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्नः आ सुव ॥१॥

अर्थ—हे (देव) ईश्वर, हे (सवितर्) सविता, सबके उत्पन्न करने वाला ईश। (विश्वानि) सब (दुरितानि) बुराइयां, पाप (परा) दूर (सुव) फेंक। (यद) जो (भद्रं) कल्याण (तत्) वह (नः) हमारे लिए (आ सुव) समीप कर।

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति, मनः सत्येन शुध्यति।

विद्यातपोभ्यां भूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति ॥ २ ॥ मनुस्मृति

अर्थ—(अद्भिः) पानी से (गात्राणि) इन्द्रिय, शरीर के अवयव (शुध्यन्ति) शुद्ध होते हैं। (मनः) मन (सत्येन) सचाई से (शुध्यति) शुद्ध होता है। (विद्यातपोभ्यां) विद्या और तप से (भूतात्मा) जीवात्मा,

तथा (बुद्धिः) बुद्धि (ज्ञानेन) ज्ञान से (शुध्यति) शुद्ध होती है।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः ॥ ३ ॥ मनुस्मृति

अर्थ —(सत्यं) सत्य (ब्रूयात्) बोले (प्रियं) प्रिय (ब्रूयात्) बोले। (न ब्रूयात्) न बोले (सत्यं) सच (अप्रियं) कड़वा। (च) और (प्रिय) प्यारा, परन्तु (अनृतं) असत्य (न) न (ब्रूयात्) बोले। (एष) यह (सनातनः) हमेशा का (धर्मः) धर्म है।

पाठ ४४

१. **एकदा नारदः भगवन्तम् उपेत्य पप्रच्छ**—एक समय नारद ने भगवान् के पास जाकर पूछा—

२. **भगवन् ! कः तव परमः भक्तः इति**—हे भगवन् ! कौन तेरा परम भक्त है ?

३. **भगवान् नारदम् आह—हे नारद ! भूतले मम एकः परमः भक्तः अस्ति**—भगवान् ने नारद से कहा—हे नारद ! पृथ्वी पर मेरा एक परम भक्त है।

४. **यदि इच्छसि तं द्रष्टुं तर्हि गच्छ भूतलं तत्र च तं पश्य**—अगर चाहता है उसे देखना, तो जा भूमि पर और वहां उसे देख।

५. **भगवन् ! तस्य किं नामधेयम् अस्ति, कस्मिन् नगरे च सः निवसति**—हे भगवन् ! उसका क्या नाम है और किस शहर में वह रहता है ?

६. **सः विदिशानामके नगरे निवसति। तस्य च नामधेयं भद्रदत्त इति। सः कृषीवलः अस्ति**—वह विदिशा नाम के नगर में रहता है। उसका नाम भद्रदत्त है। वह किसान है।

७. नारदः एतत् श्रुत्वा विस्मितः भूत्वा भूतलं प्रस्थितः—नारद यह सुनकर चकित होकर भूमि को चला।

८. तत्र गत्वा च तं कृषीवलं प्रत्यक्षीचकार—और वहां जाकर उस किसान को प्रत्यक्ष किया (देखा)।

९. सः भद्रदत्तः कृषीवलः दिने दिने शुद्धे स्थाने उपविश्य एकाग्रेण मनसा क्षणमात्रं भगवन्तं स्मरति, ततः कृषिकर्म करोति—वह भद्रदत्त किसान रोज शुद्ध स्थान में बैठ एकाग्र मन से क्षण-मात्र भगवान् का स्मरण करता है, फिर खेती का काम करता है।

१०. तं दृष्ट्वा नारदः प्राह—उसे देखकर नारद बोला—

११. का अत्र भक्तिः—कौन-सी यहां भक्ति है?

१२. इति उक्त्वा पुनः सः नारदः भगवन्तं प्रति गतः—ऐसा बोलकर फिर वह नारद भगवान् के पास गया।

१३. तेन पृष्टम्—हे नारद! किं त्वया परमः भक्तः भद्रदत्तः दृष्टः—उसने पूछा—हे नारद! क्या तूने परम भक्त भद्रदत्त को देखा।

१४. नारदः प्रत्याह—भगवन्! सः मया दृष्टः परन्तु न तस्मिन् का अपि विशेषता अस्ति—नारद ने उत्तर दिया कि भगवन्! वह मैंने देखा परन्तु उसमें कोई विशेषता नहीं है।

१५. भगवता उक्तम्—यः मनः एकाग्रं कृत्वा सन्ध्यां करोति, सः एव परमः भक्तः भवति, न अन्यः, इति त्वं जानीहि—भगवान् ने कहा कि जो मन एकाग्र करके सन्ध्या (ध्यान) करता है, वही परम भक्त होता है, दूसरा नहीं। ऐसा तू जान।

१६. यः तु मनः एकाग्रं न कृत्वा उपासनां करोति, सः भक्तः भवितुं न योग्यः इति—जो तो मन एकाग्र न करके उपासना करता है वह भक्त होने के योग्य नहीं है।

शब्द

उपेत्य—पास जाकर। **भगवन्तम्**—भगवान् को। **परमः**—सबसे बड़ा। **पप्रच्छ**—पूछा। **स्थानम्**—जगह। **भक्तः**—भगत। **उपविशति**—बैठता है। **उपविश्य**—बैठकर। **प्रत्यक्षीकरिष्यति**—साक्षात् करेगा। **उपविशसि**—(तू) बैठता है। **वसति**—(वह) रहता है। **वससि**—(तू) रहता है। **वसामि**—रहता हूं। **वत्स्यति**—(वह) रहेगा। **वत्स्यसि**—(तू) रहेगा। **वत्स्यामि**—रहूंगा। **उपवेक्ष्यसि**—(तू) बैठेगा। **उपवेक्ष्यति**—(वह) बैठेगा। **आह**—कहा। **भूतलम्**—पृथ्वी, भूलोक। **निवसति**—(वह) रहता है। **निवससि**—(तू) रहता है। **निवसामि**—रहता हूं। **कृषीवलः**—किसान। **विस्मितः**—हैरान। **प्रस्थितः**—चला। **प्रत्यक्षीचकार**—साक्षात् किया। **प्रत्यक्षीकरोषि**—(तू) प्रत्यक्ष करता है। **प्रत्यक्षीकृतम्**—साक्षात् किया। **प्रत्यक्षीकरोमि**—प्रत्यक्ष करता हूं। **पृष्टम्** पूछा। **प्रत्यक्षीकरोति**—(वह) प्रत्यक्ष करता है। **दृष्टम्**—देखा। **प्रत्याह**—जवाब दिया। **विशेष**—खास (बात)। **मनः**—मन। **एकाग्रम्**—स्थिर। **जानीहि**—जान। **उपासना**—भक्ति। **भवितुम्**—होने के लिए। **उपविष्टः**—बैठ गया। **उषित्वा**—रहकर। **उषितः**—रहा हुआ। **निवत्स्यति**—(वह) रहेगा। **वसितुम्**—रहने के लिए। **निवत्स्यामि**—रहूंगा। **निवत्स्यसि**—(तू) रहेगा।

श्लोक

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः ॥१॥ (मनुस्मृति)

अर्थ—(यत्र) जहां (तु) तो (नार्यः) स्त्रियां (पूज्यन्ते) पूजी जाती हैं, (तत्र) वहां (देवताः) देवता (रमन्ते) आनन्द मनाते हैं। (तु) परन्तु (यत्र) जहां (एताः) ये स्त्रियां (न पूज्यन्ते) नहीं पूजी

जातीं (तत्र) वहां (सर्वाः) सब (क्रियाः) कार्य (अफलाः) निष्फल हैं ।

उपकारोऽपि नीचानाम् अपकाराय जायते ।
पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम् ।।

अर्थ—(नीचानां) नीचों की (उपकारः) भलाई (अपि) भी (अपकाराय) [अपने] नुकसान के लिए (जायते) होती है । जैसे (भुजङ्गानां) सांपों को (पयःपानं) दूध पिलाना (केवलं) केवल (विषवर्धनम्) विष बढ़ाने वाला होता है ।

सुलभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः ।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ।।

अर्थ—हे (राजन्) राजा ! (सततं) हमेशा (प्रियवादिनः) प्यारा बोलने वाले (पुरुषाः) मनुष्य (सुलभाः) आसानी से मिलते हैं । परन्तु (अप्रियस्य) अप्रिय (च) और (पथ्यस्य) हितकारक बात (वक्ता) कहने वाला (च श्रोता) और सुनने वाला (दुर्लभः) मुश्किल से मिलता है ।

वाक्य

१. यत्र नार्यः पूज्यन्ते तत्र एव देवताः रमन्ते । परन्तु यत्र एताः न पूज्यन्ते तत्र सर्वाः क्रिया अफलाः भवन्ति ।

२. नीचानाम् उपकारः अपि अपकराय जायते । यथा भुजङ्गाना पयःपानं विषवर्धनं भवति ।

३. हे राजन्, सततं प्रियवादिनः पुरुषाः सुलभाः परन्तु पथ्यस्य अप्रियस्य यथा वक्ता दुर्लभः तथा श्रोता अपि दुर्लभः ।

पाठ ४५

१. कस्मिंश्चिद् ग्रामे धर्मदत्तनामकः कृषीवलः आसीत्—किसी एक

गांव में धर्मदत्त नामक किसान था।

२. सः एकं वानरं पालितवान्—उसने एक बन्दर पाला था।

३. सः मर्कटः प्रभूतम् अन्नं भक्षयित्वा अतीव पुष्टः जातः—वह बन्दर बहुत अन्न खाकर बहुत ही पुष्ट हो गया।

४. एकदा सः कृषीवलः दध्योदनं गृहीत्वा कस्मैचित् प्रयोजनाय तेन सह अन्यं ग्रामं प्रस्थितः—एक बार वह किसान दही-चावल लेकर किसी उद्देश्य से उस (बन्दर) के साथ दूसरे गांव को चला।

५. मार्गे एकं तडाग दृष्ट्वा तत्र दध्योदनं भक्षयितुम् उपविष्टः—रास्ते में एक तालाब देखकर वहां दही-चावल खाने के लिए बैठ गया।

६. तत्र कस्यचित् वृक्षस्य मूले दध्योदनं स्थापयित्वा मुखप्रक्षालनार्थं तडागं गत्वा तीरे उपविष्टः—वहां किसी एक वृक्ष के मूल में दही-चावल रखकर, मुंह धोने के लिए तालाब को जाकर किनारे पर बैठ गया।

७. अत्रान्तरे तेन दुष्टेन मर्कटेन तत् सर्वं दध्योदनं भक्षितम्—इस बीच में उस दुष्ट बन्दर ने वह सब दही-चावल खा लिए।

८. हस्तेन किञ्चिद् दधि गृहीत्वा, समीपे स्थितस्य कस्यचिद् अजस्य मुखे क्षिप्त्वा, किम् अपि अजानन् इव दूरं गत्वा स्थितः—हाथ से थोड़ा-सा दही लेकर, पास खड़े हुए किसी एक बकरे के मुंह पर फेंककर, कुछ भी न जानते हुए के समान, दूर जाकर बैठ गया।

९. कृषीवलः मुखं प्रक्षाल्य वृक्षस्य मूलम् आगत्य दृष्टवान्, यद् सर्वं दध्योदनं केनापि निःशेषं भक्षितम् इति—किसान ने मुह धोकर वृक्ष के पास आकर देखा कि सब दही-चावल किसी ने खा लिए हैं।

१०. **समीपे स्थितस्य अजस्य मुखे किञ्चिद् दधि दृष्ट्वा तेन एव सर्वम् अन्नं भक्षितम् इति ज्ञात्वा तम् एव ताडयामास**—पास ठहरे हुए बकरे के मुंह में लगा हुआ थोड़ा-सा दही देखकर उसी ने सब अन्न खाया, ऐसा समझकर उसी को पीट डाला।

११. **दुष्टः अपराधं स्वयं कृत्वा अन्येन सः अपराधः कृतः इति दर्शयति**—दुष्ट (मनुष्य) अपराध स्वयं करके, दूसरे ने वह अपराध किया है, ऐसा दिखलाता है।

१२. **मूढः तत् तथा एव अस्ति इति जानाति**—मूर्ख, वह ऐसा ही है, ऐसा जानता है।

१३. **परन्तु ज्ञानी सर्वं परीक्ष्य अपराधिनम् एव यथायोग्यं ताडयति**—परन्तु ज्ञानी (मनुष्य) सब परीक्षा करके अपराधी की ही यथा-योग्य ताड़ना करता है।

शब्द

पालितवान्—पालन किया। **पालयति**—(वह) पालन करता है। **पालयिष्यति**—(वह) पालन करेगा। **पालयिष्यसि**- (तू) पालन करेगा। **पालयिष्यामि**- पालन करूंगा। **पालयित्वा**-पालन करके। **पालयितुम्**-पालने के लिए। **मर्कटः**—बन्दर। **पुष्टः**—पुष्ट, मोटा-ताजा। **स्थापयित्वा**—रखकर। **तीरम्**- तीर, किनारा। **अत्रान्तरे**—इस बीच में। **दुष्टः**—दुष्ट। **अजः**—बकरा, आत्मा, परमात्मा। **अजा**—बकरी, प्रकृति। **दर्शयितुम्**—दिखाने के लिए। **ताडयामास**—ताड़न किया, पीटा। **अपराधः**—दोष, अपराध। **ज्ञानी**—समझदार। **परीक्ष्य**—परीक्षा करके। **अपराधी**—गुनहगार, दोषी। **पालयामि**—पालन करता हूं। **पालयसि**—तू पालन करता है। **अजानन्**—न जानता हुआ। **क्षिप्त्वा**—फेंककर। **तावत्**—तब तक। **यावत्**—जब तक। **दृष्टवान्**

देखा। **निःशेषम्**--सम्पूर्ण। **उपविष्टः**—बैठ गया। **प्रयोजनम्**—उद्देश्य। **स्वयम्**—स्वयं, खुद, अपने-आप। **मूलम्**—जड़। **दर्शयसि**-(तू) दिखाता है। **दर्शयति**—(वह) दिखाता है। **दर्शयिष्यति**-(वह) दिखाएगा। **दर्शयामि**—दिखाता हूं। **दर्शयिष्यामि**—दिखाऊंगा। **दर्शयिष्यसि**—(तू) दिखाएगा। **परीक्षसे**--(तू) परीक्षा करता है। **दर्शयित्वा**—दिखलाकर। **परीक्षिष्ये**—परीक्षा करूंगा। **परीक्षते**—परीक्षा करता है। **परीक्षिष्यते**—(वह) परीक्षा करेगा। **परीक्षिष्यसे**—(तू) परीक्षा करेगा।

वाक्य

१. यतः धर्मः ततः जयः। २. धर्मः एव हतः हन्ति। ३. रक्षितः धर्मः एव रक्षति।

पाठ ४६

निरवयवः (निः अवयवः) निराकार, अवयवरहित। **शब्दमयः**—शब्दों से पूर्ण। **सर्वशक्तिमत् (सर्वशक्तिमत्)**—सब शक्तियों से युक्त। **उपपद्यते**—बनती है, सजती है, योग्य होती है। **अन्तरेण, अन्तरा**—विना, सिवाय। **विद्यमान** रहना, होना। **अस्मदादीनाम् (अस्मद् आदीनाम्)**—हम जिनमें पहले हैं ऐसे मनुष्यों का। **अध्ययनानन्तरम् (अध्ययन-अनन्तरम्)**—पठन के पश्चात्। **पशुवत् (पशुवत्)**—पशुओं के समान। **आदिसृष्टिः**—आरम्भ की सृष्टि। **प्रवृत्ति**—स्वभाव। **परमेश्वरः**—(परम-ईश्वरः) बड़ा स्वामी। **उत्पद्यते**—बनता है, उत्पन्न होता है। **ईश्वरः**—मालिक, शासक। **कुतः**—किस कारण, क्यों? **सदैव (सदा-एव)**—हमेशा ही। **खलु** - निश्चय से। **सकलम्**—सम्पूर्ण। **महारण्यम् (महा-अरण्यम्)**—बड़ा वन। **आरभ्य**—प्रारम्भ करके। **वेदोपदेशः (वेद-उपदेशः)**—वेद का उपदेश।

गुरु-शिष्य-संवादः*

शिष्यः—निरवयवात्[1] परमेश्वरात् शब्दमयः[2] वेदः कथम् उत्पद्यते—निराकार[1] परमेश्वर से, शब्दों से भरा हुआ[2] वेद कैसे उत्पन्न होता है ?

गुरुः—सर्वशक्तिमति ईश्वरे इयं शङ्का न उपपद्यते—सर्वशक्तिमान् ईश्वर में यह शंका नहीं ठीक सजती ।

शिष्यः—कुतः—क्यों ?

गुरुः—मुखादिसाधनम् अन्तराऽपि तस्य, कार्यं कर्तुं सामर्थ्यस्य सदैव विद्यमानत्वात्—मुख आदि साधन के बिना भी उसका कार्य करने के लिए सामर्थ्य सदा ही रहता है ।

यः अस्ति खलु[3] सर्वशक्तिमान् स नैव कस्याऽपि साहाय्यं, कार्यं कर्तुं, गृह्णाति—जो है निश्चय[3] से सर्वशक्तिमान् वह नहीं किसी की भी सहायता कार्य करने के लिए, लेता है ।

यथा अस्मदादीनां सहायेन बिना कार्यं कर्तुं सामर्थ्यं नास्ति । न च ईश्वरे—जैसे हम जैसों का, सहायक के बिना कार्य करने के लिए सामर्थ्य नहीं है । ना ही और ईश्वर में (अर्थात् हमारी जैसी अवस्था ईश्वर में नहीं) ।

यदा निरवयवेन ईश्वरेण[4] सकलं जगत् रचितम्,[5] तथा वेदरचने का शङ्काऽस्ति—जब निराकार ईश्वर ने[4] सब जगत् रचा[5] है, तब वेद रचने में क्या शंका है ?

*इन पाठों का अर्थ संस्कृत-शब्द-रचना के अनुसार दिया है । इस कारण भाषा के वाक्य हिन्दी शैली के विरुद्ध हुए हैं । परन्तु इन्हीं वाक्यों से पता लगेगा कि संस्कृत में और हिन्दी में वाक्य-रचना का क्या भेद है ?

शिष्यः—जगद्-रचने तु खलु ईश्वरम् अन्तरेण[1], न कस्याऽपि सामर्थ्यम् अस्ति – जगत् रचने में तो निश्चय से ईश्वर को छोड़कर[1], नहीं किसी का भी सामर्थ्य है।

वेद-रचने तु अन्यस्य ग्रन्थ-रचनावत् स्यात्—वेद रचने में तो दूसरे ग्रन्थ की रचना के समान (सामर्थ्य) हो सकता है।

गुरुः—ईश्वरेण रचितस्य वेदस्य अध्ययनानन्तरम्[1] एव ग्रन्थ-रचने कस्याऽपि सामर्थ्यं स्यात्। न च अन्यथा—ईश्वर द्वारा रचे हुए वेद के अध्ययन के पश्चात्[1] ही ग्रन्थ रचने में किसी का भी सामर्थ्य होता है। नहीं और (किसी) प्रकार से।

नैव कश्चित् अपि पठन-पाठनम् अन्तरा विद्वान् भवति—नहीं कोई भी पढ़ने-पढ़ाने के बिना विद्वान् होता है।

किञ्चिद्[1] अपि शास्त्रं पठित्वा, उपदेशं श्रुत्वा, व्यवहारं च दृष्ट्वा एव, मनुष्याणां ज्ञानं भवति—कोई[1] एक भी शास्त्र पढ़कर उपदेश सुनकर और व्यवहार देखकर ही मनुष्यों को ज्ञान होता है।

यथा महारण्यस्थानां मनुष्याणां, उपदेशम् अन्तरा, पशुवत्प्रवृत्तिः भवति—जिस प्रकार बड़े जंगल में रहने वाले मनुष्यों की, उपदेश के बिना पशु-समान प्रवृत्ति होती है।

तथैव आदि-सृष्टिम् आरभ्य, अद्यपर्यन्तं, वेदोपदेशम् अन्तरा सर्व-मनुष्याणां प्रवृत्तिः भवेत्—वैसे ही आदिसृष्टि से प्रारम्भ करके, आज तक, वेद के उपदेश के बिना, सब मनुष्यों की प्रवृत्ति होवे।

वाक्य

निराकारेण ईश्वरेण एव यथा जगत् निर्मितं तथैव वेदः अपि

निर्मितः। हस्तपादादिसाधनं विना सः ईश्वरः यथा सृष्टिं रचयति तथैव वेदम् अपि सः एव रचयति । यथा सहायेन विना मनुष्याः कार्यं कर्तुं न शक्नुवन्ति तथा ईश्वरे नास्ति । सः अन्यस्य सहायेन विना अपि सर्वं स्वकीयं रचनाकार्यं कर्तुं शक्नोति । सः सर्वशक्तिमान् अस्ति, मनुष्यवत् अल्पशक्तिमान् नैवास्ति ।

पाठ ४७

मनुष्येभ्यः—सब मनुष्यों के लिए। **स्वाभाविकम्**—जन्म के साथ पाया हुआ । **वेदानाम्**—सब वेदों का। **अर्हति**—योग्य होता है। **मन्यते**—माना जाता है। **वेदोत्पादनम्**—(वेद-उत्पादनं) वेदों का उत्पन्न होना। **विदुषाम्**—विद्वानों के। **सकाशात्**—पास से। **रच्यते**—रचा जाता है। **सृष्टेः**—सृष्टि के। **आसीत्**—था। **क्रमः**—सिलसिला। **विद्या-सम्भवः**—विद्या का होना। **ग्रन्थेभ्य**—बहुत पुस्तकों से। **उत्कृष्ट**—उत्तम । **तदुन्नत्या**—(तत् उन्नत्या)—उसकी उन्नति (बुद्धि) से। **ग्रन्थ-रचनाम्** पुस्तक बनाना। **मात्र**—केवल। **अस्मदादिभिः**—हम हैं आदि। **अनेकविधिम्**—अनेक प्रकार का। **अपेक्षा**—आवश्यकता, जरूरत। **अवश्यम्**—जरूर। **आरम्भ-समयः**—प्रारम्भ का समय। **ईश्वरोपदेशः**—(ईश्वर-उपदेशः) ईश्वर का उपदेश। **रचयेत्**—रचे।

गुरु-शिष्य-संवादः

शिष्यः वदति—ईश्वरेण मनुष्येभ्यः स्वाभाविकं ज्ञानं दत्तम्—शिष्य बोलता है—ईश्वर ने मनुष्यों को स्वाभाविक ज्ञान दिया है।
यत् च सर्वग्रन्थेभ्यः उत्कृष्टम् अस्ति—और वह सब पुस्तकों से उत्तम है।

न तेन बिना वेदानाम् अपि ज्ञानं भवितुम्[1] अर्हति[2]—न ही उसके बिना वेदों का भी ज्ञान हो[1] सकता[2] है।

तदुन्नत्या[3] ग्रन्थरचनम्[4] अपि करिष्यन्ति एव—उसकी उन्नति[3] से पुस्तक की रचना[4] भी करेंगे ही।

पुनः किमर्थं[5] मन्यते[6] वेदोत्पादनम्[7] ईश्वरेण कृतम् इति—फिर किसलिए[5] माना[6] जाता है वेदों की उत्पत्ति[7] ईश्वर ने की, ऐसा ?

गुरुः वदति – न विना अध्ययनेन स्वाभाविकं[8] ज्ञानमात्रेण[9], कस्य अपि निर्वाहः[10] भवितुम् अर्हति—गुरु कहता है—नहीं, बिना अध्ययन के स्वाभाविक[8] ज्ञान से केवल[9], किसी का भी निर्वाह[11] हो सकता है।

यथा अस्मदादिभिः[1] अपि अन्येषां[2] सकाशात् अनेकविधं[3] ज्ञानं गृहीत्वा एव ग्रन्थः रच्यते[4]—जैसे, हम जैसे लोग भी[1] अन्य विद्वानों[2] के पास अनेक प्रकार का[3] ज्ञान लेकर ही ग्रन्थ रचते[4] हैं।

तथा ईश्वरज्ञानस्य[5] सर्वेषां[6] मनुष्याणाम् अपेक्षा अवश्यं[7] भवति—वैसे ईश्वर के ज्ञान[5] की सब मनुष्यों के लिए आवश्यकता[6] अवश्य[7] होती है।

किं च, न सृष्टेः आरम्भसमये पठनपाठनक्रमः ग्रन्थः च कश्चिद् अपि आसीत्—और, नहीं सृष्टि के प्रारम्भ काल में पढ़ने-पढ़ाने का सिलसिला और ग्रन्थ कोई भी था।

तदानीम् ईश्वरोपदेशम् अन्तरा, न च कस्य अपि, विद्यासंभवः बभूव—तब ईश्वर के उपदेश के बिना, नहीं किसी को भी विद्या की प्राप्ति हुई थी।

पुनः कथं कश्चित् जनः ग्रन्थं रचयेत्—फिर कैसे कोई मनुष्य ग्रन्थ रच ले ?

पाठ ४

ईशा—ईश्वर ने। **वास्यम्**—ढांपने योग्य, व्यापने व रहने योग्य। **स्वित्**—भी, ही। **कर्म**—उद्योग, प्रयत्न। **लिप्यते**—लेप (धब्बा) लगाता है। **नरः**—मनुष्य। **अन्धंतमः**—गाढ़ा अन्धकार। **हिरण्मय**—सुवर्णमय। **पात्रम्**—बर्तन। **सत्यम्**—सचाई। **पूषन्**—पुष्ट करने वाला बढ़ाने वाला। **दृष्टये**—दर्शन के लिए। **वित्तम्**—धन। **तर्पणीयः** तृप्त होने योग्य। **अपावृणु**—खोल। **आप्यायन्तु**—बढ़ें, वृद्धि और उन्नति को प्राप्त हो जाएं। **तर्कः**—शक्य-अशक्य का विचार। **आमनन्ति**—विचार करते हैं। **तपांसि**—अनेक प्रकार के तप। **त्यक्त**—दत्त, दान, त्याग किया हुआ। **भुञ्जीथाः**—भोगो। **गृधः**—ललचाओ। **जिजीविषेत्**—जीने की इच्छा करे। **शतम्**—सौ। **समाः**—वर्ष, साल। **प्रविशन्ति**—घुसते हैं। **अविद्या**—जो विद्या से उल्टी हो। **उपासते**—(उप-आसते)—पास बैठते हैं, उपासना करते हैं। **अपिहितम्**—ढका। **पदः**—स्थान, अवस्था, प्राप्तव्य। **चरन्ति**—करते हैं, आचरण करते हैं। **संग्रह**—संक्षेप, सार।

उपनिषद् का उपदेश

१. **ईशा वास्यम् इदं सर्वम्**—ईश्वर के व्यापने योग्य है यह सब।
२. **तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः**—उसके दिए हुए से भोग करो।
३. **मा गृधा कस्य स्विद्धनम्**—न ललचाओ किसी के भी धन पर।
४. **कुर्वन् एव इह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः**—करता हुआ ही यहां कर्म, जीने की इच्छा करे सौ वर्ष।
५. **न कर्म लिप्यते नरे**—नहीं कर्म का लेप होता है नर में।
६. **अन्धं तमः प्रविशन्ति ये अविद्याम् उपासते**—घने अंधेरे को प्राप्त

होते हैं जो अज्ञान के पास रहते हैं।

७. **हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्य अपिहितं मुखम्**—सोने के बर्तन से सत्य का ढंका है मुख।

८. **तत् त्वं पूषन् अपावृणु सत्य-धर्माय दृष्टये**—उसको तू, हे पोषक, खोल दे सत्य-धर्म को देखने के लिए।

९. **कृतं स्मर**—किए हुए को स्मरण कर।

१०. **आप्यायन्तु मम अङ्गानि, वाक्, प्राणः, चक्षुः, श्रोत्रम् अथो बलम्, इन्द्रियाणि च**—बढ़ जाए मेरे अवयव, वाणी, प्राण, आंख, कान, बल और इन्द्रियां।

११. **न तत्र चक्षुः गच्छति, न वाक् गच्छति**—न हीं वहां आंख जाती है, न ही वाणी जाती है।

१२. **न वित्तेन तर्पणीयः मनुष्यः**—न ही धन से तृप्त होता है मनुष्य।

१३. **न एषा तर्केण मतिः आपनीया**—न ही यह तर्क से बुद्धि प्राप्त होने वाली है।

१४. **सर्वे वेदा यत् पदम् आमनन्ति**—सब वेद जिस स्थान का मनन करते हैं।

१५. **तपांसि[1] सर्वाणि[2] च यद् वदन्ति**—और जो सब[2] तप[1] बोलते हैं।

१६. **यद् इच्छन्तः ब्रह्मचर्यं चरन्ति**—जिसकी इच्छा करते हुए ब्रह्मचर्य पालते हैं।

१७. **तत् ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि**—वह तुमको स्थान संक्षेप से कहता हूं।

१८. **ओम् इति एतत्**—ओ३म् ही यह है।

पाठ ४९

मूल्यम्—कीमत, मूल्य। **पञ्च**—पांच। **रूप्यम्**—रुपया। **मुद्रा**—रुपया। **मुद्रयैकया**—(मुद्रया-एकया) एक रुपये से। **अष्ट**—आठ। **पणः**—पैसा। **हट्टम्**—दुकान, हट्टी। **अच्छम्**—अच्छा। **वणिक्**—बनिया। **कीदृशः**—कैसा। **कियान्**—कितना। **व्ययः**—खर्च। **पञ्च-लक्षाणि**—पांच लाख। **हानिः**—नुकसान। **संवत्सरः**—वर्ष। **जातः**—हो गया। **लक्षद्वयम्**—दो लाख। **लक्षत्रयम्**—तीन लाख। **कुतः**—कहां से। **क्व**—कहां। **केदारम्**—खेत। **पक्वः**—पका हुआ। **भावः**—भाव। **अर्घः**—भाव। **प्रस्थम्**—सेर। **सपाद**—सवा। **सेटकः**—सेर। **गुडः**—गुड़। **प्राप्येते**—मिलते हैं, प्राप्त होते हैं। **एला**—इलाइची। **मिथ्याकरी**—झूठा व्यवहार करने वाला। **क्रय-विक्रयौ**—लेन-देन, खरीद-बिक्री। **बहुमूल्यम्**—कीमती। **आविकम्**—ऊनी कपड़ा। **शाकम्**—साग-भाजी। **लुनाति**—काटता है। **लुनन्तु**—काटें।

अस्य किं मूल्यम्—इसका क्या मूल्य है? **पञ्च रूप्याणि गृहाण**—पांच रुपये लो। **इदम् वस्त्रं देहि**—यह वस्त्र दो। **अद्य-श्वः घृतस्य कः अर्घ**—आजकल घी का क्या भाव है? **मुद्रैकया सपादप्रस्थं विक्रीयते**—एक रुपया का सवा सेर बिकता है। **गुडस्य को भावः**—गुड़ का क्या भाव है? **अष्टभिः पणैः एकसेटकमात्रं ददाति**—आठ पैसों का एक सेर-भर देता है। **त्वम् आपणं गच्छ**—तू बाजार जा। **एलाम् आनय**—इलायची ले आ। **आनीता, गृहाण**—ले आया, लो। **कस्य हट्टे दधिदुग्धे अच्छे प्राप्येते**—किसकी दुकान पर दही और दूध अच्छा मिलता है। **धनपालस्य**—धनपाल की। **सः सत्येन एव क्रय-विक्रयौ करोति**—वह सत्य ही से लेन-देन करता है। **श्रीपतिः वणिक् कीदृशः अस्ति**—

श्रीपति बनिया कैसा है ? **सः मिथ्याकारी** वह झूठा है। **अस्मिन् संवत्सरे कियान् लाभो व्ययः च जातः**— इस वर्ष में कितना लाभ और खर्च हुआ। **पञ्चलक्षाणि लाभः**—पांच लाख (रुपये) लाभ। **लक्ष-द्वयस्य व्ययः च**—और दो लाख का खर्च (हुआ)। **मम खलु अस्मि-न्वर्षे लक्षत्रयस्य हानिः जाता**—मेरी तो इस वर्ष में तीन लाख की हानि हो गई। **कस्तूरी कस्माद् आनीयते**—कस्तूरी कहां से लाई जाती है ? **नयपालात्**—नैपाल से। **बहुमूल्यम् आविकं कुतः आनयन्ति**—कीमती दुशाला कहां से लाते हैं ? **कश्मीरात्**—कश्मीर से। **कुत्र गच्छसि**—कहां जाते हो। **पाटलिपुत्रम्**—पटना को। **कदा आगमि-ष्यसि**—कब आओगे। **एकस्मिन् मासे**—एक महीने में। **स क्व गतः**—वह कहां गया ? **शाकम् आनेतुम्**—शाक लाने को। **सम्प्रति केदाराः पक्वाः**—इस समय खेत पक गए हैं। **यदि पक्वाः तर्हि लुनीत**—यदि पके हैं तो काटो।

पाठ ५०

प्रतिदिनम् हर रोज, नित्य। **महिषी**—भैंस। **प्रत्यहम्**—प्रतिदिन। **कियत्**—कितना। **खारी**—मन, चालीस सेर। **मिलति**—मिलता है। **भुज्यते**—खाया जाता है। **मुद्रापादः**—रुपये का चौथा हिस्सा, चार आना। **त्रि**—तीन। **'पाद**—पाव, चौथा हिस्सा। **ऋणम्**-कर्ज़, ऋण। **तदानींतनः**—उस समय का। **अजावयः (अजा-अवयः)**—बकरी। **अजा**—बकरी। **अविः**—भेड़। **सन्ति**—हैं। **किं परिमा-णम्**—कितने परिमाण में। **द्वादश**—बारह। **सार्धम् (स-अर्धम्)** आधे के साथ। **सार्धद्वादश**—साढ़े बारह। **सार्धपञ्च**—साढ़े पांच। **सार्धद्वौ**—अढ़ाई। **द्वयम्**—दो। **कति**—कितने। **सहस्रम्**—हजार। **साक्षी**—गवाह। **वर्तते**—है।

गौः दुग्धं ददाति न वा—गौ दूध देती है या नहीं ? **ददाति**—देती है। **इयं महिषी कियत् दुग्धं ददाति**—यह भैंस कितना दूध देती है ? **दशप्रस्थाः**—दस सेर। **तव अजावयः सन्ति न वा**—तेरे बकरी-भेडें हैं वा नही ? **सन्ति**—हैं। **प्रतिदिनं ते कियद् दुग्धं जायते**—नित्य तेरा कितना दूध होता है ? **पञ्च खार्यः**—पांच मन। **नित्यं किं परिमाणं घृतं भवति**—प्रतिदिन कितना घी होता है ? **द्वादशप्रस्थम्**—बारह सेर। **प्रत्यहं कियद् भुज्यते**—प्रतिदिन कितना खाया जाता है ? **सार्धद्विप्रस्थम्**—अढाई सेर। **एतत् रूप्यैकेण कियत् मिलति** यह एक रुपये का कितना मिलता है ? **त्रित्रिप्रस्थम्**—तीन-तीन सेर। **तैलस्य कियत् मूल्यम्**—तेल का क्या मूल्य है ? **मुद्रापादेन सेटकद्वयं प्राप्यते** चार आने का दो सेर मिलता है। **अस्मिन् नगरे कति हट्टाः सन्ति**—इस नगर में कितनी दुकान हैं ? **पञ्च सहस्राणि**—पांच हजार। **भोः राजन् ! अयं मम ऋणं न ददाति**—हे राजन् ! यह मेरा ऋण नही देता। **यदा तेन गृहीतं तदानींतनः कश्चित् साक्षी वर्तते न वा** जब उसने लिया था उस समय का कोई गवाह वर्तमान है या नहीं ? **अस्ति**—है। **तर्हि आनय**—तो ले आओ। **आनीतः**—लाया। **अयम् अस्ति**—यह है।

आचरति—आचरण करता है। **चरति**—चलता है। **श्रेष्ठः**—अच्छा। **लोकः**—लोग, जन, मनुष्य। **उद्धरेत्**—उन्नति करे। **आत्मा** आत्मा ने। **आत्मनः**—आत्मा को, अपनी। **आत्मानम्**—आत्मा को, अपने को। **आत्मा** आत्मा, (रूह)। **पूज्यः**—सत्कार करने योग्य। **गुरुः**—उपदेशक, बड़ा। **गरीयान्**—श्रेष्ठ। **समः**—समान। **त्वत्समः**—तेरे जैसा। **अधिकः**—अधिक। **अभ्यधिकः (अभि+अधिकः)**—सब प्रकार से अधिक। **प्रभावः**—शक्ति, सामर्थ्य। **प्रमा-**

णम्—प्रामाणिक, मान्य, पसन्द। इतरः—अन्य। अनुवर्तते—पीछे चलता है, अनुकरण करता है। कुरुते—करता है। रिपुः—शत्रु, दुश्मन। बन्धुः—भाई। चरः—चलने वाला, जंगम। पिता—बाप, पालक। अचरः—न चलने वाला, स्थावर। चराचरः (चर-अचर)—हिलने वाले और न हिलने वाले, जंगम और स्थावर। अन्यः—दूसरा अप्रतिमः—अतुल। लोकत्रयम्—तीन लोक।

यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः।
सः यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥

पदच्छेद—यद्। यद्। आचरति। श्रेष्ठः। तद्। तद्। एव। इतरः जनः। सः। यद्। प्रमाणम्। कुरुते। लोकः। तद्। अनुवर्तते।

अन्वय—यद् यद् श्रेष्ठः[1] आचरति[2]। तद् तद् एव इतरः जनः[3] (आचरति)। सः (श्रेष्ठः) यत् प्रमाणं[4] कुरुते[5]। लोकः तद् अनुवर्तते[6]।

अर्थ—जो-जो श्रेष्ठ[1] (पुरुष) आचरण करता[2] है, वह-वह ही (उसको) इतर लोक[3] आचरता है। वह (श्रेष्ठ पुरुष) जो प्रमाण[4] करता[5] है (मानता है)। (इतर) लोग भी उसी के पीछे चलते[6] हैं।

अर्थात् जैसा श्रेष्ठ पुरुष आचरण करते हैं वैसा ही दूसरे लोग करते हैं। श्रेष्ठ लोग जिसको प्रमाण मानते हैं उसी को दूसरे लोग भी प्रमाण मानते हैं।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुः आत्मैव रिपुरात्मनः ॥

पदच्छेद—उद्धरेत्। आत्मना। आत्मानम्। न। आत्मानम्। अवसादयेत्। आत्मा। एव। हि। आत्मनः। बन्धुः। आत्मा। एव। रिपुः। आत्मनः।

गौः दुग्धं ददाति न वा—गौ दूध देती है या नहीं ? **ददाति**—देती है। **इयं महिषी कियत् दुग्धं ददाति**—यह भेंस कितना दूध देती है ? **दशप्रस्थाः**—दस सेर। **तव अजावयः सन्ति न वा**—तेरे बकरी-भेंडें हैं वा नही ? **सन्ति**—हैं। **प्रतिदिनं ते कियद् दुग्धं जायते**—नित्य तेरा कितना दूध होता है ? **पञ्च खार्यः**—पांच मन। **नित्यं किं परिमाणं घृतं भवति**—प्रतिदिन कितना घी होता है ? **द्वादशप्रस्थम्**—बारह सेर। **प्रत्यहं कियद् भुज्यते**—प्रतिदिन कितना खाया जाता है ? **सार्धद्विप्रस्थम्**—अढ़ाई सेर। **एतत् रूप्यकेण कियत् मिलति** यह एक रुपये का कितना मिलता है ? **त्रित्रिप्रस्थम्**—तीन-तीन सेर। **तैलस्य कियत् मूल्यम्**—तेल का क्या मूल्य है ? **मुद्रापादेन सेटकद्वयं प्राप्यते** चार आने का दो सेर मिलता है। **अस्मिन् नगरे कति हट्टाः सन्ति**—इस नगर में कितनी दुकान हैं ? **पञ्च सहस्राणि**—पांच हजार। **भोः राजन् ! अयं मम ऋणं न ददाति**—हे राजन् ! यह मेरा ऋण नहीं देता। **यदा तेन गृहीतं तदानींतनः कश्चित् साक्षी वर्तते न वा** जब उसने लिया था उस समय का कोई गवाह वर्तमान है या नहीं ? **अस्ति**—है। **तर्हि आनय** -तो ले आओ। **आनीतः**—लाया। **अयम् अस्ति**—यह है।

आचरति—आचरण करता है। **चरति**—चलता है। **श्रेष्ठः**—अच्छा। **लोकः**—लोग, जन, मनुष्य। **उद्धरेत्**—उन्नति करे। **आत्मा** आत्मा ने। **आत्मनः**—आत्मा को, अपनी। **आत्मानम्**—आत्मा को, अपने को। **आत्मा** आत्मा, (रूह)। **पूज्यः**—सत्कार करने योग्य। **गुरुः**—उपदेशक, बड़ा। **गरीयान्**—श्रेष्ठ। **समः**—समान। **त्वत्समः**—तेरे जैसा। **अधिकः**—अधिक। **अभ्यधिकः (अभि+अधिकः)** - सब प्रकार से अधिक। **प्रभावः**—शक्ति, सामर्थ्य। **प्रमा-**

णम्—प्रामाणिक, मान्य, पसन्द। इतरः—अन्य। अनुवर्तते—पीछे चलता है, अनुकरण करता है। कुरुते—करता है। रिपुः—शत्रु, दुश्मन। बन्धुः—भाई। चरः—चलने वाला; जंगम। पिता—बाप; पालक। अचरः—न चलने वाला, स्थावर। चराचरः (चर-अचर)—हिलने वाले और न हिलने वाले, जंगम और स्थावर। अन्यः—दूसरा अप्रतिमः—अतुल। लोकत्रयम्—तीन लोक।

यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः।
सः यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

पदच्छेद—यद्। यद्। आचरति। श्रेष्ठः। तद्। तद्। एव। इतरः जनः। सः। यद्। प्रमाणम्। कुरुते। लोकः। तद्। अनुवर्तते।

अन्वय—यद् यद् श्रेष्ठः[1] आचरति[2]। तद् तद् एव इतरः जनः[3] (आचरति)। सः (श्रेष्ठः) यत् प्रमाणं[4] कुरुते[5]। लोकः तद् अनुवर्तते[6]।

अर्थ—जो-जो श्रेष्ठ[1] (पुरुष) आचरण करता[2] है, वह-वह ही (उसको) इतर लोक[3] आचरता है। वह (श्रेष्ठ पुरुष) जो प्रमाण[4] करता[5] है (मानता है)। (इतर) लोग भी उसी के पीछे चलते[6] हैं।

अर्थात् जैसा श्रेष्ठ पुरुष आचरण करते हैं वैसा ही दूसरे लोग करते हैं। श्रेष्ठ लोग जिसको प्रमाण मानते हैं उसी को दूसरे लोग भी प्रमाण मानते हैं।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुः आत्मैव रिपुरात्मनः॥

पदच्छेद—उद्धरेत्। आत्मना। आत्मानम्। न। आत्मानम्। अवसादयेत्। आत्मा। एव। हि। आत्मनः। बन्धुः। आत्मा। एव। रिपुः। आत्मनः।

अन्वय—आत्मना[1] आत्मानम् उद्धरेत्[2]। आत्मानम् न अवसादयेत्[3]। हि[4] आत्मा एव आत्मनः बन्धुः[5], आत्मा एव आत्मनः रिपुः[6]।

अर्थ—आत्मा से[1] आत्मा की उन्नति करे[2]। आत्मा को नहीं गिराए[3]। क्योंकि[4] आत्मा ही आत्मा का भाई[5] है, आत्मा ही आत्मा का शत्रु[6] है।

अपनी उन्नति आप करनी चाहिए। अपनी गिरावट आप ही नहीं करनी चाहिए। क्योंकि अपना आप ही भाई और अपना आप ही शत्रु है।

इति

मुद्रक : शिक्षा भारती प्रेस, शाहदरा, दिल्ली